॥ श्री जिनायनमः ॥

अथ

श्री श्रावकव्यवहारालंकार

बीकानेर वास्तव्य वृहत्खरतर

भट्टारकगच्छी–

पंडित प्रवर श्री धर्मशील गणिःके प्रशिष्य

उपाध्याय युक्ति वारिधिः

श्री रामलालजी गणिः संकलित

यह ग्रंथ

मुंबईमें

प्रसिद्धकर्ता

पं० खेमचंद पेमचंद.

बीकानेर बड़ा उपासरा

"जगदीश्वर" छाप० छपवाया.

विज्ञापन.

श्रीमंतो धर्माचार्य धर्मशील सद्गुरुन्योनमः अहो भव्यलोको नमस्कार करो उस आदि पुरषोत्तम ऋषभ सर्वज्ञकूं की जिसने धर्म अर्थ कांम ओर मोक्षका रस्ता बतलाया ओर प्रजा सुखसें निर्वाह करसके इसवास्ते अनेक कलाकौशल पैदा करके प्रजाकूं सिखलाइ जगतमें कुंभार सुथार लुहारादिकोकी कारीगरी देखके निश्चे अनुमांन होताहे के यह विद्यासरूमें उसीने सिखलाईहे वह देहधारी ओर स्वयंबुद्ध ज्ञानीथा निराकार ईश्वर विद्या उपदेशक नही होसकता इय बात तो न्यायसे ओर प्रतक्ष प्रमांणसेंही सिद्धहे हां अलबत्तें बुद्धि तो मनुष्योकी उसमे सहाय देणेवाली जरूरहे जेसें विद्यामान अंग्रेजोने एक २ वस्तूका होता हुवा कार्य देखके रेल तार बिजली छापखाणे आदि अनेक कल पेदा करली खिचडी पकती हुइ हंडीकी बाफसे ढकणी उछलतीकूं देख अग्नि ओर पाणी ओर वायूके योगसे एसी कुदरत होतीहे इतनी बातकूं विचारते बाफकू रोकणेका ज्यादा प्रयत्न बढाया तो अनेक किस्मके कार्य इन्यानु योगसें करते चले जातेहे अगर इस बातकूं

रिश्रमहे जैनधर्ममें सर्व तरेके ग्रंथ मोजूद ज्योतिषवैद्यकादिक परंतु जैनलोक उसकी खोज नही करतेहे उर जो कोइ खोज करे तो उसकूं मदत नही मिलतीहे मेने यह ग्रंथ मंवईमें उ-पाणे गया तब श्रीमान् सावणसुखा वीकानेर वास्तव्य सेठ जुहारमलजी समेर मलजीके मु-नीम पारख माणकचंदजीने मुझे कुछ एक आश्रय दियाहे जिसके सहायसें यह मेरा परिश्रम सफल नयाहे इस ग्रंथकी किमत व-होत खरचा लगणेपरजी वहोत थोमी रख्कीहें १॥ रुपा देढ जिल्द बंधी समेत ॥ मिलणेका ठिकाणा वीकानेर राजपूताणा बमा उपासरा उ-पाध्याय युक्तिवारिधिः श्रीरामलालजी गणिः के शिष्य पं। क्षेमचंद पेमचंद अमरचंद प्रकाशक विद्याशाला ॥

अथ

॥ श्री श्रावक व्यवहारालंकारः ॥



॥ श्रीऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योनमः ॥ श्रीवाण्यायैनमः ॥ अथश्रावकव्यवहारालंकार ग्रंथोयंलोकभाषयालिख्यते ॥ सर्वसंपत्करीयासा वाणीकलुषनाशिनी ऋद्धिसिद्धिप्रदानित्यं वंदेजि नमुखोद्भव ॥ १ ॥ धर्मशीलात्मयालब्धा भवाब्ध्यो च्छेदकारणी लोकलोकोत्तरोशुद्धि नौमिनित्यं स- सद्गुरुं ॥२॥ व्यवहारअलंकारं श्रावकस्यसुखायवै क्रीयते ऋद्धिसारेण श्राद्धग्रंथानुसारत. ॥ ३ ॥

अब—पहले गृहस्थ श्रावक च्यार घडी पि- छली रात रहनेसें उठके मनमें नवकार मंत्रका जाप करता हुवा जिधरका स्वर नाकका चलता होय वोही पांव अपणे बिछोनेसें नीचे जमीनपर रखके फेर जतनके साथ निर्जीव शुद्ध जमीनपर काय चिंतासे निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर सारे वदनपर हाथ फेरकर आठ पांखडीका कमल अपने नाभिचक्रमे मनसे विचारकर एक- सो आठ वेर अथवा ज्यादा मनमेही नवकार मंत्रका जाप करे जिसमें संसार संबंधी कार्य-

सिद्धिके वास्ते ॐ ह्रीँ एसा वीज लगाकर पांचोही परमेष्टीका जाप जपे मुक्तिके वास्ते एसाही जापजपे फेर सामायकादिक ६ आवस्यक करे जिन मंदिरमें जाके विधीके साथ चैत्यवंदनादि करे इसका विस्तार चैत्यवंदनभाष्य श्राद्धदिनकरादिक ग्रंथसें जाणना फेर जतनके साथ जिनमूर्त्तिकी पूजा स्नान तिलकादिक करके द्रव्यभाव संयुक्त करे पूजाका विस्तार श्राद्धविधी पूजापंचाशकादि ग्रंथोसें जाणना फेर उपाश्रय जाके गुरुवंदन करके व्याख्यान सुणे पच्चस्काण करे गुरुवंदनकीविधि गुरुवंदनभाष्यसें जाणना पच्चस्काणका निर्णय आगारोका अर्थ पच्चखाण भाष्यसे जाणना गृहस्थकूं चाहीये पंन्डित जतीसें हमेसां धर्म सुणे उंरसीखे क्यूं के विद्या एसी अमोलख कामधेनुहे सो सबतरेके मनवंछित पूरणे समर्थ हे ऊपर कहे मुजब धर्मक्रिया किया पीछे राजा अपणे राज्यसभामें जावे मंत्री अपणे सुप्रत न्यायसभाका काम देखे व्यापारीवणिक अपणे २ उद्यमका प्रयास करे धर्मकूं विरोध नहीं आवे इस मुजब धन पैदा करे जेसे राजा धनवानका उंर गरीबका अपने खातरीवाले मान्य पुरुषका उंर सामान्य प्रजा-

का उत्तमका उर नीचका पूर्वापर जुवानकूं विचारकर कसूरदारका कसूर जाणकर मध्यस्थ भावसें इनसाफ करें ज्यादे खातरी न्यायपक्षमें नही करे इसपर एसा दृष्टांतहे कल्याण कटकपुर नगरमें बमा न्यायवान एसा यशोवर्मानामे राजा राज्य करताथा उस राजानें राज मेहेलके नीचे गरीव लोकोंकी फरियाद सुननेको न्याय घंटा बंधवाई एक समय राजाकी कुलदेवी राजाके न्यायकी परिक्षा करणेकूं तुरत जणी हुई गायका रूप धारण कर वच्चे समेत राज रास्तेमें बेठ गई इतनेमें राजाका लमका पूरे जोरसें घोमा दोमाता हुवा आतेके फेटमें आणेसें वछमा मारा गया तव वो गाय बमे शब्दसें पुकार करती हुई रोती २ आंसू वरसाणे लगी तव किसी आदमीने गायसें कहा इहांतो जो होणहारथा सो होगया अगर इनसाफ कराये चाहतीहे तो राजाकी न्यायघंटा वजाकर फरीयाद कर तव वह गाय उसी मुजव जायकर सीगोंसें घंटा वजाणे लगी राजा उस वखत भोजन करताथा घंटाकी अवाज सुणकर पूछा ये फरीयादी कोण हे नोकरोंने देखकर कहा एक गइया वजातीहे राजा भोजन छो

बाहिर आया तब गइयासे पूछणे लगा तुझें किसीने सतायाहे क्या वो सताणेवाला कहांहे मुझे बतला तब गऊ आगे चली राजा उनके पिछामी चला गऊनें मराहुवा बछमा दिखलाया राजा तब लोकोंसें पूछणे लगा ये बछमेकूं जिसनें माराहे वो हमारे सामने आवे जब कोइनी आदमी हाजर नहीं भया तब राजाने नियम कीया जब कसूरवार जाहिर होगा तभी अन्न जल लूंगा राजाकूं लंघन भया तब राजाका लमका हाथ जोम हाजर हुवा कहणे लगा हे स्वामी गुनहगार में हुं इसवास्तेही चाणक्य नीतिमें लिखाहे यत: विनयं राजपुत्रेन्य: पंमितेन्य: सुन्नाषितं ॥ अनृतं द्यूतकारेन्य: स्त्रीन्य:शिक्षेतकैतवं ॥ १ ॥ अर्थ–विनय याने अदबका कुरब कायदा सीखणा होय तो राजोंके कुमरोंसें सीखणा वो लक्ष्मीपूत्र छोटे उर बमे सबोके संग बरतावेकी नीतीसें चलतेहे कुलहीन आदमी हुकमत उर पेसेके नसेमें किसीकूं कुछ नही नमजतेहे काग जो सिंहासणपरन्नी बैठ जाय तो क्या हंसके गुण जो क्षीरनीर जुदे करणेके हे वो कब आसकताहे उर सन्नामें बोलणेके सुन्नाषित सीखणा होय तो

पंमितोंसे सीखणा अनृत याने झूठ चोरी हरी-
फाड सीखणा होय तो जुवारीसें सीखणा उस-
में ये सब अपलक्षण होते हे उर कैतव याने
कपटाइ सीखणा होय तो उरतोसें सीखणा
स्त्रीका जन्महीं मायावऊहे उस कुमरने राजासें
सव हकीगत कह सुणाई हे पिताजी जेसा
मेरा कसूरहे वेसीही मुझे सजा होणी चाहिये
तव राजा कानूनके जांणकार स्मृतियोंके पढे
ब्राह्मणोसें राजाने पूछा तव उन ब्राह्मणोंनें कहा
हे राजन् राजके योग्य तेरे ये एकही लमकाहे
इसके वास्ते क्या सजा वतलावें तव राजा
बोला हे ब्राह्मणो किसका राज किसका लमका
मेंतो सबसें ज्यादा न्यायनीतिकूं समझताहुं
उर राजाउंका यही श्रेष्ठधर्महे सोही लिखाहे
डुर्जन जो वद आदमी प्रजाकूं कष्ट देणेवाला
उसकूं दंम करणा १ सत्‌जन याने गुणवत उर
अछी चालचलणेवाले पुरपोंकी पूजा सत्कार
करणा २ न्यायसें खजानेका धन जमाकरणा ३
पक्षपात याने तरफदारी न करणा ४ शत्रु जो
राज्यके डुस्मन हे उनकूं जीतके प्रजाकी
हमेसां रक्षा करणी ५ ये राजा लोकोंकूं नित्य
करणे योग्य पंचमहायज्ञ जांणना स मर्न

कहाहे राजाउंको चाहिये अपणे लम्केने कोइ कसूर कीया होय तो अपराध माफक दंम करणा इसवास्ते राजपुत्रकी कोइ खातरी नही राखकर शास्त्रोक्त दंम होय सो कहो तबजी पंमतोनें कुछजी नही बतलाया तब राजा विचारणे लगा जो जीव डुसरे जीवकूं हकनाहक डुख देवे तो जिस मुजब उस जीवने डुसरे जीवकूं कष्ट पोहचाया होवे वेसाही कष्ट उस गरीब फरीयादीके बदलेमें कसूरदारकूं देणा यही राजाउंका न्यायहे उर किसीनें उपगार कीया होय तो उसका गुण नही नूलकर उसका बदला उतारणा ये सब सत्पुरषोंका धर्म हे उर राजाउंकों चाहीये अनाथ दीन डुखी अबोलकी ज्यादा रक्षा करे क्षत्रीलोकोकी एसी नीतिहे की जो डुस्मन शस्त्र नाखके नग्न होजावे उसकूं मारे नही जो शत्रु संग्राममें नाग जावे उस नागतेकूं मारे नही जो शत्रु मूंमे घास तिणखा माल लेवे एसे पशुसंज्ञक शत्रुकूं मारे नही जिसने किसीकाजी बिगाम नहि कियाहे एसे निरपराधीकूंजी मारे नही जेसें राजाकी प्रजा मनुष्यहे उससें अधिक राजाकी प्रजा डुपग्गे उर चोपग्गे वगेरह जिनावरहे इस

जांणवरोंसें प्रजाकूं अनेक तरेके फायदे उस जांनवरोंके जीवणेसे हे अपणी मोतसें मरे बादभी उनके चमडा वगेरह अनेक तरेका काम आताहे मनुष्य तो मरे बाद कुछभी काम नही आसकताहे एसें जानवर निरपराधीयोको जो राजपुत्र अपणे स्वारथकेवास्ते मांस खानेका लालची होकर मारे वो राजपुत्र न्याउ नही महा अन्याईहे क्योंके आदमी तो आपणा अहवाल कहकर सुणाताहे ये जांनवरोंका दुख जब राजाही नही सुणेगे उर दया न लावेंगे तो फेर इन गरीबोकों तो सब अनार्य म्लेच्छ मारतेही हे फेर इनकूं तो सरणागत जो राजा सबका रक्षक वोही मारताहे तब तो न्याय पातालमें गया पहले लिखाहे नम्र शस्त्ररहित शत्रूकूं राजा मारे नही तो सब पशु नम्र उर शस्त्ररहितहे श्वापद सिंहादि वलीहे लेकिन शस्त्रधारी तो नहीहे लेकिन् उर पशुउंकों मनुष्योंको मारताहे इसवास्ते उसका यत्न करे लेकीन अन्यपशु निरपराधी शस्त्ररहित हे घास मूंमे भाल लेवे एसें शत्रूकूंभी राजपूत पशुजांण मारे नही तो प्रत्यक्ष घास करके पेट भरणेवाले एसे निरापराधी पशुकूं केसें मारे भागते पशुभी

मारणे योग्य नही कारण भागते शत्रूकूं राजपूत मारे नही तो भागते हुये जांनवरकूं केसें मारे केइ एक मांसाहारी अपणे स्वारथके वास्ते एसा कहतेहे पशुवेंमें अविनासी आत्मा नही एसें कहणेवाले महामुर्ख निर्दइ उर मांसके लालचीहे ज्यांनवरका मायना सोचेतो एसा अर्थ जाहिरा मालम देताहे ज्यांन कहते जीव वर मायने प्रधान याने अच्छा जीव तो फेर अविनासी आत्मा पशुवेंकी नही इसबातमें क्या प्रमाणहे खून मनुष्योकेभी शस्त्र लगणेसें निकलताहे उर खून पशुवेंकेभी निकलताहे शस्त्रकी चोट लगणेसे आदमी पुकार करताहे वेसा ही जांनवर करताहे मारके डरसें मनुष्य भागताहे वेसेंही मारके डरसें पशूभी भागताहे अपणे शंतानकी रक्षा मनुष्यभी करताहे वेसेही पशुभी करतेहे मरणेपर मनुष्यभी पुत्रादिकके वियोगसें रोतेहे एसेंही पशुभी रोतेहें इत्यादिक अनेक प्रत्यक्ष प्रमाणसें मनुष्य जेसीही आत्मा पशुवेंमेंहे अपणे २ कर्मोंके वश चोराशी लक्षयोनीमें जीव भटकताहे मरणा कोइभी नही चाहता सर्व मतोंमे वही धर्म श्रेष्ठहे की जिसमें सब जीवोंकी दयाहे देखो गीता अहिंसा

परमोधर्मः फेर कृष्ण द्वैपायन व्यासने अठारोंही पुराणोका एसा सार निकालकर कहाहे यत अष्टादशपुराणेषु व्यासस्यवचनद्वयं परोपकाराय पुण्याय पापायपरपीडनं ॥ १ ॥ अर्थ—तो प्रगटहीहे तुलसीदास भक्तिमार्गवालेने कहाहे ॥

दुहा—दयाधर्मकोमूलहे नरकमूलअभिमांन॥
तुलसीदयानछोडिये जवलगघटमेंप्राण ॥१॥
तुलसीहायगरीबकी कभीननिरफलजाय ॥
मरे ढागकेचामसे लोहभस्महोजाय ॥ २ ॥

मनुस्मृतिमेंभी आठ कसाइ लिखेहे जीवोंकों मारणेवाला बताणेवाला मास लाणेवाला मांस वेचणेवाला मास खरीदणेवाला रांधणेवाला पुरसणेवाला ओर खाणेवाला मांसका अर्थभी मनुने एसाही कीयाहे मास अर्थात् जिसको में खाताहुं सो कहता वो जीव मुजे खायगा मांस खाणेवाला कठोर ओर क्रूर मिजाजवाला होजाताहे प्रतक्ष्य प्रमांणसें सावितहे मांस खाणेवाले जितने जांनवरहे सो सबोको देखा जावे तो सबके सब वडे निर्घृण ओर कठोरहें वेसे घास ओर नाज फल फूल खानेवाले जानवर दुष्टस्वभाववाले नही ओर वडे सीधे भोले है

रोसें कुछवण, नही आता एकसमे कायरभी राजा वनवैठतेहे जेसें अकबरके बालपणेमे हेमचंद अग्रवाला वणिया बादस्याह दिल्लीका वनगयाथा ओर एकसमेका वो हालथा अर्जुनने महाभारत कीया एकसमे वोही अर्जुनसें कुछ नही बणपड्या ॥

दुहा—समेंबडीबलवानहे पुरषनहीबलवान ॥
कावांलूंटीगोपिका वहअर्जुनवहवाण ॥ १ ॥

हमारी समजसें तो राज्य जाणेका एसा वरतावा मालम देताहे राजा प्रमादी विषयलंपट होकर अन्यायसें धन जमा करे भिक्षा मांगणेवालोंसें कर लेवे दुष्ट ओर विद्यारहित मूर्खोंको राजकाजका अधिकार सोंपें विद्यावान अकलवंत बुजरक पुरषोकी सल्लाह लेकर कांम नही करणेसें हर किसीका विश्वास करणेसें साम दाम दंड भेदसें च्यार प्रकारकी राजनीति नही जांणनेसें खजानेमें धन नही रहणेसें अपणे नोकरोकी कदरदानी नहि करणेसें देव गुरु धर्मकी अपमांनता करणेसें गरीबोकों सताणेसें वहोत मदिरा आदि नसेके पीणेसें इत्यादि कारण राज्य जाणेकेहें इत्यादि कारणोकों विचारकर राजानें अपने अपराधी लड्केकूं

एसा हुकम दीया तूं इस राजरस्तेमें सोजा आप वो घोमा मंगाकर अपणे चाकरोंकों हुकम दीया तुम इस घोमेपर सवार होकर दोमाता हुवा इस लम्केके ऊपरसें लेजाउ रा जाका लम्का विनयवानथा रस्तेमें सोगया लेकिन् नोकरोंने एसा करणा मंजूर नही करा तब राजा घोमेपर आप असवार हुवा सर्व लोकोंने वहोत मना कीया तोभी राजा उस गायका इनसाफ करणे घोमेकी वाग उठाइ घोमा उठा इतनेमें राज्यकी अधिष्टाइका देवी लगामपकम फूलोंकी बरसात राजापर करी उर कहा हे राजन् में तुह्मारी न्यायबुद्धिकी परीक्षा करी प्राणसेंभी प्यारा एसे लम्केकी खातरी नही करते हुये तेंनें गरीबकी फरीयादी सुणके सच्चा न्याय कीया तूं धर्मराजा हे तूं वहोत कालतक निर्विघ्नपणे राज्यकर एसें न्यायकी युक्तिपर दृष्टांत कह्या अब जो राज्यके अधिकारी कामदार वो केसा होणा चाहिये जेसें अभयकुमार चाणाक्य प्रधानकी तरे महाबुद्धिशाली राजाका उर प्रजाका दोनोका हित चाहणेवाला एसा राज काज करे रुसपतखाके सचेकूं जूठा न करे जिस कांममें धर्मकूं विरोध नही

आवे कहाहे के फकत राजाके घरमें फायदा करणेवाला कामदार प्रजाका दुस्मन होताहे ओर फकत प्रजाके घरमें फायदा करणेवाले मुत्सद्दीकूं राजा निकाल देताहे इसवास्ते दोनोकों फायदे-वंद प्रधान मिलणा मुसकिलहे वणिकप्रधान अ-थवा अश्वपतिकूं मंत्री पदमें स्थापन करणा कारण अश्वपति जातीवालोकूं राजन्यवंशता होणेसें सूरवीरता प्रमुख राज्यधर्म अभ्याससें तुरत आताहे कारण बीजकी तासीर ओर सोबतका असर प्रायें रहताही हे दुसरे असपति लोकोमें वर्त्तमान समयमें प्रायें व्यापारी होणेसें व्यापा-रमें नफे नुकसानकूं पहलेहीसें विशेषकरके देश क्षेत्र काल भावका पूर्वापर विचारके कारण बडे विचक्षण होतेहे व्यवहारमें कोमीकाची मुला-यजा नही करतेहे किसी कविने कहाहे वाण्यो विणजन ओम्सी जो स्वर्गापुर जाय लेखा करता रांमसें टक्का पेसा खाय १ इसवास्ते जिसकूं नफे नुकसानका ख्-याल हो मृदुभाषी शत्रुओसें सूरवीर संग्राम-सें नहिं हटनेवाला सर्वकला कुशल अभिमान-रहित राजाका भक्त प्रजारक्षक दया धर्म सर्वज्ञ वचनकी आस्तावाला राजाके अश्वपत्ती जाती

वालाही मंत्री करणा ये सूरता तथा व्यवहारी शंक्षाशास्त्रकी निपुणता ओर अन्य लोकोमे प्रायें थोमे मिलेगें वणिक जातिकी इतनी चपलता हम मरुधर गुर्जर कच्छ पंजाबादि देशवालोकी देखीहे एक हिसाव अंग्रेजी पढे पुरुषकों करणा वतलावे वोही हिसाव एक पारसी पढेकूं करणा वतलावे ओर वोही हिसाब माहाराष्ट्र बगालादि देशवालोंकों करणा वतलावे वही उक्त वणिक तथा अश्वपतिसें करणा एक वख-तही वतलावे तो सबसें पहिले अश्वपतादिक महेश्वरी अग्रवाल कहेगा कुछ देरसें अंग्रेजी-वाला कहेगा वाद महाराष्ट्र बंगाल कहेगा सबके पीछेनी केवल फारसी पढा कहेगा शंका होय तो पातवाण देखे वणिक तथा अश्वपतादिकके साथही असि १ मसी २ कृषी ३ कर्म संसारमे चलताहे व्यापारी वगेर अन्य वर्णका निर्वाह ओर संसारधर्म चलणा दुसवारहे व्यापारीतो ओर वर्णके सारे प्रायें नही रह सकतेहे वाकी तो अपणे २ कर्मकर्त्ता नही होवे तो प्रलयका-लकी मर्यादा हो जातीहे जैनशास्त्रमे मुख्यप-णेकर च्यार सज्ञा करके प्रजाकी स्थिती वांधी हे राज्यकाजके दंमपासकोका उग्रकुल संज्ञाहे १

संसारी गृहस्थियोंके षोडस संस्कार करी गृहस्थी गुरूकी जोग कुलसंज्ञाहे २ राज्यकर्त्ता-के परवारवालोंकों राजन्य कुल संज्ञाहे ३ शेष सर्व प्रजा व्यवहार शिल्प कर्मादिकर्त्ताओंकों क्षत्रिय संज्ञाहे ४ इन च्यारोंही वर्ण व्यवस्थासें वर्जित सर्व मोह कंचनकामनीके त्यागी भिक्षा भोजी वो जती साधू इन च्यारोंही वर्णवालों-का संसारसे उद्धार करणेवाला गुरूहे वणिक व्यापारी लोकोंकों चाहीये अच्छा शुद्ध व्यापार करणा जिससें धर्मकूं विरोध नही आसके इस बातपर श्राद्धविधीमे एसी गाथा लिखीहे ॥ गाथा ॥ ववहारसुद्धिदेसाइ विरूद्धचाय उ-चियचरणेंहिं तोकुणइ अत्थचिंतं निबाहितो निअं धम्मं ॥ अर्थ—याने गृहस्थ श्रावक धन पैदा करणेसंबंधी विचार करे उसमें तीन बात-पर जरूर ध्यान रखना चाहीये एक तो धन वगेरह जमा करणेका साधन जो व्यवहार उसकी निर्दोषता रखणी रूजगार करते वखत मन वचन काया सीधा रखणा कपट नही क-रणा जिस देसमे रहता होय उस देसमे मांने हुये लोकविरूद्ध कृत्य नही करणा तीसरे उचित कृत्य जरूर करणा इन तीन बातोंका विस्तार

हम आगे करेंगें इन तीन वातोंको दिलमें रखता हुवा धनकी चिंता करणी चोथी ये वात हे अपने जो पहले अंगीकार कीयाहे व्रत नियम सो लोभके वस उनकी खंम्ना न करणी भूलकेभी हरकत नही लगणे देणा संसारमें एसी चीज थोमी होगी सो धनसें न मिल सकती होय इसवास्ते बुद्धिवान पुरुषोने सब तरेके यतनके साथ धन जमा करणा धन चिंता करणेका हुकम आगम देता नही कारण मनुष्य-मात्रोंके अनादि कालकी परिग्रह संज्ञासें अपने कर्मोके प्रेरणासें जीव करताहे केवली कथित आगम एसे सावद्य व्यापारमें जीवोंकी प्रवृत्ति किसवास्ते करवावे पूर्वपरचित अनादि संज्ञासें करते हुयेकूं धर्ममें वाधा नही आवे एसी आज्ञा जिनागम देताहे लोक जितना लाखों उद्यमों सें रातदिन संसारी काम साधताहे उसके लाखमे हिस्से जो उद्यम धर्ममें करे तो तोक्या मिलणा बाकी रहे मनुष्यकी आजीविका १ व्यापार २ विद्या ३ खेती ४ गाय बकरा वगेरे पशुउंका पालणा ५ कलाकोशल ६ सेवा ७ उर भिक्षा ये सात उपायसें होतीहे उसमें वणिक लोक व्यापारसें वैद्य ज्योतषी व्याक-

रणी वेदपाठी प्रमुख अपणी विद्यासें आजी-
विका करतेहे जाट कुणबी प्रमुख खेतीसें गो-
वाल धनगर राईके राठलोक गाय वगेरेके रक्ष-
णसें चितारे सुनार सुथारकूं आदि लेकर ८-
होत लोक अपनी कारीगरीसें नोकर चाकर
वगेरह सेवासें ओर भिक्षारी लोक भिक्षासें
अपणी २ आजीविका करतेहें उसमें घी तेल
धांन कपास सूत कपडा तांबा पीतल वगेरह
धातू मोती जवाराहित रुपीया पेसा मोहर
वगेरह किरियाणेके भेदसें अनेक तरेके व्या-
पारहे तीनसे साठ भेद किरियाणेकेहे ओर
अंग्रेजी राज्यकी चीजोंभी व्यापारमें अनेक
किस्महे इसीवास्ते श्राद्धविधीकी टीकामें लिखा
हे पेटेके भेद गिणना चाहे तब तो व्यापारकी
संख्याका पार नही आताहे व्याजवट्टाभी व्या-
पारमेंही गिणा जाताहे ओषध रस रसायण
चूर्ण अंजन वास्तु शकुन निमित्त सामुद्रिक
धर्म अर्थ काम ज्योतिष तर्क प्रमुख भेदसें ना-
नाप्रकारकी विद्याउंहे इनोंमे एक तो वैद्यक
विद्या ओर अतार पसारीपणा ये दोय रुजगार
बुरा ध्यांन होणेके कारण विशेष गुणकारी पणेके
नही कोइ धनवान बेमार पडे अथवा एसाभी

दुसरे प्रसंगमें पसारीकूं वैद्यकूं वहोत लाभ ओर मान मिलताहे सोही वात वैद्यकमेंभी लिखताहे—रोगकाले पिता वैद्य—अर्थात् वेमारी होणेपर वैद्यवापसेंभी ज्यादा भाजम देताहे रोगीका मित्र कोण वैद्य राजाका मित्र कोण हांजीहां हजूर सच्च फरमातेहे एसा कहणेवाले संसारके दुखसें भरे हुयेका मित्र कोण मुनिराज ओर धन खोवेठे हुये आदमीका मित्र कोण ज्योतषी व्यापारमे व्यापार गांधी याने पसारीकाही सरसहे कारण टकेमे खरीदी हुई चीज वखत पडनेपर सोटकेमे वेचताहे वैद्यकूं पसारीकूं लाभ ओर मांन वहोत मिलताहे इसवास्ते एसा कारण पाया जाताहे जिसकूं जिस रुजगारमें ज्यादे लाभ मिलताहे तो वो जीव वेसा कारण हमेसां चाहताहे सोही वात नीतीमे लिखीहे योद्धार सिपाही रणसंग्रामकी चाह रखताहे वैद्य धनवानके विमारीके आरामीकी चाह रखताहे व्राह्मणलोक अपणे जजमानकी मरणेकी चाह रखताहे ॥

दुहा—भोजगपूछेव्याहविरतकूं नाइपुछेसूत ॥
जैनमुनिसुखशांतापूछे व्राह्मणपूछेमुंड ॥ १ ॥
सनमे धन जमाका जोनि केवल इच्छाव—

वैद्य धनवानकी मांदगी चाहतेहे जिनोंके पास
उर कोइन्नी इल्म कला धन पेदा करणेकें नही
हे निकेवल वैद्यपणेकीही आजिविका जाणतेहें
उन वैद्योकी एसी बुद्धि प्रायें रहतीहे केइएक
जरे हकीम रोगोकी वृद्धि धन लेणेकेवास्ते कर
देतेहें एसे कुकर्मकर्त्ता वैद्योकें दया दिलमें कव
होसकतीहे केइयक वैद्य निकेवल स्वार्थीयेही
होतेहे सो खाणेकोन्नी मोहताज साधर्मी अ-
नाथ मरणेवाला एसोंकान्नी धन लेलेतेहें जो
वैद्य मदिरा प्रमुख अनक्ष चीज मिली हुई द-
वाई खिला देतेहें अनेक जीवोकों दवाइके
काममें लेणेंकों मारणेवाला द्वारिका नगरीका
प्रथम धन्वंतरकी तरे नरकका पात्र होताहे
जिसके कर्त्तव्यका वयान विपाकसूत्रमेंहें एसी
वैद्यक्रिया नही करणे योग्य हे अब अछे धर्मार्थी
वैद्यके लक्षण एसें होतेहें गुरुलक्ष आयें वैद्यक
शास्त्रका जांणकार उचित लोन्न करणेवाला
रोगीका कष्ट देखके दिलमे दया लाणेवाला
सुपात्रोकी विशेप परिचर्या करणेवाला जेसें
ऋषन्न देवका जीव जीवानंद वैद्यके न्नवमें कोढी
साधूका कोढ मिटाया एसा तेसेही खर वैद्य
महावीर स्वामीकी कानकी शलाका निकालणे-

वाला वैद्य पुन्यक्षेत्रकी बंदगी करणेसे ब्रह्मदेव लोक गया हिंसक ठग चोर परस्त्रीवैस्यागामी लोंम्बाज दगावाज एसें अदम्योकों अच्छा कर-णेसें वो पापी जो पाप करताहे उसका हिस्सा वैद्यकूं मिलताहे पुन्यवंतका पुन्यका मिलताहे लेकिन् हमारी समजसें तो हम एसा जांणतेहे इस वैद्यकी आजीविकाकूं धिग् रहे कारण– धिगवैद्यस्यवैद्यत्व परदुःखेनदुःखितः ॥ जीवितो भाग्य योगेने मृतोवैद्येनमारितः ॥१॥ धिक्कार हो वैद्यकी आजीविकाकूं सो पराये दुखसें दुखीहे जीवे तब तो कहतेहे हमारी ऊमर लंबीथी मरणेसें लोक कहतेहें इय वैद्य दवा देताथा सो मार दीया १ ओर फेर एसाभीहे ॥ रोगका-लेपितावैद्य मध्यकालेचमित्रवत् ॥ स्नानकालेभवेत् शत्रु वैद्यस्यत्रिविधागतिः ॥ १ ॥ रोग जिस वखत रोगीकूं शताताहे उसवखत वैद्य बापसें-भी ज्यादे मालम देताहे ओर फायदा होणेके बीचमें मित्रकी तरे स्नान रोगके अंतमे करणेके वखत वैद्य दुस्मन मालम देताहे वैद्यका तीन हालहे लेकिन् धन्वंतरि जेसे अंग्रेजी डाकट-रोका यह हाल नही प्रथमतो इनोका राज्या-धिकार होणेसें सबसें ज्यादे खातरी हु—

करतेहे उसरे मासिक पगार राज्यसें मिलताहे उंषधी वणाणी नही पमती पैसाभी रईसका लगताहे जो बुलावे फी देवे देसी वैद्योंको तो मूर्ख लोग बदनामीभी देदेतेहे डाकतरोके सांमने चूं नही करते वैद्यक क्रियाके संपूर्ण शास्त्रका जांणकार होय सो वैद्य संसारमें उत्तम गिणा जाताहे सोही लिखाहे ॥ व्याधेः तत्व परिज्ञानं वेदनायाश्चनिग्रह ॥ एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वं नवैद्यप्रभुरायुप: ॥ १ ॥ रोगकूं जाणणा उस रोगकूं मिटाणेवाली उंषधीका देणा वैद्यपणेकी इतनीही खूबीहे लेकिन् वैद्य आयु देणे समर्थ नही रोगी जबही आराम होताहे जब च्यारोंही पायें पूरेही मिलतेहे जेसें रोगकी परिक्षाकारक वैद्य वेसीही दवाई जो कभी पूराणी दवा चाहीये उंर नई मिले नई चाहीये उंर पुराणी मिले अथवा वणाणेमें कसर रहजावे तो दवा अमृतरूपभी जहिर होजाती हे तीसरा रोगीका परचारक निर्गेदास्तीवाला पूरा चाहिये कहे मुजब हिफाजत रखे चोथा रोगी वैद्यके कहे मुजब दवा लेवे उंर पथ्य करे तभी दुरस्त होजाताहे इन च्यारोंमेंसें एकमेंभी कसर होगी तो आरामी नही होगी असाध्य जब

जाणा जावे तो उपचार वैद्यकूं करणा अंगीकार-
ही न करणा कदास रोगीके स्वजन बहोत आ-
ग्रह करे तब असाध्य दशा कहणेवाला दवा
देवे तो वैद्यकूं दोष नही रोग तीन तरेसे हो-
ताहे पूर्वकृत पापके उदयसें वो दवाइसें मिट-
नेवाला नही उसका इलाज ध्यान जप पुन्य
सुपात्रकी भक्ति प्रमुख धर्महे १ दुसरें मावापके जो
रोग होताहे सो संतानके होताहै अथवा कुष्ट आं-
ख दुखणा खाज सीतला वोदरी सुजाक फिरं-
गादिक संसर्गी होताहे इसवास्ते नलशली संस-
र्गज कहलाताहे २ इसका इलाज संसर्गजकाहे
नलशली मिटणा मुसकिलहे ३ तीसरा कायक
तथा मानसक रोगहे मिथ्या आहार मिथ्या
विहारसे वात पित्त कफादिकसें होणेवाले तेसें
काम शोक भयसे होणेवाले जिसमें साध्यका
इलाज सहज हे कष्ट साध्यका इलाज दुखें हो-
ताहे असाध्य रोग त्याज्यहे देश क्षेत्र काल
अवस्था उंर अग्निबलकूं विचारे फेर अधर्मकूं
नही प्राप्त होणेवाला इलाज करे ज्योतष निम-
त्तादिक शास्त्रसें आजीविका करणेवाले पुरषकूं
यथार्थ फलही कहणा चाहीये जो फलित शा-
स्त्रमें लिखा होवे नास्तिकादिकोने अपणे

लिपत शास्त्रोंमें फलादेश ग्रहोका नही मानाहे अनेक कुयुक्तियां लगाकर फला देशकी नास्तिता सिद्ध करीहे हमने प्रत्यक्ष प्रमांणसें केइयक ज्योतषी देखेहे सो विगर प्रश्न कीये उन आये पुरषकी मनचिंता वात कहतेहे हेडावादमें पंच पक्षीका पढाहुवा ज्योतषी अभीविद्यमांनहे इस विद्याका पठन पाठन कम होणेसें ज्योतषीयोकी वात कममिलतीहे ये दोष शास्त्रोका नही पढा हुवा होवे तो सत्य कहणा मिलताहे सूर्यप्रज्ञप्ती चंद्रप्रज्ञप्ती ज्योतिष करंमादिक गणित शास्त्रहे भद्रबाहुसंहिता चूडामणि प्रमुख फलादेशके शास्त्रहे भगवान महावीर सर्वज्ञ कहतेहे हे गौतम ग्रहादिकोके शुभ अशुभ फल जो मैं कहताहुं वो मनुष्योके पूर्वकृत पापपुन्यके फल मनुष्योके जांणनेवास्ते इन ग्रहोके निमत्तसें प्रकास करताहुं शुभाशुभ फल ग्रहोका नही किंतु स्वकृत कर्मोकाहे निमित्तके आठ अंगहे दिव्य १ उत्पात २ अंतरिक्ष ३ स्वर ४ शकुन ५ स्वप्न ६ सामुद्रिकादिक भेद करके इन सबोके होणेमें पांच समवाय कारणहे निमित्त कहो चाहे आदिकारण कहो सोही अनेकार्थमें लिखाहे ॥ निमित्तहेत्वायतन

प्रत्ययोत्थानकारणै निदानमाहूपर्य्यायै प्राग्रूपं-येनलक्ष्यते ॥ १ ॥ निमित्त १ हेतु २ आयतन ३ प्रत्यय ४ उत्थान ५ कारण ६ निदान ७ ये सब पर्यायवाचक नामहे जिसकरके होनेवाले अहवाल पहले मालम होवे उस निमित्तके इतने नाम एकार्थका कहणेवालाहे इन ग्रहोकी क्रूर दशा जब आवे तब अशुभ कर्मका उदय आया एसा समजके अठारे दोसरहित तीर्थ-करकी भक्ति पूजा सुसाधूकी सेवा शील व्रत तप शुभभावनायुक्त जप करे जेसा भद्रबाहू स्वामीने नवग्रह शातिस्तोत्रमें लिखाहे उनके वर्ण जेसाही अनाथ दीन दुःखीयोकों दान करे ग्रहोके आम्नाये वणके जो पोरषनी भिक्षा-की उगाड़ करे उनोंसें सावचेत रहे ओरभी जो संसारी कार्य साधनके अनेक शास्त्रहे उसकूं सुणता ओर पढता हुवा हंश जेसी तत्वबुद्धि हेय ज्ञेयपणा करे उपादेयतो सर्वथा प्रकारे आप्तका वचनरूप शास्त्रहे सोही करे नंदी सू-त्रमें लिखाहे मिथ्याश्रुत सम्यक दृष्टि वांचे तो सम्यक शास्त्र होके परिणमे ओर सम्यक शास्त्र मिथ्या दृष्टी वांचे तो ॥ मिथ्यात्वमडपरणमें यदुक्तं नीतौ ॥ उपदेशोहिमूर्खाणां प्रकोपायन

शांतये ॥ पयपानभुजंगानां केवलंविषवर्द्धनं ॥१॥ मूर्खकूं उपदेशनिश्चे करके क्रोधकेवास्ते होय शांतिकेवास्ते नही जेसें अमृतरूप दूध सांपकूं पिलाणेसे निकेवल जहरकूंहीवधावे एसा जाणना जैनोक्त शास्त्र आचार्योंके रचे सब तरेके मोजुदहे वणे जहांतक उनकाही परिचय करे तो मिथ्यात्व नही वधे सब पुरषोंकी बुद्धि हंस जेसी नही जेसे कहाहे ॥ कुसंगासंगदोषेण काष्टघंटा विटंबना ॥ अगर सम्यकतत्त्व जिसकूं पहली प्राप्त होगयाहे एसोंकी बुद्धि कुसंगसें अस्तव्यस्त नही होती हे जेसे कहाहे ॥ हीयोहोवेहाथ कुसंगीकेतामिलो चंदनभुजंगासाथ कालोना होयकिसनीया ॥ १ ॥ सुसाधु पंडित चतुरों की संगतही श्रेष्ट हे ॥ कहानहोयसत्संगसे देखोतिलउंरतेल जातिवर्णमिटगयो पायो नाम फुलेल ॥ १ ॥ अब खेती तीन तरेंकी होती हे एक तो वरसाद के जलसें होणेवाली दूसरी कूवा नदी तलाव वगेरोंके जलसें तीसरी दोनोके जलसें होणेवाली गाय भेंस ऊंट घोडा वकरी वलद हाथी वगेरे जानवरोंके पालणेंसें जो आजीविकाकरणी सो पशुरक्षा वृत्ति कहलातीहे वो जानवर वहोत

तरेके होतेहे खेती उर पशुरक्षा वृत्तिसें आजी-
विका करणा विवेकी पुरुषोके लायक नही
कहाहे हाथीयोके दांतोमें घोमोके खुरोमें राज्य
लक्ष्मीहे बलदोके खंधोपर खेरूतोकी लक्ष्मीहे
तरवारकी धारपर सुभटोकी लक्ष्मीहे सजे उर
शिणगारे हुये स्तनोंपर वैश्यायोकी लक्ष्मी रहती
हे कदास कोइ दुसरी आजिविका नही होय
उर खेतीही करणी पमे तो वोणेका समय
बराबर ध्यानमे रखणा तेसेंही पशुरक्षा वृत्ति
करणी पमे तो मनमें वहोत दया रखणी कहाहे
जो करपणी वीज वोणेका समय जमीनका जाग
विचार किसमें केसा पाक आवे एसा विचार
जाणे रस्तेके ऊपर खेत होय सो ढोरू देवे
तब लाज होताहे धनके वास्तें जो पशुरक्षण
करता होय तो दयाके परिणाम ढोरूणा नही
खसी करणा नाक वीधना आप जाग्रतपणे
करके छविच्छेद वर्जना अब शिल्पकला मो
जातकीहे कुंजार सुतार लुहार चित्रकार उर
वस्त्रकार इन कारीगरोके एकेक पेटेके वीस २
जेद गिणणेसें सो होतेहे उर न्यारे २ कारी-
गरोकी गिणतीसें शिल्पके अनेक जेदहे आचा-
र्यके उपदेशसें होणेवाली शिल्प कहलातीहे

मुख्य पांच शिल्प ऋषभ देवके हुकमसें चलता आयाहे आचार्यके उपदेश विगर लोक परंपरासे चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता हे खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे गये बाकी सब कर्मादिक शिल्पमें आजातेहें पुरषोंकी स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कितनी एक शिल्पमें आजातीहे कर्मोंका सामान्यसें चार प्रकारहे बुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले अधम उर सिरसें बोजा उठाके काम करणेवाले अधमसें अधम जाणना बुद्धिसें काम करणेवाले पर दृष्टांत लिखतेहें चंपा नगरीमें मदननांमे धनसेठका लड़काथा उसने बुद्धिवान आदमीसें पांचसों रुपे देकर एक बुद्धिली दोजणे लड़ते होय वहां खड़ा रहणा नही जब मित्रोने ये बात सुणी तो मस्करी करणे लगे बापनेभी उलंभा दीया तब मदन पीछा रुपे लेणेकूं शिक्षा पीछी देणेकूं गया तब बुद्धिवानने कहा तूं जो एसा कबूल करे जहां दोजणे लड़ते होय वहां खड़ा रहूंगा तो रुपे पीछा देदेताहूं उसने कबूल करी रुपे पीछे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ आपसमे लड़तेथे मदन वहां खड़ा रहा आ-

खिर उन दोनोनें मदनकूं गवाह बनाया और कहा जो मेरी गवाइ नही भरेगा तो तेरी खबर लूंगा दोनोंनें एकांतमे धमकाया मदनने बापसें कही इतनेमें तो दोनोंने फरियादकी पोलिसके अंदर मदनकूं गवा लिखाया बापने देखा ठोकरेकूं ये दुष्ट मार नाखेंगें घबराकर उसही बुद्धिवानके पास गये उसने कहा लाख रूपे लूंगा बचादूंगा तब सचहे मरता क्या नही करता तब वेसाही दिया उस बुद्धिवानने उसकों सिखाया तूं पागलपणा पहलेहीसे करणे लगजा एसेंही कीया करणेंसें बचगया एसाही हाल इस वखतमे बडे २ अंग्रेजी पढे हुये बाल्स्टरोका देखणे और सुणणेमे आताहे इसको बुद्धिका कमाणा कहतेहे इत्यादि बुद्धिवानीके मुजे अनेक दृष्टांत यादहे लिखनेसे ग्रंथ वढजायगा ज्यादे देखणा होय तो अभयकुमार रोहिक वगेरोके चरित्रसे जाणना जिसमें मति ज्ञानसंबंधी च्यार बुद्धि होतीहे सो उत्पातकी १ वैनेयकी २ कार्म्मणकी ३ पारिणामकी ४ वो अदमी वखत पडनेपर प्रत्युत्पन्न मति होताहे आगूंके तो नालिक वचन एसें सुणनेमें आतेहे अग्रिम बुद्धिवणिकजन पिछल बुद्धिविप्र सदा

सुबुद्धिसे वमा तुरतबुद्धि तुर्क १ लेकिन कोइ अपेक्षा आछी कोइ इनोंमे किसी क्षेत्रमें होवे तो ताजबनही इस वखत तो बुद्धि उर उद्यम उर संप उर लक्ष्मी साहस उर धैर्य उर शौर्य सर्व आछी अंग्रेजोकी जितनी तारीफ करें जितनीही थोमीहे एसाहे तभी तो भारतके तीन खंमके बादस्याह वणे हुये विजय मंका वजा रहेहें अगले जमानेकें इतिहास वांचणेसें खूब निश्चय मालम देताहे इस आर्यावर्त्तवालोमे ये सब वातें पाये जातीथी अगर फेरभी विद्याका पठन पाठनकी वृद्धि होजाय तो ऊपर लिखी सब वात होणी मुसकिल नही अंगरेजोंने जोजो काम हासिल कीयाहे सो विद्याबुद्धिके उद्यमसेही पायाहे पारलामिन्ट सभा जो आज विद्यमांनमे इंगलिस देशमे लंदन राजधानीमेहे येबात नइ नहीहे राजा श्रेणकके राजगृही नगरीमेंभी पांचसे प्रधानोकी कौशलसभा जिसमें मुख्य मंत्री राजाका पुत्र नंदानामकी वैस्य जातकी राणीका अंगजात च्यारोंही बुद्धिका धरणेवाला अभय कुमारथा व्यापार तेसें शिल्पवाले लोक हाथसें कमाणेवाले जांणना हलकारे चपरासी कासीद वगेरह पगोंसे कमा-

णेवाले जांणना वोझ उठानेवाले वगेरे लोक सिरसे कमाके खातेहे अब नोकरीजी च्यार तरेकी होतीहे १ राजाकी २ राजोंके अमलदार लोकोंकी ३ श्रेष्ठ साहुकारोंकी ४ चोथे सब जातिवालोकी राजाकी नोकरी रातदिनपर वसता जोगणी पमणेके कारण हरकिसीसे वण आणी मुसकिलहे सोही वतलातेहे अगर नोकर वोले नही तब तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्ला जबाब देता हुवा वोलेतो वकवादी कहलावे जो नजीक वेठा रहे तो धीठा कहलाताहे जो दूर वेठा रहे तो बुद्धिहीन कहलाताहे मालक कहे सो सव सहन करे तो कायर कहलाताहे जो नही सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते योगी लोकजी जिसकूं नहीं जाणसके एसा सेवाधर्म परम गहनहे जो अपनी वढोवरीके वास्ते सिर नीचे झुकावे अपणी आजीविका-वास्ते प्राणजी देणे तइयार होय सुखकेवास्ते दुखी होय एसे नोकरी करणेवाले आदमी जेसा कोण मूर्ख होगा पराइ नोकरी करणी सो श्वानवृत्ति जेसीहे एसा केइयक लोक कहतेहे लेकिन हम तो जाणतेहे कुत्तेकी वृत्तिसेंजी नोकरी बुरी कुत्ता तो पूंछसें खुसामंद करताहे

गुण विगर नोकर नपूंसक जांणना राजाप्रसन्न होय तो चाकरकूं मांन ओर बमाइ देताहे लेकिन चाकर तो राजाकेवास्ते अपणा प्राणभी देदेतेहे नोकरोकूं एसा विचार करणा चाहीये मनुष्य एसा चतुर ओर साहसीक होताहे सो सांप सिंघ हाथी एसे २ जांनवरोंकूं वसकर लेताहे तो राजाकूं वस करणा क्या बमी बातहे अक्कलवंतोकों मालक केवांये तरफ वेठणा मालकके मूंके तरफ देखणा हाथ जोमणा मालककी तासीरकों पहचानकर काम करणा नोकरोंकों याद रखणा चाहीयेकी दरवारकी सभामें वहोत नजीक नही बेठे बहोत दूरभी न वेठे मालकके बरावर आसन नही वेठे ज्यों उंचाभी नही बेठे तेसे आगे वहोत नजीक तेसेंही पिछामीभी नही बेठे नजीक बहोत वेठे तो मालककूं बुरा लगे दूर वहोत बेठे तो बुद्धिहीन बजे अगामी नजीक बहोत बेठे तो दुसरेकूं बुरा लगे ओर पिछामी बेठे तो मालककी नजर नही पमे इसवास्ते हमने लिखा उस वजे वेठणा मालक अपना थका होय भूख प्याससें पीमित होय क्रोधमें होय कोइ कांममे रुका हुवा होय उस वखत कोइ अरज दुसरी करणी होय तो

नहि करे उसीमोकेकी बात होय उर नही अरज करणेसें आगे विगाड़ होणेका कांम होय तब बहोत आजीजीसाथ बात वाकव कर देवे जेसें गुमानसिंहवेद प्रधान सुगनकुवर पारवतीजी पड़दायतकी लड़कीका देहांत होणेसें बीकानेरके नृपति राठोड़ सिरदारसिंहजी जब दसराहेकी सवारी तथा भोजन कीया नही तब बड़े शोकातुरोकों हेतुयुक्तियोसें समझाकर राज्यकार्य करवाया पीछे राजा साहिबनें उस प्रधानकी बहोत तारीफ करी अगर मुजें नही समझाता तो उर राजपूतोमें मेरी लघुताइ मालम पड़ती के बीकानेर महाराज पड़दायतकी सतानवास्ते दसराहा नही कीया कारण रामचंद्रकी दिग्विजय लोकीकमें दसराहेकी मांनतेहे तबहीसे राजालोक दसराहा करणा सरू कराहे राजालोक इस दिनकूं बड़ा मंगलीक गिणतेहे इसीतरे अपणे मालककूं समझणा चाहीये इसीतरे राजाकी माता पाटराणी कुमर मुख्य मंत्री राजाका गुरु उर द्वारपाल इनोके संगभी राजाकी तरेही वर्त्तावा रखणा जेसे कोइ अक्कलहीण एसा विचारे इस अंगारकूं मेंने सिलगाड़हे अथवा मेंही लायाहुं

मुझे ये वालेगी नही एसा समझके अग्निसे आ संगतपणा करे तो क्या अग्नि वालेविना छोडे तेसेंही विचारे मेनें इनको हिकमतसें राजदिलायाहे एसा समझके जो राजाकी अवज्ञा हुकम अदूली करेगा अंगली राजाके लगावेगा तो राजा विगर सजा दीये नही रहता इसवास्ते जेसें वो प्रसन्न रहे रूठे नही एसा चलणा किसी अदमीको राजा वहोत मानता होय तो दिलमें गर्व नही करणा कारण वहोत अहंकार विनासकर देताहे इसपर एसा दृष्टांतहे दिल्लीके वादशाहका वडा वजीर मनमें एसा समझणे लगाके ये रासत मेरेही आधारसें चलतीहे ये गर्वकी वात उस वजीरनें किसी उमरावके सामने करी वो वात वादशाहतक पहुची वादशाहनें उसकी वजीरायत उतारकर एक मोचीके सुप्रतकरदी वो सही करणेकी जगे लोहकी वीधणी जो मोचीयोके जूते सीनेकी होतीहे उसकी करता मतलब राजा जिधर नजर करे उससेंही काम लेकर उसकूं वधा देताहे केयोंका वधाया उर वधातेहे राजाके प्रसन्न होणेसे एश्वर्य वधना कोण वडी वातहे सांगोका खेत दरियात्र अपने कुटंबका

भरण पोषण जीवोंकी प्रतिपालणा ओर राजाकी महरबानी इतनी चीजे तुरत दरिद्र दूर कर देतीहे विक्रम संवत उगणीससें चोदेकी गदरमें जिनोने बडे २ अंग्रेजोकी ज्यांन बचाइ वो अभी दलद्र त्यागके बडे २ ऋद्धिवंत विद्यमानहे सुखकी चाह करणेवाले एसे अभिमानी लोक राजा वगेरोकी नोकरीकी बेलासक निंदा करो लेकिन् राजाकी नोकरी विगर स्वजनका उद्धार ओर शत्रुओंका संहार होताही नही कुमारपाल राजा भागाथा तब वो सिर ब्राह्मणने सहाय दीयाथा जब वखत पाके पीछा राजा हुवा तब उसी वखत उस ब्राह्मणकूं लाट देशका राजा बनायाथा जित शत्रु राजाका पोलिया एक वखत राजाके सांपका उपद्रव दूर कराथा उस राजाके लडका नहीथा अंतमे उस देवराज द्वारपालकूं राज्य देकर राजाने जैन दीक्षा लेकर सिद्धिपदपाया मंत्री नगरसेठ सेनापती वगेरोका सब काम राजाकी नोकरीमे सभा जाताहे मंत्री प्रधान वजीर प्रमुखका कांम बहोत पापमईहे ओर फलभी कडवाहे वणे जहांतक श्रावककूं वर्जना चाहीये कह्याहे जिस अदमीके जो अधिकार सुप्रत कीया जावे उ-

समे वो चोरी कर्‍याविगर रहे नही जेसे प्रभु-
दान जोसीकूं जोधपूरके राजा मानसिंगजीने
कहा एसा कोइ आदमी ला सो काम सुप्रत करें
लेकिन् खावे नही तब अरज करी कललाऊंगा
दुसरेदिन सोनेकी मबीयांमें सालगराम नांमका
गंमकी नदीका पत्थर मालके लेगया राजाने
कहा प्रभुदांन वो अदमी लाया या नही प्रभुदांन
बोला हाजरहे आप एकांतमे पधारें एकांतमे
लेजाके सालगराम दिखलाया राजा बोला ये
क्याहे प्रभुदांननें अरज करी गरीब परवर कल
आपने फरमायाथा खावे नही एसा कामेती-
लाणा तब मेंने वहोत तलास कीया सो पेट
सबके नजर आया जंर पेट होगा सो खाये
विगर रहेगा नही आखिरको सालगरामजी
एसे मालम दीये सो इनके सामने जो कुछ
धरा जावे कुछभी खावे नही आपके हुकम
मुजब हाजर कीया इस दृष्टांतसें एसा पाया
जाताहे सो अपणे २ कसबके सब चोरहे न्या-
यवंततो हक्क खाताहे वे हक्क नही खाताहे
हक्क खाणेसें वरकतभी वहोतहे इसवास्ते हक्क
खाणेवालाही श्रेष्ठहे लेकिन् दुनियांमें आज-
कल झूठका रुजगार फेल गया सच्च बोलणे-

वालोंके फाके पमतेहे इसपर कवीरजुलाहेका दृष्टांतहे जेसें कवीर जुलाहा प्रायें विवहारीक झुठ कम वोलताथा पगमीवणाके बाजारमेवेचणेगया असलीदाम पांचरुपेकहे सबदिन फिरा किसीने तीन किसीनेसाढेतीन च्यारसें आगे नहीवढा पूंजीमेंभी घाटा पमे जांण वेचा नही जव मकानपर आया कवीर संग्रह नही रखताथा लाता तो खाता पूंजी काय मरखताथा दूसरे दिन उस पूंजीकाही सूतलाके वेजावणाता रातकूं भूखा रहा तव किसी पमोसणीने ये वात जांण के शिक्षादी उंर कहा कवीर तेने एनमोल क्यों वताया सात रुपे कहनेसें डुनियांमें नफेके संग पघमी विक जाती कवीर डुसरे दिन वेसाही कीया तव वोही पघमी छव रुपेमें डुसरे दिन विकगइ तव कवीरने घर आके एक डुहा कहा॥

डुहा–साचेजगपतियायनही झुठेजगपतीयाय॥
पांचरुपेकीपाघमी छवरुपयेविकजाय ॥१॥

इस वजेका झुठ वरतावा हमारे देसवालोंनें अपणी पत गमाणे उंर ये नव उंर परनव विगामनेकों कर रखवाहे सचा बोलणेका विवहार सबसें उत्तम उंर वरकत करताहे इस नवमें पेठ परनवमें गुनाहसें वचणा वाजे सहर

दिल्ली लखणेउ आगरा कासी जेपुर आदिके व्यापारी एक रुपेकी चीजके बूटतेही दसरुपे कहतेहें लेणेवाला कहांतक घटायगा क्या ये गुप्त पुन्य नहीहे सिरप दिलराजी करतेहे इहां बरकत नही आगूं फल खोटेहे झुठहो चाहे सचहो लेकिन् अंगरेज व्यापारीयोंकी ये सत्यता बनीही जारीहे सो अपणे हाफस तथा सापोमें जिस चीजका जितना दांम कहतेहे उतनाही लेतेहे चाहेबालक जावे चाहे वृद्ध हमारे देशके व्यापारीयोकों ये अक्कल कब आवेगी श्रावककूं चाहीये सर्वथा प्रकारे राजकाज नही छोडसके तो कोटवालीका उहदा जेल अप्सरता सीमापालपणा महापापका कारण समझके निर्दइ आदमीसें वणे एसाहे वंणे जहांतक इनोमें त्यागका प्रयत्न करे कारण ऊपर लिखेये हुदेदार पटेल चोधरी किसी आदमीकूं सुख कमही देता होगा अपराधीकूं सजा देणा तो राजाका धर्महे लेकिन् इन लोकोके सपाटेमें वाजे निरापराधी सुपात्रोंकीभी दुर्दसा होजातीहे जब वो कसूरदार नही होवे तब तो सजा देणेवाला केसा पापी ठहरताहे हमने कइवार सुपात्र ओर बेकसूरदारोकी

दुर्दसा देखीहै कसूरदार जिसका नांम लेवे वो निरापराधीभी इन ये हुदेदारोंके हाथ सजा-पातेहैं इसवास्ते दयावंतको एसे कामोंसें वंचणा चाहीये राजकाजके सवयहुदे ज्यादे करके फिकरकी जग्है जो कभी राज्यका अधिकारी श्रावक होय तो जेसें वस्तपाल तेजपाल विमलमंत्री प्रथ्वीधरकी तरें दुनियांमें अच्छी कीर्ति होय एसे काम चलाणा अभी जैपुर राज्याधिपती सवाई रामसिंगजीके सांमने बीकानेरका गोलछा माणकचंद अश्वपतिने जेसी धर्मकर्म उर नियम निभाया साधर्मीयोको आजीविका सर लगाया इतना राज्यकार्यके कारण थोमा वखत मिलणेपरभी जिन पूजा पमावस्यक कीये विगर अन्न जल नही लेताथा जो आदमी पापमड राज्यका-जकी हुकमत पाकर सुकृत नही संचतेहै तो वो अदमी क्या लेजांयगें क्योंकी राजाकी महर-बानी नित्य वणी रहेगी एसा जांणकर किसीसे वैर विरोध करणा नही राजा अपणेकूं कोइ काम करणा सोंपे तो राजाके पास ऊपराऊ-परी मनुष्य मांगणा चाहीये वणे जहांतक स-म्यग् द्रष्टी राजा श्रावकहीकी नोकरी करणी

उचितहे क्योंके ज्ञांन दर्शनवाला एसा किसी जैन श्रावगका दासन्नी रहणा श्रेष्ठहे उंर मिथ्यात्वपणेकरके मूर्ख एसा राजा चक्रवर्त्तिकीन्नी नोकरी करणी अच्छी नही किसीन्नी तरे निर्वाह नही होता दीखे तब सम्यक्तके पच्चखाणमें ॥ वित्तीकंतारेणं एसा आगार राख्याहे जिससें वेसोकीन्नी नोकरी करतां अपनी शक्ति उंर युक्तीसें स्वधर्मका कष्ट दूर करणा जेसें विजयपुरनगरमें विजयशेन राजा बना मिथ्यात्वीथा उस राजाके चंद्रदत्तनांमे मंत्रवी बना विचक्षणथा सत् गुरुके संयोगसें सर्वज्ञ कथित धर्मकी वाकब कारी होणेसें एसा जिनधर्मपर दृढ श्रद्धा होगइ सो अन्यकु देवोके वंदन पूजनका नियम कर लीया एकदिन राजासें कथा नट्ट ब्राह्मणनें ये वात कही तब राजा इस वातकी परिक्षा करणेकूं हुकम दीया हे मंत्री कल्ल हमारे जन्ममहोच्छवकी वर्षगृंथीहे सो देवकी पूजा करणेकूं तुमकूं जाणाहोगा पूजापेका सर्व सामान उत्तम द्रव्य तुमारे गृहपर नोकर लोक गजरदम लेकर हाजर होंयगें मंत्रवीने हाथ जोम कहा तथास्तु प्रन्नात होतेही सामान जो अष्ट द्रव्यादिक हाजर नया देख पमा वस्यक

जब करचूका तब राजाके हुकम मुजब अब उननोकरोके संग चला विष्णु गृहपर पहुंचा उहां जाकर अंदर प्रवेश करतेही अपणेपास जो डुप्पट्टाथा सो जहां विष्णु उर लक्ष्मी विराजमानथे उनोंके दरवाजेपर पम्दाकरके एक पहरेदारकों वाहिर वेठला दिया उर उसको कहा अंदर कीसीको जाणे मत देणा उहांसें पूजापा योंकायों संग लेकर देवी अष्टादस भुजीके गृहपर पहुंचा वहां अंदर जाके देखतेही दरवाजे दोनो वंध करके एक पहरा नंगी तलवारका उहां वेठा दिया उर कह्या किसीकूं अंदर मत जाणे देणा उहांसें निकलकर विनायक गजाननके गृह पहुंचा अंदर जाके देखकर सांठोकी करुव मंगाकर मंदिरमे ढिगकर दीया उहांसे निकलकर रुद्र गृहपर पहुंचा अंदर जाके देखकर एसी स्तुतिका काव्य पढा ॥ यत ॥ अकंठस्यकंठेकथंपुष्पमालां ॥ विनानासिकायांकथंगंधधूपं अकर्णस्यकर्णेकथंगीतनादं ॥ अपादस्य पादेकथंमेप्रणामं ॥ १ ॥ एसा स्तुति पढके आगे जैन मंदिर गया जिन मंदिरमें प्रवेश करके अंदर देखतेही पंचागप्रणामकर एसी स्तुति पढणे लगा यतः ॥ प्रशमरसनिमग्नं

दृष्टियुग्मंप्रसन्नम् वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यं करयुगमपधत्ते शस्त्रसंबंधवंध त्वमसिजगतदेवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥ एसा कहकर यतनके साथ निर्जीव जमीनपर शुद्ध जलसें स्नानकर केशर चंदन कर्पूर कस्तूरी घसकर चोपमत वस्त्रसें मुख और नाककी वाफ बंधकर सुदर्शन तिलककरके उत्तरासण धारकर पूजा विधीसें पूजा करणेलगा तब उने हलकारे जो खबर निवेशीयोकूं राजा इस बातकी खबर लेणे नेजेथे उनोनें सब अहवाल हजूरमें मालम करदी जब पीछानीसें मंत्री द्रव्य पूजा विधीसे करचूका तब भावस्तवमें एसें स्तुति करी ॥ त्वामव्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यंब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुं योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं ज्ञानस्वरूपममलंप्रवदंतिसंतः ॥ १ ॥ बुद्धस्त्वमेवविबुधार्चितबुद्धिबोधात् त्वंशंकरोसिभुवनत्रयशंकरत्वात धातासिधीरशिवमार्गविधेर्विधानात् व्यक्तंत्वमेवभगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥ २ ॥ आवस्सही पाठ कहकर मंदिरसे निकलकर राजाके पास पहुंचा राजाने पूछा क्या तुम देवपूजा कर आये मंत्री बोला जी हजूर राजानें पूछा कोनसे देवकी पूजा करी हमने तो सुणी के नंगे

देवकी मंत्री पूजा कर रहा हे तव मंत्री बोला हजूर आपने कल हुकम दीयाथा देवकी पूजा कल तुम कर के आना सो हजूर जिसमें देव पनेके लक्षण मिले वहांही पूजा करी कुदेवो का नाम लेकर आपने कहा नही था तव राजा बोला तुम किस २ जगे गये क्या क्या कीया देव कुदेव क्या वात हे सो बतलावो जब मंत्री बोला स्वामी नगा वो कहलाता हे जो की आपके स्कंदपुराणमें लिखा हे जो देव नाम धरा के ऋषीयोकी स्त्रीयोकूं देख कर काम के वस अंधा होकर नग्न होकर नाचणे लगा तब तापस लोक एसी कुचेष्टा देखकर क्रोधमें आकर श्राप दिया अरे पापिष्ट तेरा लिंग टूट पडे तब लिंग कट कर गिर पडा उस लिंगकूं जगमे स्थापन कीया हुवा निर्बुद्धि लोक केइयक गलेमें पहना करते हे केइयक पूजते हे इस्से ज्यादा नंगाफेरकोन होगा सो साक्षात्कार उघाडा जग उर लिंग कटा हुवा पूजते हे स्वामी एसी कामकुचेष्टा कारक कों कोण बुद्धि वान देव तारन कह सकता हे हे स्वामी मेने तो जिसवीतरागकी पूजा करी सो जिसके कोइतरेका कामकुचेष्टा अथवा नग्न पनेका

निशानभी नहि मूर्तिमें मालमदीया ऊर नही ऊनअर्हंत परमेश्वरकूं कभी किसीनें नग्न देखाथ जब राजत्यागके योग लिया तव गहनावस्त्रादिक सबका मोहत्याग दीयाथा ऊर नग्न नही दीखतेथे ऊनके जीवनचरित्र सुनोगे तब हे राजेंद्र सव अज्ञानके पट खुलकर आप्त इश्वरकूं जाणोगे जिसके पास नतो राग मोहकाचिन्ह स्त्री हे ऊर नद्वेषकाचिन्ह शस्त्र हे ऊत्कृष्ट समतारसमे मग्न प्रसन्न हे दोनुदृष्टीजिनोंकी ध्यान धारे हुये चोरासीयोगके आसनमें मुख्य जो पद्मासनधारे हुये एसेंपुरषही शंशारसमुद्रके ऊद्धार करणेकूं नौका समान हे क्योंके जो देव आप ही कामरूप अग्निकुंडमें जलरहाहे वो अपने सेवकोंकूं शांतिपद क्यादेसकताहे जो पत्थरकी नाव आपहीडूबजातीहे वोदुसरेकूं केसेतारकें पार पोहचावेगी में आपके हुक्मसें पूजाका सामान लेकर विष्णुके घरगया आगे देखातो विष्णु अपणीस्त्रीकूं वगलमेंलियेहुवे शंशारके विषयवासनामें प्राप्तथा तब मेने देखा कोइभी अदमी अपनी स्त्रीसें एसीकुचेष्टाकरताहोय कदास अकस्मात किसीकी नजरपडजावेतो अदमी आंखमूंचकर पीछालोटजाताहे क्योंकी

नीतिमें लिखाहे भलाआदमी वोहीहे जोपरा यापरुदा ढके इसवास्ते हेराजेंद्र पूजनीकपुरप होके एसी कुचेष्ठा कर्मोंके वसकरनेलगजावे तव मेनें परुदा ढकदीया पहरा इसवास्तेविठलाया सो डर कोइ भूलके चलाजावेगा तो इनोकी लज्या जावेगी उहांसे देवीकेगृहमें गया तो उहां एसादेखनेमें आया वोचंमी किसी अदमीका खूनकीयाथा सो उसकामस्तक खून झरता हुवा हाथमें लेररखवाथा इसवास्ते स्मृतीयोमेंलिखाहेकी खूनीको गिरफ्तारकरना फेरएसा हालदेखनेमेंआया एकआदमीकूं नीचापटक रक्खाथा उसआदमीका लिंग उसदेवीके भगमें लगाररखवाथा उसलिंगकी जोरसे देवीकी जीभ वाहिर निकलपमीथी सबहाथोमें नंगे शस्त्र लेरखाहे चाणक्य नीतिशास्त्रमे लिखाहेकी ॥श्लोक॥ नदीनां च नखीनां च श्रृंगीणां शस्त्रपाणिनां विश्वासो नैवकर्त्तव्य स्त्रीपु राजकुलेषु च ॥ १ ॥ इसवास्ते क्याजरोसा खुनीका डरनी किसीकूं मारम्हाले इसवास्ते राज्यनीतिके कायदेके माफक केदकर नंगीतलवारका पहरा लगवादिया अव हजूरके दिलमें आवे सोकरे मेंतो कायदेकी कारवाइ करणेवालाहूं उहांसे आगे गजाननके

पहली हुवा तब गणेशकी पूजा करीथी ये बात सिवपुराणमें लिखीहे ये गणेश कोणसा था जो कभी ये कहोगे वो आदि गणेस दुसराहे तो फिर एसें मैलके पूतलेकों दुनिया क्या समझके पूजतीहे जो महादेवके विवाहमें पूजा गया वो केसी सिकलवाला था उंर उस गणेशका चरित्र केसाहे आप जांणतेहें कभी सुणाहे राजाने कहा नही खेर फेरमें रुद्रके गृहमें गया तब तो मुझें एसा आश्चर्य हुवा हजुरने मुझें पूजापेका सामांन दीयाहे सो विना गलेविना पुष्पकी माला कहां पहराउं नासिका विना सुगंध द्रव्य धूपादिक कहां उखेवुं कांन विगर गीतादिक स्तुति किसकूं सुणाउं विना पांव नमस्कार किसकूं करुं इसवास्ते हे राजेंद्र इसतरेसें देवके लक्षण विहीन कहणे मात्र देवाभास तब मेनें आप्त मीमांसासें ईश्वरकूं पहचाणकर पूजा करके हजूरका हुक्म वजाकर तावेदारीमें हाजर हुवा राजा उसी दिनसें धर्मकी खोजमें लगा थोडेसें दिनोंमें दृढ सम्यक्त व्रतधारी श्रावक होगया कारण बुद्धिवान उंर परीक्षावंतोको असली तत्व तुरत हासिल होताहे श्रावक प्रधान चंद्रदत्त जेसा होणा सो स्वामीके हुकममें चलता

हुवा धर्मकी प्राप्ति राजाकूं करदी इसी तरे जो कभी अपणा निर्वाह किसी सम्यक् दृष्टिवंत समकितीके घर थोमेमें होता दीखे तो बणे जहांतक धर्ममें हरजाणा पोहचाणेवाला मिथ्या त्वीकी नोकरी नहि करे अब भिक्षासें आजीविका किसतरे जीव करतेहे सो कहतेहें भिक्षा मांगणा गृहस्थीकूं किसीभी तरे योग्य नही लेकिन् आफत् काल वहोत बुरा होताहे सोही कबीरके लमकेने कहाहे ॥ भूखसें कामनी काम तज देतहे भूखसे पुरष तज देत नारी भूखसें व्याव और यज्ञ रहजातहे भूखसे रहे कन्याकुमारी भूखसें पुरषका तेज घटजातहे भूखसे देमीकी बुद्धहारी कहतकवीर कमालका बालका वेदवेदांगसे भूख न्यारी ॥ १ ॥ इसवास्ते इसके वस लाचारीसें भीख मांगणी किसी कारणसे पमती हे प्रथम तो इस कांमकूं श्रावक आदरेही नही ये भिक्षा सोना धातू वगेरह अनाज वस्त्र इत्यादिक चीजोकी अनेक तरेकीहे वो भिक्षुक तीन तरेकेहें उसमें सर्वसंग परिग्रहके त्यागी मुनिराजकी जो भिक्षाहे सो धर्मकेवास्ते काया रक्षणार्थहे आहार १ वस्त्र २ काष्टपात्र ३ उपधी ४ आदि भिक्षा उचितहे मुनिराजकूं ये भि-

क्षा कल्पलतासमान संसार समुद्रसें तारणे-
वालीहे इस भिक्षुककूं देव ओर नरेंद्रभी नम-
स्कार करतेहें बाकी सब तरेकी भिक्षा लघुता
उत्पन्न करणेवालीहे सोही बतलातेहे ॥ श्लोक ॥
देहीतिवाक्यं वचनेषुनिष्टं नास्तीतिवाक्यं ततः
कनिष्टं ॥ गृहाणवाक्यं वचनेषुराजा नेच्छामि
वाक्यं राजाधिराजः ॥ १ ॥ दे एसी जुबान
बन्नी हलकीहे लेकिन् नही एसी जुबानसें कहणा
उससेंभी हलकाहे लीजीये एसा जो कहणाहे
सो राजा वचनहे नही चाहीये एसा जो क-
हणाहे सो राजाधिराज वचनहे १ जहांतक
संसारी मनुष्य दो एसा कहे नही उहांतक
रूप लज्या गुण ओर सत्यता कुलवंतपणा ओर
मान रहा हुवाहे दुसरी चीजोसें तृण हलकाहे
रुई उस तृणसेंभी हलकीहे लेकिन् याचक तो
रुईसेंभी हलकाहे तब किसीनें शंका करी के
रुईसेंभी हलकाहे तो याचककूं हवा क्यों नही
उडा लेजाती तब कहते हेमित्र पवनके दिलमें
इसवास्तें शंका पेदा भई के जोमें इसकूं ले
जाऊंगा तो स्यात् मेरे पाससेही कुछ मांगने
बेठे ओर शास्त्रोमें एसाभी लिखाहे वहोत दि-
नोतक विदेश रहणेवाला नित्त पराया अन्न

खाणेवाला नित्त परघर सोणेवाला इन तीनोंका जीवतव्य वृथाहे मांगके खाणेवाले आदमीमें इतने अवगुण प्राप्त हो जातेहे याने वेफिकर हीया शून्य बहुत खाणेवाला आलसु उर वहोत निद्रालू तेसेंइ भिक्षावृत्तिवालेके प्राये तो धन होताइ नही जो कदास कुछ होजाय तो वो भिक्षुक उस द्रव्यका उपभोग नही ले सकता न भिक्षाके धनसें बरकतहे विद्यमानकालमें भिक्षासें द्रव्यपात्र श्रीमाल ब्राह्मन द्दष्टिमें केइयक आतेहे लेकिन् ये लोक सब जन्म अपणा मांगणेमेही गमातेहे सांझतक जीमणके नोहतेकी वाट देखा करतेहे कभी भाग्ययोग निहुंता नही आवे तो ब्राह्मणी नवन्यामतबणाके पुरसें तो कहताहे आजे तो अमे विप खाधूं छे एकदिन एक श्रीमाळीब्राह्मण उर ब्राह्मणी आनंद प्रमोदमें बाते २ करते २ ब्राह्मणी पूछणे लगी जोतमे नगरीना राजा थइ जाउ तो सूं सूं करो ब्राह्मन बोला अमे राजा थइ जइये तो नूंतरो जमी २ ने वळि जमीये परंतु तमे नानानी मा राजानी राणी थइ जाउ तो सूं सूं करो ब्राह्मणी बोली अमे राजानी राणी थइ जइये तो गोबर थापी २ने वळि थापीये एसाही

क्षा कल्पलतासमान संसार समुद्रसें तारणे-
वालीहे इस भिक्षुककूं देव ओर नरेंद्रभी नम-
स्कार करतेहें बाकी सब तरेकी भिक्षा लघुता
उत्पन्न करणेवालीहे सोही बतलातेहे ॥ श्लोक ॥
देहीतिवाक्यं वचनेषुनिष्टं नास्तीतिवाक्यं ततः
कनिष्टं ॥ गृहाणवाक्यं वचनेषुराजा नेच्छामि
वाक्यं राजाधिराजः॥ १ ॥ दे एसी जुबान
बनी हलकीहे लेकिन् नही एसी जुवानसें कहणा
उससेंभी हलकाहे लीजीये एसा जो कहणाहे
सो राजा वचनहे नही चाहीये एसा जो क-
हणाहे सो राजाधिराज वचनहे १ जहांतक
संसारी मनुष्य दो एसा कहे नही उहांतक
रूप लज्या गुण ओर सत्यता कुलवंतपणा ओर
मान रहा हुवाहे दुसरी चीजोसें तृण हलकाहे
रुई उस तृणसेंभी हलकीहे लेकिन् याचक तो
रुईसेंभी हलकाहे तब किसीनें शंका करी के
रुईसेंभी हलकाहे तो याचककूं हवा क्यों नही
उडा लेजाती तब कहते हेमित्र पवनके दिलमें
इसवास्ते शंका पेदा भई के जोमें इसकूं ले
जाऊंगा तो स्यात् मेरें पाससेही कुछ मांगने
बेठे ओर शास्त्रोमें एसाभी लिखाहे बहोत दि-
नोतक विदेश रहणेवाला नित्त पराया अन्न

खाणेवाला नित्त परघर सोणेवाला इन तीनोंक
जीवतव्य वृथाहे मांगके खाणेवाले आदमीं
इतने अवगुण प्राप्त हो जातेहे याने वेंकिक
हीया शून्य वहुत खाणेवाला आलसु ओ
वहोत निद्रालू तेसेंइ भिक्षावृत्तिवालेके प्राये त
धन होताऽ नही जो कदास कुछ होजाय त
वो भिक्षुक उस द्रव्यका उपजोग नही ले स
कता न भिक्षाके धनसें वरकतहे विद्यमांनका
लमें भिक्षासें द्रव्यपात्र श्रीमाल ब्राह्मन दृष्टिमे
केइयक आतेहे लेकिन् ये लोक सब जन्म
अपणा मांगणेमेही गमातेहे सांझतक जीमणवे
नोहतेकी वाट देखा करतेहे कभी भाग्ययोग
निहुंता नही आवे तो ब्राह्मणी नवन्यामतव
णाके पुरसें तो कहताहे आजे तो अमे विप
खाधूं छे एकदिन एकश्रीमालीब्राह्मण ओर ब्राह्म-
णीआनंद प्रमोदमें वाते २ करते २ ब्राह्मणी पूछणे
लगी जोतमे नगरीना राजा थइ जाओ तो
सूं सूं करो ब्राह्मन बोला अमे राजा थइ जइये
तो भूंतरो जमी २ ने वलि जमीये परंतु तमे
नानानी मा राजानी राणी थऽ जाओ तो सूं सूं
करो ब्राह्मणी बोली अमे राजानी राणी थइ
जइये तो गोवर थापी २ने वलि थापीये एसाही

हाल हमारे विद्यमांन समयमें हुवा हे सो लिखतेहे जोधपुराधीस तखतसिंहजीके पास हरकरण नाजर जातिका श्रीमाल ब्राह्मणथा बहोत राजाके मांननीय था उसने चाहाकी मेरे भायोंकी इज्जत वधाऊं हजूरसें अरज करणेपर राजा साहिबने उसके भाईकूं बुलाके सिरपाव देकर हुकम दीया जालोरगढकी हाकमीका फुरमांण पत्र लिख दीया जावे लिखदीया नीचे गढसें उतरकर जब फुरमांण पढा तब तो बडा-ही उदास होकर पीछाही हजूरमें गया उर हाथ जोड कहणेलगा आहजूरे सूं कीधूं अमा-रो मांन तेसूं राख्यूं हजूर बोले क्या हुवा ब्रा-ह्मण बोला गजबनीवात अमारो पेटीयो या फुरमांणमें केम नही लख्यो राजा वगेरे सब सभासद हसणे लगे हरकरणकूं राजा साहबने कहा तेरा भाइ निर्भाग्यहे तब अश्वपती दिवान विजेसिंघजी बोले गरीबपरवर सिंहणीका दूध जोमुलककी हाकमीये राज्यपदस्थ कोइ अश्वपति राजन्यवंसी सांभणेका पात्र होताहे ये भिक्षुक भिक्षा सिवाय इसवातकूं क्या जाणे तब हजूरने च्यार पेटीये सरू करवा दिये इस दृष्टांतकूं देखके समझ लेणाकी निकेवल पोरपन्थी भिक्षा

मांगणेवालोंकी बुद्धि केसी होतीहे श्रीहरिभद्रा-
चार्य पांचमें अष्टकमें तीन प्रकारकी भिक्षा लि-
खीहे सर्व शंपत्करी १ पौरषघ्नी २ ओर वृत्ति-
भिक्षा ३ इसतरे तीन प्रकारकी भिक्षा लिखीहे
गुरुकी आज्ञामें रहे हुयें धर्म ध्यान वगेरे शुभ
आचरणमें प्रवृत्तमान याने जावज्जीव सर्व आरंभसें
निवृत्ती प्राप्त हुये एसे यती साधूकी भिक्षा सर्व
शंपत्करी कहलातीहे १ अब दुसरी पोरषघ्नी
भिक्षा कहलातीहे सो ज्ञांन ओर व्रत शुभक्रि-
यारहित नांममात्र जती जिनोके पास, शुद्ध
जतीवेषभी नही धर्मकूं कलंक लगे एसी चाल
चलणेवाले जो श्रावकका कोईभी कांम साधने
लायक नही ऐसों पुरषोकी भिक्षा पुरषार्थकूं
नाश करणेवाली पौरषघ्नी कहलातीहे इनके भेद
ओरभी एसेंइ खटदर्शनी दस नांमके सामी
दंभी गुसांइ योगी कबीरी दादू नानकके उदासी
निर्मले गरीबदासी रूखरू सूखरू अनेक कि-
स्मके भेषधारी सत्‌ज्ञांन ओर क्रिया करकेहीन
विषयलंपट गांजा चिलम चरस फूंकणेवाले
व्यर्थ घूमणेवाले धूणीमें लाखों जीवोका घम-
साण करके तपसी वजणेवाले जो लष्ट पुष्टपणे
भीख मांगके खातेहे वोभी पौरषघ्नी भिक्षा कह-

नही लगे एसी लिखत पठत निमित्तादिक कला कौशलतांइसे अपणा निर्वाह गृहस्थके स्वारथ पोंहचाके करे दरिद्री अंधा पांगला जो किसीभी तरे धंधा करणे समर्थ नही एसे जो लोक अपणे गुजरान करणेकूं भीख मांगतेहे वो वृत्तीभिक्षा कहलातीहे वृत्ति भिक्षामे बहोत दोष नहीहे कारण वो मंगत दरिद्री लोक धर्मकी हलकाई नही पैदा करतेहे मनमें दया लाकर लोक उनोकों भिक्षा देतेहे इसवास्ते धर्मी श्रावक मांगे नही भिक्षा मांगणेवाला गृहस्थ कितनाभी धर्मानुष्ठान करे लेकिन् जेसें दुर्जनसें दोस्ती करणेसें लोकीकमें अवज्ञा अंर निंदा होतीहे एसा समजणा अंर जो जीव धर्मकी निंदा कराणेवाला होय उसकूं सम्यक्तपाणाभी मुसकिल होताहे उंघनिर्युक्ती सूत्रमें साधुउंकों लिखाहे सर्व छकायके जीवोंपर दया रखणेवाला साधूभी अगर आहार नीहार करते तथा गउचरी करते भिक्षा लेते जो जराभी धर्मकी निंदा पैदा करे तो उसकूं वोध बीजकी प्राप्ति होणी मुसकिल होय नीतीका एसा कहणाहे विवहार नयसें के भिक्षा मांगणेसें कोइकूं लक्ष्मी तथा सुख होणा मालूम नही पमता ॥ श्लोक ॥ व्यापारेवर्द्धतेलक्ष्मीः

कथंचित् सातुकर्पणे आयव्ययेनभृभ्रेहे भिक्षायां तु कदाचन ॥ १ ॥ पूरी लक्ष्मी व्यापारमेहैं वो लक्ष्मी थोभी कर्पाणमेहे राजद्वारमें आवंद उर खरच दोनोंहे उर फेर भीखसेती कभी लक्ष्मी होतीही नही निकेवल पेट भराइ होतीहे इसवास्ते मनुस्मृतीके चोथे अध्यायमें इसवजे आजिविका करणी लिखीहे ऋत १ अमृत २ मृत ३ प्रमृत ४ उर सत्यानृत ५ इतनी तरे आजिविका करणी लेकिन् नीचकी सेवा करके पेट भराइ नही करणी बजारमे विखरे हुये दाणे चुगणा सो ऋत कहलाताहे उर विगर मांगे जो मिले सो अमृत कहलाताहे ये अमृत भिक्षा मनूकी लिखी हुइ प्रायें जैन जतीयोंमें दिखतीहे कारण जती लोग गृहस्थके घर जातेहे तब याचना नही करतेहे गृहस्थ पात्रमें अपनी इच्छा माफक अर्पण करतेहे सचहे परमहंसवृत्तिवालेभी मांगते नहीहे सची उर पूरी परमहंसगतितो तीर्थंकर जिन कल्पवालोंकेही छद्मस्थ भावमें होतीहे उर मांगणेसे मिले सो मृत कहलाताहे खेतीसें जो मिलताहे सो अमृत कहलाताहे उर व्यापारसे जो प्राप्त होवे सो सत्यानृत कहलाताहे लक्ष्मी नही तो विष्णु-

के वक्षस्थलमें रहतीहे ओर नही कमलवनमें रहतीहे निकेवल पुरपोके उद्यमरूप समुद्रमें उस लक्ष्मीका रहणाहे विशेपकरके व्यापारसें-ही लक्ष्मी आतीहे लेकिन् धनार्थी पुरप अपनी हिम्मत उद्यम अपणें मददगार धन ओर ताकत भाग्योदय देश काल वगेरहका विचारकर व्यापार करणा नही तो नुकसान लगणाताजब नही हम कहतेहे बुद्धि शाली अदमी अपणी शक्तिकूं विचारके काम करणा अगर नही करेगा तो कामकी सिद्धीका अभाव १ लज्या २ ओर लोकीकमें हासी ओर हीलना लक्ष्मीकी ओर बलकी हानि होगी चाणक्य कहताहे ये कोनसा देशहे १ मेरे सहाय कर्त्ता केसेहें २ काल केसाहे ३ मेरे आवंद ओर खरच कितनाहे ४ में कोण हूं ५ ओर मेरी शक्ति कितनीहे इस बातकूं हरवक्त विचारते रहणा विघ्न विगर जलदी हाथ लगणेवाला एसा बहोत साधन करणेवाले एसे जो कारणहे सो पहलेहीसें जलदी काम होणेका नतीजा मालम कर देतीहें जलदी विगर यत्न कीयेविना प्राप्त होणेवाली लक्ष्मी ओर बहोत यत्नसेंभी नही प्राप्त होणेवाली लक्ष्मी पुन्य ओर पापमें कितना अंतरहे एसा

मालम कर देतीहे व्यापारके अंदर विवहारकी शुद्धि द्रव्य १ क्षेत्र २ काल ३ ओर जाव इन जेदोसें च्यार प्रकारकीहे जिसमें द्रव्यसें तो पनरे कर्मादानका कारण एसा किरियाणा सब तरेसें श्रावककूं छोमणा चाहीये धर्मकूं पीमा करणेवाला ओर लोकमें अपयस पैदा करणेवाला एसा जो किरियाणा बहोत मुनाफा मिलता होय तोजी पुन्यार्थी पुरषोकूं गृहण नही करणा चाहीये तयार कीया हुवा सूत वस्त्र नगदी सोना रत्न धातू वगैरे जो निर्दोष किरियाणाहे सो विवेकी आचरे जितना व्यापारमें आरंज पाप कम होय तेसा हमेसां चलणा कजी काल-कुसमयमें दुसरी तरे निर्वाह नहि होता दीखे तो बहोत आरंज एसा व्यापार तेसेंही कठोर कर्मजी करे तोजी कठोर कर्म करणेकी मनमें इच्छा नही रखणी एसाही प्रसंग आ पमे तो करणा पमे तब आत्माकी साक्षी तथा गीतार्थ गुरूके सांमने उस बातकी निंदा करणी तेसेंही मनमें लज्जा रखकरकेही एसा काम करणा, सिद्धांतमें जाव श्रावकके लक्षणमें कहाहे सु-श्रावक तीव्र आरंज वर्जे उस विगर निर्वाह नही होता होय, तो मनमे तीव्र आरंजकी

इच्छा नहीं रखता हुवा फकत निर्वाहके वास्ते-
ही कठोर आरंभ करे लेकिन् परिग्रह उर
आरंभरहित पुरषोकी स्तवनाभक्तिकरे धन्यहे वे
महापुरष सो सर्वज्ञकी आज्ञाकी प्रतिपाल
करतेहे कोइ जीवकूं तकलीप देते नहीं सर्व
पापका त्यागरूप जिनोने व्रत कीयाहे एसे
धन्य महामुनि शुद्ध आहार ग्रहण करेतेहे इस
तरे दयाका परणाम रखणा गृहस्थ विगर देखा
हुवा विगर परीक्षा हुवा किरियाणाकूं अथवा
जिसमें बहोत चीज मिलीहुइ होय एसी
चीज बहोत व्यापारीयोकी पांतीमे लेणा चा-
हीये क्योंकी नुकशांन लगे तो सबके सामिल-
में लगे क्षेत्रसेती जहां स्वचक्रभय उर परचक्र-
भयर नहीं होय मरी आदिरोगका भर किसी
किसमकी तगाइ कष्ट नहीं होय उर धर्मकी
सामग्री सब होय जिन मंदिर १ उपाश्रय २
पंन्डित धर्मोपदेशक यति ३ ज्ञानपुस्तकालय ४
साधर्मी ५ इत्यादिक जहां होय मुख्यपणेकर
के तो उसही जगे व्यापार करणा काल करके
बारे महीनोमें तीन अषाड चेत भाद्रपद आ-
सोज पर्वतिथिमें व्यापार छोडणा उर वर्षातकी
मोसममें जिन चीजोंमे जीव बहोत होजाय

वो शास्त्रोमें लिखे हुये ओमणा नावसें व्यापारके वहोत भेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा राजा इनोसें थोमाजी कीया व्यापारमें नफा पाणा मुसकिलहे अपणे हाथसें दीया हुवा पीछे मांगणा मुसकिल होताहे मर रखणा पमताहे जो देणेका व्यापार समझते इनहीहे लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अ-दालत व्याजकी मिगरी रुपे सइकमेसें ज्यादे नही देसकतीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें ले-णेदेणेका विवहार उनोकी पेठप्रतिति जांणके क-रणा शस्त्रधारी वेइमांनोकू कदापि उधार नही देणा जंगल जाटन भेमीये चोरस्तेमे साह रांघमकदिय न भेम्यि भेम्यां होय कुराह १ श्रेष्ठवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्या-पारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवाल-खोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसे जो वैर विरोध पीछेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें वखत आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास असली रकम वसूलायतमे तोटा जांणा पमे तो तुरत वस्तु वेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें

भाग्ययोगसें तोटाभी पभ्ते तो नफाभी व्यापारमेंही मिलताहे घोभ्े चढे सो वाजे वखत गिरभी जाताहे उद्यम तो चोतरफसें दृष्टि देकर नफेकाही करणा लेकिन् उधारहार टांगरा रीता जब मांगे जब होय फजीता इस धंदेमे मूल पूंजीकोभी धक्का लगणाहे अंग्रेजी राज्यके कायदेमें तीन वरषसे उपरांतकी लेणदारकी सुनाइभी नहीहे सिरकार इस कायदेके वाहनेसें जताती हे के हाथ उधार मत दो समझे नही तो सरकार क्या करे विश्वासपात्रकोंभी उधार देणा पभ्े तो च्यार गवाही मोतबरके सांमने देकर स्टाप कागदमें लिखाकर एक आनेके कागदमें ऋणीके हाथसें रुपे भरवायेकी रसीद करवाणा चाहीये मकान जमीन रैण रखणेपर सरकारसें रजिस्टर करवा लेणा चाहीये विशेषपणेकर नट विट कसवणोके दलाल भभ्वे कसवण जुआरी इन लोकोके साथ उधारका धंदा नही करणा गिरवी रखके जो रुपये देणा सो बजार भावसें ज्यादे माल रखकर देणा अपणी समझसें तो दूणा रखणा चाहीये क्योंकी रुपे दूणेसें ज्यादे मिलते नहीहें चाहे कितनीही मुद्दत क्यों नहीहो लोकीक कहणावट एसीहे दांम दूणा घी चोगुणा घास

फूसका अंत अपार गिरवीपर व्याजके रुपे ज्यादे होगये होय तो उस ऋणीकूं नोटिस देकर जताकर मुद्दत जो नोटसमें लिखे वो वीतनेपर च्यार मोतबर गवाह रखकर वेच देणा चाहीये नोटिसकी नकल पास रखणी चाहिये उधारमें जो नुकसाणी पोहचतीहे उसपर दृष्टांत कहतेहे जिन दत्तनांमें एक सेठ जिसके एक वे समज लम्काथा मुग्धयाने भोलाथा वापके प्रताप लीलालहिर करताथा अच्छे कुलकी कन्यासें उस मुग्धकी सादी करदी सेठ उस मुग्ध लम्केकूं इस तरेकी सीखदी हेवेटा सबजगे जीभकूं द्रांतोका पम्दा रखणा १ किसीकूं व्याजवास्ते रुपे उधार देणा तो पीठी उघराइ नही करणी २ बंधनमें पम्री हुइ उरतकूंही त्रास देणा ३ मीठाही भोजन करणा ४ सुखसें नीद लेणी ६ मुलक २ मे घर करणा ७ वेस्याके जाणा तो प्रभात समय जाणा ८ जुआ खेलणा तो अपणे श्रृंगारित चित्रशालीमे खेलणा ९ वासी नही खाणा ताजाही खाणा १० छायामेंही जाणा छायामेंही पीछा आणा ११ मिठाइ खाणेका व्यसन पम्जाय तो हलवाइके घरपर जाके खाणा १२ दरिद्र अवस्था आ जाय तो खाट्टु उर मकराणे

भाग्ययोगसें तोटाभी पमेतो नफाभी व्यापारमेंही मिलताहे घोमे चढे सो वाजे वखत गिरभी जाताहे उद्यम तो चोतरफसें दृष्टि देकर नफेकाही करणा लेकिन् उधारहार टांगरा रीता जब मांगे जब होय फजीता इस धंदेमे मूल पूंजीकोभी धक्का लगणाहे अंग्रेजी राज्यके कायदेमें तीन वरषसे उपरांतकी लेणदारकी सुनाइभीनहीहे सिरकार इस कायदेके वाहनेसें जतातीहे के हाथ उधार मत दो समझे नही तो सरकार क्या करे विश्वासपात्रकोंभी उधार देणा पमे तो च्यार गवाही मोतबरके सांमने देकर स्टाप कागदमें लिखाकर एक आनेके कागदमें ऋणीके हाथसें रुपे भरवायेकी रसीद करवाणा चाहीये मकान जमीन रैण रखणेपर सरकारसें रजिस्टर करवा लेणा चाहीये विशेषपणेकर नट विट कसवणोके दलाल भमवे कसवण जुआरी इन लोकोंके साथ उधारका धंदा नही करणा गिरवी रखके जो रुपये देणा सो बजार भावसें ज्यादे माल रखकर देणा अपणी समझसें तो दूणा रखणा चाहीये क्योंकी रुपे दूणेसें ज्यादे मिलते नहीहें चाहे कितनीही मुद्दत क्यों नहीहो लोकीक

का अंत अपार गिरवीपर व्याजके रुपे
दे होगये होय तो उस ऋणीकूं नोटिस
र जताकर मुद्दत जो नोटसमें लिखे वो
ननेपर च्यार मोतबर गवाह रखकर वेच देणा
हीये नोटिसकी नकल पास रखणी चाहिये
ारमें जो नुकसाणी पोहचतीहे उसपर दृष्टांत
हतेहे जिन दत्तनामें एक सेठ जिसके एक बे
मजा लडकाथा मुग्धयाने भोलाथा बापके प्रताप
ोलालहिर करताथा अच्छे कुलकी कन्यासें उस
ग्धकी सादी करदी सेठ उस मुग्ध लडकेकूं
स तरेकी सीखदी हेबेटा सबजगे जीनकूं
ंतोका पडदा रखणा १ किसीकूं व्याजवास्ते
पे उधार देणा तो पीछी उघराइ नही करणी
बंधनमें पडी हुइ उंरतकूंही त्रास देणा ३
ीछाही भोजन करणा ४ सुखसे नीद लेणी ६
ुलक २ मे घर करणा ७ वेस्याके जाणा तो
्रात समय जाणा ८ जुआ खेलणा तो अपणे
ृंगारित चित्रशालीमे खेलणा ९ वासी नही
खाणा ताजाही खाणा १० छायामेंही जाणा छा-
यामेंही पीछा आणा ११ मिठाइ खाणेका व्यसन
पडजाय तो हलवाइके घरपर जाके खाणा १२
दरिद्र अवस्था आ जाय तो खाडु उंर मकराणे

की 'बिचकी जमीन' खोदणी १३ इन बातोंमे शंका पडे तो मेरा मित्र हेद्राबादमें मगनमल्ल श्रावक सेठ रहताहे उसकूं पूछणा उस शिक्षाकूं सुणी लेकिन् वो मुग्ध समझा नही भोलापणेमे सब धनको खोबेठा आखिर दलिद्रदशा आइ पिताके हुकम मुजब हेद्राबाद जाकर पिताकी कही सिक्षा कहकर मगनमलसें परमार्थ पूछणे-लगा तब सेठने परमार्थ बतलाया सब जगे जीभकूं दांतोका पडदा रखणा सो उसका परमार्थ एसाहे जुबानमेंसें कडवा लवज बिगर विचारे बोलणा नही सबकूं हित वचन बोलणा १ किसीकूं रुपये उधार देणा सो फेर उघराइ नही करणी पडे मतलब पहलेहीसे दूणा माल रेण रखलेणा सो आपही वो रुपये व्याजस-मेत देजाय कांहेकूं तकाजा करणा पडे २ बंध-नमे पडी उंरतकूं त्रास देणा मतलब बेटाबेटी हुये वाद स्त्रीकूं अगर त्रासनी देवे तो वो घर छोडके जाती नहीहे उंरत जात बेगमहे वि-चारहीन होणेके कारण अपघातकर लेवे या पराशक्त होके स्वच्छंदचारणी होजातीहे इस-वास्ते कामशास्त्रमें लिखाहे उंरतोंसें सदा नर-माईसें काम लेणा ३ मीठा भोजन करणा सो

जहां प्रीति ओर आदर दीखे ठहांही जीमणा जहां प्रीति ओर आदरहे निश्चे समझणा वोही भोजन मीठाहे ॥

दुहा—वारिवोलावणवेसणो वीभोअरुबहुमांन ॥
जीणघरपांचववानही सोघरजांणमसान॥१॥
आवनहीआदरनही नहीनयणामेनेह ॥
जिणघरकदीयनजाइये जोकंचनवरसेमेह॥२॥
आवकरेआदरकरे दिलमेधरेसनेह ॥
तिणसज्जनघरजाइये जोपत्थरवरसेमेह ॥३॥

अथवा जब भूख लगे तब भोजन करणा सो मीठा लगताहे विगर पचे खाणेसे रोगोत्पत्ति वैद्यक वचनहे सुखसें सोणा मतलब जिस जगे किसीभीतरे कष्टडपद्रवकी शंका नही होय ठहांही रहणा सो सुखसें नींद्रा आवे लोकीकमेंभी सात सुख कहतेहे पहली सुख निरोगी काया दुजा सुख घरमे हुय माया तीजासुख सुथानवासा चोथा सुख राजमे हुयपासा पांचमा सुख कुलवंती नारी छठा सुखपुत्र आज्ञाकारी सातमा सुख धर्ममे मति शास्त्र सुक्त गुरुपंग्ति यती इतना मिले स्वर्गमे वास ये सातांही पुण्यप्रकास १ अथवा जब

निद्राका समय होय तबही लेणा दिनकूं नहीं सोणा खासी जुखामादिक दिनके सोणेसे नींद्रा करणेसें होताहे भोजन करके मावी कर वट अन्नपाचन करणेकूं विगर नीद सयन करणा ताकत वधाणेकूं चित्त सोणा ५ गांम १ में घर करणा मतलब सब देसके वसणेवाले मोतबरोसें दोस्ती करणा सो जहां कार्यविशेषे जाणा पमे तो घरकी तरे हिफाजत सब कामोंकी वणसके अथवा घर बेठेही चीजवस्तु चहीये सो आप्तद्वारा आसके ६ वेस्याके प्रभातसमय जाणा मतलब रात्रिके कीये हुवे शृंगार सो जारपुरषोके मर्द्दनसें विभंगकूं प्राप्त हुये हुये मद्यादिकके नसे उतरे हुये महाभयानक विरूप देखणेमें आतीहे सो पुरषका चित्त किसी प्रकार वैस्यागमन नही चाहता वलके एसा स्वरुपकूं देख एसाभी अनुभव प्राप्त होताहे के अनेक जार चोर नट विट नीच पुरषोकी संसेवित वैस्याकूं कोण कुलवंत पुरषके संग भार्याका संसर्गज कर सकताहे निकेवल एक पेसेही कीयारीहे जिसके ड्ण वैस्यायोनें चारुदत्त कयवन्ने सेठ जेसोकें वारे क्रोम्सोनइये खाकर अंतमें निकाल दिया तो फेर एसी मुतलबगारी

वेस्याउंके फंदेमे कोन बुद्धिमांन जाताहे ५ जुआ खेलणा तो अपणी चित्रशालीमे खेलणा मतलब जब जुआरीलोक उहां जमा होतेहें तब वो मकानकी सजा वट देख एसआरामी देख बमे अपसोस वंद होजातेहे तब नीसासे माखणे लगजातेहे जब उनसें दुखका कारण पूछोगे तव तो एसा कहतेहें क्या कहे हमारे घरमें इससें दूनी सजा वटथी उर पांच लाख रुपेथे सब इस जुएमें वरवाद हुवा कोइ चोगुणी उर कोइ अठगुणी कहकर अंतमें जूआ उर फाटकाही फकीर होणा सावित करेंगे तब तो एसा प्रत्यक्ष प्रमांण पाकर फेर कोन बुद्धिमांन जूआ उर फाटका करेगा इस धंदेवालेके निश्चे जद तद नुकशानहे एसे धंदेवालेकी हूंडीजी साहूकार विचारके लेतेहे एसे आदम्योंकी पतगये वाद मालसट्टे रुपे मिलणा मुसकिल होताहे सात विसनोका राजा जुआहे नल उर पांडव जेसें इसके प्रताप दुख पाये तो आजकलके पुरषोमें कष्ट जुए फाट केसे पमणा क्या बमी बातहे हजारों बिगमे उर एकवणे एसा धंदा बुद्धिवांन नही करे धंदा हाजर माल श्रेष्ठहे फाटका इज्जतका जूआहे जो करेगा फाटका

धन् जायगा गांठका थालीविके अरुवाटका घरकारहेन घाटका ए वासी नही खाणा ताजाखाना मतलब अपने वमेरोने कुछ धनमाल जमाकर गयेहे अथवा आपकी मूलपूंजी खाजाणा सो वासी खाणा कहलाताहे अथवा वासी अन्न रोगोत्पत्ति करताहे लालीया जीव गीले जोजो पाणीके संयोजी पकाये जाताहे उन चीजोके खाणेसें अनेक जीवोके संसर्गी हिंसासे परनवमें हिंसाके फल बुरेहे इसवास्ते धर्मशास्त्र विरूद्धहे ताजा खाणा सो कमाके खाणा अथवा ऋतुपथ्य धर्मपथ्य खाणा कमाके खाणेपर चार टकेमें राजा जोजका दृष्टांत जेसें राजा जोज एकदिन किसी कारण जंगलमें गया आगे रस्ता जुलगया प्याससें व्याकूल हुवा तब वृक्षकी ठांहमें घोमा बांधके बेठकर प्याससें व्याकुल पाणीकी चिंतामें लगा इतनेमें एक धणगर जेरू बकरीयां चराणेवाला अपणा एवमलेके चला आया राजाने पाणीकी जाय पूछी उसने जलका स्थांन बतलाया राजा तृषा मिटाकर स्वस्थ हुवा तब राजा उसकूं अपणा प्राणदाता समजके उस एवालकूं कहणेलगा तूं मेरे पास अछी चीजहोय सो मांग उसने कहा

में क्या मांगूं में भिक्षुक नही मेरे पुरषार्थसें कमाएेसें में च्यार टकेमें राजा भोज हूं राजा वरू आश्चर्यमें आकर ग्वालसें पूछणे लगा च्यार टकेमें तूं राजा भोज किस तरेसेहे सो मुजे वतला ग्वाल कहणेलगा देख च्यार रुपे महीना कमाता हूं रुपयाकूं किसी २ देसमें टका कहतेहे सो एक रुपयाको नाज एकमण आताहे जिससें मेरी स्त्री शंतानादिका उदर-पोषण करताहूं दूध उर घी वलीता उर कंवल विछानेकी टटी ये सब एवरूसे मिलताहे एक रुपया स्त्री पुत्र पूत्री उर मेरे वस्त्र सींवाइ रंगाइ धोती वरतण खरचमें लगाताहूं पाव रुपया ति-वारवार पाव रुपया व्याह खरचका न्यारा रख-ताहूं पावरुपयामें पाहुणा मिजमांन स्वजन संबंधीयोका अलायदा रखताहूं पाव रुपया शरीरमें रोगादिकके इलाज वैद्यके वास्ते जुदा धरताहूं दो आने कुलधर्मके गुरुउंके दांन नि-मित्त अलायदे धरताहूं दो आने देव तथा मं-दिर धर्मशाला दीनदुखीयोके दांन देनेवास्ते रखताहूं वारे आणा खजानेमें जमा करताहूं इसवास्ते मेरे किसी वातकी कमी नही में क्या वातपर तेरेपाससें व्यर्थ दांन लूं तव राजा

भोज, ये वात सुणके दंग होगया उर मनमें कहणे लगा क्या तारीफ करुं इस अकलवंतके अक्कलकी असलमें इस सिक्षासें जो संसारी चले तो कभी उसका संसारी कार्यमें हरकत न पहुंचे इस सिक्षाके देणेसें ये मेरा गुरु बणगया कारण चाणाक्य कहताहे ॥श्लोक॥ एकाक्षर प्रदातारं योगुरुनैवमन्यते श्वानयोनिशतेनैव चंडालेष्वपिजायते ॥ १ ॥ अर्थात् एक अक्षर सिखाणेवालेकूं गुरु करके नमाने वो जीव सो जन्म कुत्तेका करके निश्चेसें चंडाल कुलमे जन्म लेताहे इसवास्ते इस शिक्षाका ये मेरे भला गुरुहे तब राजा कहणे लगा हे महाभाग्य एसें तो आप कुछ लेते नही लेकिन् इतना मेरा कहणा आप याद रखणा ये शिक्षा जो च्यार टकेमें राजा भोजकी आप मुझसें कही ये बात अब आप विना कोटि सो नइये विगर हरगिज कोइ पूछे तो मत कहणा सिखया देकर जो धन आप लोगे वो दांन नहीहे किंतु उचित व्यापारहे तब उसने कहा अच्छा लेकिन् कहणे लगा इस बातका कोटि दीनार कोण देगा राजा बोला आप याद रखो क्या देताहे दरदी क्या देताहे गरजी जिसकूं गरज होगी

सो देजायगा राजा आगे शहरके तरफ आया लेकिन् वो वात राजा दममें २ याद करताहै प्रभात होतेही आम दरवार भरके अपणे मुसाहिव प्रधान हिसाव माल सायरके तमाम बड़े २ यहुदेदारोसे कहणेलगा च्यार टकेमें राजा भोज लाओ सब सभा कहणेलगी क्षमा २ गरीब परवर अमोल्य रत्न जो राजा भोज सो च्यार टकेमें कैसे आवे राजा बोला इस हक नाहक स्तुतिसें में प्रसन्न नही होता मोहलत देताहुं सात दिनोंकी च्यार टकोमे राजा भोज दाखल करो नही तो सर्वस्व छीनकर सबोंको विना कुटंव शहरसे निकालदूंगा दरवार वरखास्त करदिया अब वे राजाके सब मुसद्दी बड़े उदास होकर अपणी अक्कलसें सोचा सब पंडित स्याणे ज्योतषीयोकूं पूछा लेकिन् ये वात किसीनेभी नही वताई आखिरकों सात दिन पूरे होगये राजा अपणे वादे मुजब धोती लोटादे देकर इकेलोकूं शहरसें निकाल दीया और कहा जिस दिन इसी वातकूं हासिल कर आओगे उसीदिन शहरमें आके मुझे मूं दिखलाणा लाचार वो फिकरवंद उसी जंगलमें जा पहूंचे वहां सब लोक खाणा पीणा कीया

इतनेसे वो जंगली अपणी वखतपर उसी जगे आया इनोंको देख पूछणेलगा तुम सबके सब बडे दिलगीर उर अच्छे घराणेके दिखतेहो तब उनोनें कहा कोइ कहणेकी वात नहीहे हमारा संकट कोइ काटणेवाला नही दिखता तब इसने कहा कहो तो सही काटणे जेसा होगा तो मनुष्य काट सकताहे तब ये कहणेलगे क्या कहे ये वात बडे २ अकलवंत उर पंडि-तोकी समजमें नही आई तो तु जंगली क्या हमारा दुख काटसकताहे जंगलीनें कहा मेरे लायक होय सो तो में कहसकताहूं इसमें पंडित उर जंगलीकी क्या वातहे वाजे काम एसेंहे सो जंगली जांणतेहे नागरिक नही जांणते एक केवली टाल सर्वज्ञ कोणहे सबगुणके उर पढकेइ हुसियार होतेहे तब उनोमेंसें किसी-ने कहा भाइ अपणे तो जो मिले उनसेंही पूछो कोइनकोइ वताही देगा नट बुद्धिसें जट बुद्धि वाजे कांममें अधक निकलतीहे जब छींक लेणा होताहे तब सूर्यके सन्मुख देखणा पडताहे तब उनोने कहा हम सब राजा भोजके मुत्सद्दीहे इसतरे राजाने हमसेकहा च्यार टकेमें राजा भोजलाउ हमने तो वहोत तलास

करी लेकिन् किसीनेभी नही वतलाया तव राजानें निकाल दीया सो मारे आपदाके इहां आयेहे नूं कुछ जांणताहे तो वतला इतना सुनतेही जंगली बोला इस वातका क्या में वतासकताहूं उन मुत्सद्दीयोने खूब निश्चयसें पूछा सच्च वतादेगा जंगली बोला सच्च वताउंगा तिलभरका फरक नही जंगली मनमें विचारणे लगा वो सवार निश्चे राजा भोजथा लेकिन् अब राजाका जो हुकमहे वोही करणा चाही-ये तव मुत्सद्दीवग्गी आजीजसें पूछणेलगे वतला च्यार टकेमें राजा भोज कोणहे जंगली बोला कोटि सोइनये देउ तो राजाकूं तुमारी कही वात समझा देताहूं जव तुमारा राजा कहदेवे तव ले लेऊंगा तुम वणिक हो मुतलवी जातहो किसी कविने कहाहे ॥

दुहा—वमोपकमोवाणीयो तालोलीजेतोम ॥
जोधीरजसूंकांमले लेवेकंठमरोम ॥ १ ॥
वाएयांथारीवाण कोइभीनरजाणेनही ॥
पांणीपीवेछाण सेंवूंधागटकाकरे ॥ २ ॥

इसवास्ते प्रतिज्ञा करो तो राजाके सांमने द्रव्य धराके फेर राजा भोज च्यार टकेमें पेस करुंगा सचहे ॥ मुतलवरी मनुहारने तजी मावे

चूरमो विन मुतलब मनुहार रावन पावे राजिया १ अपणी गरजसें हिस्से मुजब कोटि द्रव्य मुकर्रकर उस एवालके संग राजाके सभामें हाजर हुये उसकूं देख राजा सिंहासणसें उतरके खडा होगया मुत्सद्दी बडे आश्चर्यवंत हुये दोनोनें दिलमें समझ लिया लेकिन् मुत्सद्दीयोकूं कहा क्यों तुम आयेहो मुत्सद्दीवोले गरीबपरवर ये जंगली केताहे च्यार टकोका राज भोजमेंहूं राजाने कहा किसतरे कहणा चाहीये तब जंगली बोला कोड सोनये लाउं तब बतलाउंगा उन सबोने हिस्से मुजब हाजर कीया तब वो बात विवरेवार कह सुणाइ तब राजा बोला सचा च्यार टकेका राजा भोज तूं हे उस एवालका कुरब बढाकर शहरमें वसणेका हुकम दीया उर राजा उन मुत्सद्दीयोकों फटकारके बोला अरे मूर्खो तुमें कुछ होसभीहे मेरे क्रोडो रुपये आवंदानी होकर किसीभी तरेका इंतिजाम नही ये इतनीसी आवंदानीपरभी केसा इंतिजाम बांधरखाहे इसीतरे मेरे रासतका बंदोबस्त करो खैर उस मुजबही कीयागया सब तरेसे राजाकी कीर्ति भइ एसा कमाके खरच करणा चाहीये १० गाया आणा गाथामें

जाणा मतलब पहले पहरमे धर्मकृत्य करके व्याख्यान सुणके दांन देकर फेर भोजनकर डुकानपर जाणा गुमास्तोके कांमकी तदारक करणी खरच आवंदका आंकडा साफरखवाणा उधार किसी साहूकारमें होय तो वादे मुजब मंगा लेणा नोकरोको नोकरी मुजब इनाम इकराम आंकडा बधणेपर देणा फेर गाया ढले जब घरपर आणा जो मालक अपणे घरका कांम नही देखता सिरप गुमास्तोके भरोसे छोड देताहे उसका घर विगड जाताहे केइ हमने विगडे देखेहे ११ मीठाई खानेका विसन पडजाय तो हलवाईके घरपर जाके खाणा मतलब जब हलवाईके घरपर प्रांणी जाताहे तो किसीभी तरे उसकी मिठाइ खाणेकूं जी नही चाहता किसीमें तो हजारों मखीयां मरी हुइ किसीमें मकोडे उर चिमटीयां मरी हुइ किसीमें ऊंदर गिलेरी आदि अनेक जीवोके रसोकूं छाणकूणके मिठाइ वणाताहे न पाणीकू छाणताहे नवरतणोकी शुद्धिहे पोंवणे उर छा- णणेके वस्त्रभी महाअशुद्ध उर मलीन रहतेहे उर ते छोकरोके दिसा फराकतके हाथभी ज्यों त्यों योंही लगा देतीहे छोकरे योही मृतनेहे

उसी पात्रसें जल पीलेतेहे उसीसें मिठाइ काम देतीहे तो एसे अपणी आंखोंसे देखता हुवा दया शौच धर्मी वो मिठाइ बजारु केसें खासक्ताहे जिसके घरमें ये सब शुद्धियां होय दया धर्मवाले हलवाई होय तो निजरसे तपासके मिठाइ ले आणेमें कोइ हरजाना नही दक्षिण पूर्व पंजाबमें प्राये हलवाइका काम करणेवाले ब्राह्मनादिकभी मांस भक्षीहे इसवास्ते उचितहे की इच्छा होय तो विवेकीके हाथसें बणवाके अपणे घरमेंही वापरणा ऋतुपथ्य उर अपणी तासीरकों पहचानकर इहां जो मिठाइ हलवाईके घरपर जाके खाणा कहाहे सो सिरफ जाके देखणेकाही सूचना करताहे विवेकी पुरुषोंकों चाहीये साधर्मीटाल उर स्वजन मित्रवर्ग दयाधर्मी टालके दूसरेके घर विनाकारण विशेष भोजनभी नहि करे १२ दरिद्र अवस्था आ जाय तो खाटु उर मकराणेके बीचकी जमीन खोदनी सो अबमें तुझकों बतात्ताहूं देखके चलणा इस सिक्षाके माफक चलणा तेरे घरमें जहां खाटुका पत्थर उर मकराणेका पत्थरका जमा हुवा चोकहे उहां दसलक्षकी मोहरे गमीहे सो निकाल लेकर रुजगारकर

कारण भर्तृहर राजा लिखताहे ॥ श्लोक ॥
यस्यास्तिवित्तं सनरःकुलीनः सपंडितः सश्रुतः गु-
नगुणज्ञः सएववक्तासचदर्शनीयः सर्वेगुणाःकांच-
नमाश्रयंते १ मायकहे मेरापूतसपूता बहन
कहेमेराभइया घरकीजोरूलेलवलइया सबसे
बमारुपइया १ श्लोकका अर्थ जिसकेपास धन
हे वो अदमी कुलवान कहलाताहे वोही पंडित
हे वोही गुणोका जांणनेवालाहे वही कहणे-
वाला वही देखणे योग्यहे इसवास्ते सब गुण
कांचनके आश्रयमें रहतेहे १
दुहा—कंताजोभ्रनरारवीये जाकोनांमगरत्थ ॥
जिणदेख्यांनृपतिल्गि तरुणीपसारेहत्थ१
इसवास्ते हे विवेकी गृहस्थ धर्ममें धनकीही
प्रधानताहे ये जन्मका सुधारणा तो प्रत्यक्षही
दिखताहे लेकिन विवेकी इस लक्ष्मीसें परभव-
भी सुधार सकताहे जेसें सुपात्रोकी भक्ति अन्न
वस्त्र पात्र उंपधि विद्याशाला दांनशाला पुस्त-
कालय पिंजरापोल जिन मंदिर पूजा साधर्मी
वात्सल्य रथयात्रा तीर्थयात्रादि अनेक सुकृतार्थ
धनसें संचकर चक्रवर्त्ति स्वर्ग तीर्थंकरादिक
पदका आयु बांधताहे एसी शिक्षा देकर विदा
किया उस शिक्षामें चलता हुवा वो मुग्ध सब

तरे सुखी हुवा व्याजभी देशकाल देखकर एसा लेणा सो दुनियामें लोक निंदा न करे अब देणादारकूं चाहीये सो मुद्दतकी अंदरही रकम पीछा देणा चाहीये तब तो दुनियामें वो प्रतिष्ठावंत कहलाताहे जिस जुवानका करार निभासको नही एसी जुवान मूंमेसें मत निकालो बाप उर बात एकही होताहे प्रतक्षपणे देखतेहे बडे २ अंगरेज जो कुछ मूंमेसें बात निकालतेहे तो वणे जहांतक निर्वाहही करतेहे रामचंद्रके पास जब बिभीषण आया तब रामने कहा आउ लंकेश तदपीछे लक्ष्मणके शक्तिबाण लगा मृत्युके मुख पडा लक्ष्मणकूं देख राम कहणेलगा हे सुग्रीव लक्ष्मणके मरणेसें मेरा प्राण निश्चे जायगा जिसका मुझे कुछ अपसोस नही अयोध्यासें निकलणेका अपसोस नही ज्यांनकीके जाणेका एसा अपसोस मुझे नही काया नासमांनहे यह तो एकना एकदिन जायहीगी बेलासक जावे लेकिन् बडा धोखा तो यहहे की बिभीषणकों जो मेने लंकपति कहा सो निभाये विगर मरजाऊंगा बडा अपसोस तो यहहे धन्यहे एसे पुरुषोत्तमकों सो इतनी आपदा पडनेपरभी अपणी जुबान निभाणेकेही

विचारमेंही रहे आखिरको निभायही दिया पुरषोंकों चाहीये अपणी करी प्रतिज्ञा एसी निभावे किसी राजपूतके घरके अंदर नीमका दरख तथा उसके नीचे वो राजपूत जब बेठता तब एक कउआ उसपर बीटकर देता वो धनुषबांण मंगाता वो काग देखतेही उडजाता एक दिन उसने अपणी कन्यासें कहा में जब समसेरलाकहूं तब तीरकबाण लादेणा इसीवजे कउअेनें बीटकी संकेत मुजब राजपूत बोला समसेरला कउअेनें विचारा समसेरसें तो में मरता नही निंचित बेठारहा जो बांणलगा त्योंही राजपूत बोला अरे दुष्ट अब तो मरा तब फरते २ कउआ बोला ॥

दुहा—वचनपलट्टासोमरा कागामरामजाण ॥
नांमलियासमसेरका लाईतीरकबाण॥१॥

सो जुबान कहके पलटणेवाला मराहुआही है जब अपणेसे पार नही परै तो एसा बोजा उठाणाही नही कदास कोइ कारण योगसें रुपे वादेपर नही पोहचसके तो किस्त करकेभी करजा उतार देणा एसा नही करे तो फेर पत जाते रहवीहै जहातक बणे करजदार होणाही नही कारण सुणणा आवाज देणा

व्याज फेर नुकता उर नमाज नीतिमें लिखाहे धर्मका काम १ करजा उतारणा २ कन्यादान ३ धन जमा करणा ४ उर दुस्मनका उच्छेद ५ अग्निका उपद्रव ६ उर रोग ७ इतने काम बणे जहांतक जलदी करणा तेलका मालिस १ बेटीका मरण उर ऋणका उतारणा ये वात पहली दुख देकर पीछे सुखदाई होतीहे जो अपणी पेट जराईभी नही बणसकती होय जिस्सें करज नही चुकासके तो साहूकारकी नोकरी कर अदाकर देणा चाहीये जो एसा नही करसकेगा तो आवते भवमें ऊंठ बलद पाडा गधा खच्चर घोडा वगेरह होकर बोझ उठाके २ भी करजा तो देणाही होगा जो देणे समर्थ नही होय एसोसें करज मांगणाभी नहि चाहीये नाहक संक्लेस पर जीवकूं पीडारूप पापकी वढोतरी होतीहे नादारकूं कहणा तूं नही देसकताहे इसवास्ते ये मेरा द्रव्य धर्मखाते मेंनें कीया देशकेगा तो जरूर धर्मादिकार्यमें लगादूंगा जो धन होये वादभी करजदारकूं नही चुकाताहे तो वो जीव आगले जन्ममें उसके संग वेर विरोध युद्धादिकमें हारतेइ रहताहे इस भवमें लडाइ वैर विरोधकीभी वढो-

रीही होतीहै व्यापार करतां धननही उधारमे आवे तो अपणें मनमें धर्मखाते करणा इसवास्ते विवेकीकूं चाहीये सो साधर्मीके साथही व्यापार करणा म्लेच्छ अनार्योंकी उधार नही आवे तो धर्मखाते गिणनेका रस्ता जैनागममे नहीहै इसवास्ते उसपरसें ममता उतारकर निकेवल मनसें त्यागही करणा ओर त्याग कीया पीछे कदास देदेवे तो धर्मवास्ते श्रीसंघकूं सोंप देणा तैसेंइ द्रव्य अथवा शस्त्र आयुध वगेरे कोइ चीज खोइ जाय तो ओर पीछा आणेका संभव नही होवे तो उसकाभी त्याग करणा वो सिराय देणा कदास जो नवो सरावे ओर चुराणेवाला चोर अथवा दुसरा जिसकूं मिले सो उस चीजसें पापकर्म करे तो गृहस्थभी पापका भागी होय त्यागसे न होय इतना लाभहै विवेकी पुरष पापके अनुबंधकारी अनादिरूप शरीर घर कुटंब द्रव्य शस्त्र वगेरे चीजोका अंतमें त्याग करणा नही करे तो उन चीजोसें होती हुइ पापक्रियासें भवोभव बुरे फल भोगणे पडे इस बातकी साक्षी श्रीभगवती सूत्रमेंहै पांचमें शतक छट्ठे उद्देशेमें सिकारीने हिरण मारा तब जिस धनुषसें १ बांणसे २ धनुषकी

मोरसें ३ तथा त्रालोमीसे ४ इन सबोके मूल जीवोकूं जिन जीवोका मुजलसें ये धनुपादिक वणेहे उनो जीवोकूं पाप आनेका दरवाजा जो आश्रव तत्व जिनमेंसें पचीस क्रियाके अंदरसे पांच क्रिया लगे एसा लिखाहे जैनधर्ममें दयाकी वहोत वारीकीका विचारहे जैनधर्मका मर्म इसीको कहतेहे ॥

दुहा—मर्मयहीजिनधर्मका पापआलोचेजाय ॥
मनसेंमिथ्यादुस्कृतं देतेदूरपलाय ॥ १ ॥

देणा नही चूकाणेसे परभवमें देणा पडताहे जिसपर दृष्टांत वलद पाडा उंर हाथीका एक वर्धमाननगरमें एक जिनदत्तनामका सेठ जिसके पास वहोत धन था उसने दो खातेकी वही बनाई एक तो इसभवमें पीछा लेकर देवे जिसकी १ दुसरी परभवकी २ उधार लेणेवाला देणा चाहे तव तो उसमें लिखे १ नही देणा चाहे तो परभव खाते लीखे २ एसी बात सुणके एक राजपूत उंर एक सुनार दोनो मित्र थे आपसमें विचार करणेलगे ये मूर्ख साहूकारके धन वहोत उछलताहे चलो अपणेभी ले आवें एसा विचार सेठकेपास आये सेठसें प्रणाम करके बेठ गये तब सेठ बोला में नो-

जनादि कृत्य कर आताहुं तुम जितने बेठो. सेठ तो नोजन करणे गया उस वखत सेठका पाणी लाणेवाला बेल उर चूनेके घरट पीसणेवाला नेसेकूंनी खानपानकी छुट्टी मिली कारण श्रावककूं चाहीये सो अपणे इलाकेमें जो जांनवर होवे उसके चारे पाणीकी खबर लिये विगर आप नोजन करे तो जीवघातका अतीचार लगे उस वखत वो बेल उर पाम्ा आपसमें वार्ता करणेलगे बेल बोला हे मित्र अब हम तो परभूं मरजांयगे रुपे सो मेंनें देवदत्तनांमके ब्राह्मणपणेमें परनवके खातेकरके लियेथे मेरे हाथसें उसके वहीमे लिखहे वो रुपे व्याजसमेत परशुतक पोहच जांयगे पाणी नर २ के नरती कर दिया तब नेसा बोला मित्र मेरा छुटकारा होणा मुसकिलहे कारण में वणिये महेश्वरीकेनवमें इस सेठ उसवालसे हजार रुपे इसनवके खाते लायाथा सो मेंने एक मोदीकों दियेथे उर मोदीने हजारका माल राजाके मोदीखानेमें तोल दिया राजाने पीछा दीया नही इसवास्ते में तो मरके पाम्ा हुवा मोदी मरके राजाके पाट हाथी हुआहे राजाके मनचंगे माल खाताहे वो सब व्याजमें जाताहे में

सेठके व्याजमें चूना पीसताहूं लेकिन् रुपया उतरणा मुसकिल होगया तब बेलने पूछा कोइ उपायभीहे भैंसा बोला अगर हजार रुपेकी सरत लगाकर राजाके हाथीसें मुझे लडावे तो जरूर मेरे सामने हाथी भाग जायगा में तो सेठकूं समझा नही सकता जो कोइ सेठकूं समझा देवे तो में ऋणमुक्त होकर मरजाऊंगा ये बात राजपूत सकुनरुत शास्त्रका जांणका रथा सो सब समझगया के इन दोनो जीवोकों जातीस्मरण ज्ञांन होगयाहे उसने सुनारसें कही मित्र देणा तो परभवमेंभी छूटता नही सिरपर बोझा उठाके परभव विगाडणाहे इस तरेका हालहे सुनारने ये बात मानी नही इत-नेमें सेठ आया उर बोला लोभाइउं जिस कांम आये हो वो कार्य कहो तब राजपूत निसल्य पणेसें सब बात कह सुणाइ कारण राजपूत प्राये जो खानदानी होतेहे सो आर्य होतेहे किसीकी संगत उर सीखसें वेलासक कठोर उर क्रूर कर्म करे तभी तो जैनधर्ममें राजन्य कुलको सबसें उत्तम लिखाहे प्रतक्ष फल देख-कर एसा अज्ञानी नीच विरला होगा जो द-यावाली करे सेठ इस बातकी परिक्षा करणेकं

तीन दिन विताया कहे मुजब वैद्य मरगया तब सेठ उस राजपूतकूं संग लेकर राजाकेपास जाकर नजर नोछावरकर राजाके हुकम मुजब वैठगया राजाने कुशलक्षेमकी वात पूछीउर बोला सेठ बहोत दिनोंसें आये कुछकार्य होयसो कहो तब सेठ बोला गरीब परवर नोकरी करके माछककी वंदगी वजाकर हक्क खाणेवाला मेरा चूना पीसणेवाला जेसा भेसा ताकतदारहे जेसा हजुरका माल मलीदा चरणेवाला वृथा पुष्ट पाट हाथीमें ताकत नही अगर लस्तके मुकाबलेमें दोनोंकों दंगलमे भिडाये जाय तो आपका हस्ती भाग छूटे राजा हसकर बोला क्या सेठ भंग खाईहे ये वात किसीके समझमें कब आसकतीहे सेठ बोला न मांने तो हाथो-तालीका परचा देख लीजीये तब राजा बोला कुछ सरत करोगे सेठ बोला हजार रुपेकी मुकरर ठहराकर दोनोकों लाये भेसेंकूं देखतेही हाथी भाग गया तीन वखत लाये लेकिन हाथी तो तीनही वेर भागगया सेठकूं हजार रुपे दियेगये उर पाभा मरगया राजा बोला हाथीसें धेस्रत खाके भेसा मरगया तब सेठने उस राजपूतसें सब वात राजासें कहलाइ राजा

बोला सचहे में इस मोदीके हजार रुपे मोदी खाणेके देणाथा देणा किसीतरे नही छुटता इस दृष्टांतमें वेल पाळेकी जो वात करणी लिखीहे सो पंचाख्यान शास्त्र मुजबही दृष्टांत जाणना उपदेशरूपहे वात करणी सर्वथा असंभवहे मुसलमीनोके धर्मकायदेमें व्याज खाणा मनालिखाहे लेकिन् हमारी समज मुजब तो हम प्रतक्ष प्रमांण देकर कहतेहे व्याज विगर संसारका विवहार ऊंर राज्यधर्म दोनोंनास होजाताहे जिस वातकी सबूतीकेवास्ते दृष्टांत लिखताहुं एक लक्ष्मीपूरनगरमें महा शूरवीर जयसिंह नाम राजाथा जिसके दो पुत्रथे वडे हुसियार एकका नाम रामसिंहथा १ दुसरेका नांम धोकलसिंहथा पिताने दोनोंकों दो पंडितोंकों पढनेकों सोंपा एक तो पारसी पढे मोलवीयोंकों ऊंर दुसरेकों शास्त्री पढे पंडितोंकों दोनों पढके इमतियान पास हुये रामसिंहकी बुद्धि हिन्दू धर्मपर ठहरी धोंकलकी कुरानपर ठहरी जब राजाने विचार कीया सचहे कोरे घडेमें अगर तेल डाला जावे तो तेल निकलती जावे तो ठीकरी चिकनास नही छोडतीहे घी डालनेसें घीका सो इस धोकलसिं-

हकें दिलमें जो कुरान मजहबका धर्मकायदा वेठगयाहे सो इह व्यापारनीति तथा राजनीतिकूं वाधा पोहचाकर सिरफ इतना जालमपणा जरूर यह जांनताहे जो हजरत महम्मदका हुकम नही माने उसकुफरकूं कतल करणा उसवास्ते एसी अक्कलवाला अपणी प्रजाकूं अपणी हितकारणी केसें वणाकर केसें वादस्याही करसकताहे कारण इस भरतक्षेत्रमें तरे २ के फिरकेहे उनोमें अपणी २ मताध्यक्षकी वात सब मांनतेहे सिद्धांत मत तो एकहे सो धौंकलसिंह जाणता नही एकदिन राजा धोकलसिंहकों बुलाके कहा तुमारे हाथ खरचकेवास्ते में ७ हजार रुपेका आवंदका खरचा निकालदेताहूं ये लाख रुपे तुमलो उसके आठ आनीके व्याजसें ७व हजार सालीयाना होगा तव मनमें तो कसमसाया लेकिन् वापकी वे अदवी नहि करणी तव बोला हजूर कल हजूरकी खिदमतमें उस्ताद मौलवीसाहबकूं भेजताहूं जो फरमावे सो उनहीसें फरमा देवे राजा समझ गया लेकिन् वोला अच्छा दुसरे दिन मोल वीसाहव आकर कहणेलगे गरीव परवर आपने ये वने आजावकी वात माहाराज

कुमारकों क्या फरमाई सूतका खाणा हरामहे एसाही हेतो हजूर दश हजार सालीआनेका गांम माहाराज कुमारकों देदिये जावे तव हजूरनें विचारा इस मोलवी तथा धोंकलसिंहकूं अकल आजावे एसा विचारके राजा बोला मोलवीसाहब में दोनों लरूकोंकों मुलक वगेरे आधा २ देकर तीर्थोंकूं जाताहूं देखताहूं च्यार वरसमे रासतका कांम केसें चलातेहे एसा कहकर सब चीजे आधो आध वांटदिया ओर कहा देखें अपणे २ पंन्डित ओर पढे हुये शास्त्रोंसें केसीक रासत वधातेहो रासत सोंपके राजा तीर्थोंकूं गया अब दोनुं भाई अपणे २ पंन्डितोंद्वारा अपणे २ राज्यका काम चलाया उस वखत मोलवीसाहवके कहनेसें एसा ढंढोरा शहरमें धोकलसिंहने फिरवाया कोइ जो व्याज खायगा सो सजा पायगा तव साहूकारोनें विचार कीया इस रासतमें रहकर अब अपणे क्या करसकतेहें एसा विचार सब एकठे होकर निकलकर रामसिंहकें राजमें जा वसे रामसिंहने वहोत खातर करके वसाये साहूकारोनें सब हकीगत कह सुणाइ तब रामसिंहने अपणे सिपाहीयोसें कहदीया जो कोइ आदमी उस

रासतसें आवे उसकूं अपणे राज्यमे खातरक-
रके वसाउं पहलेही वर्षमें जव रुपे उधार
देणेवाले साहूकार नही मिले तव तो कर्षाण
लोक जमीन नही वोयसके तव तो सरकारमें
हासल वहोत कम वेठा दशलाखकी आवंद
साहूकारोके माल ताल जगात वगेरेके वेठतेथे
जिसमेंसे कुलम पैदास आठ लाखकी हुइ
खरच सिपाइयोकी तनखा घोमे हाथी वगे
रोका सव लगणेपर उधार कोइ देणेवाला नही
रहणेसें असवाव जो विका सो सव रामसिं-
हने लीया यूंकरते चोथे वर्षमें सव शस्त्र हाथी
घोमे विकणेपर सव रइयत नागके रामसिंहके
तावे हुइ लाचार मोलवीसाहव ओर धोंकलसिंह
अपणी जमीन वेची सोभी रामसिंहने खरीद
करली मोलवीसाहव मक्काकूं तस्रीफ लेगये
तदपीछे धोंक्लसीहकूं अपणेपास रखा राजा
तीर्थोंसे पीछे आकर देखा तो रामसिंह चोगुणी
समृद्धिमें राज्यकर रहाहे धोकलसिंह लजरवा-
णा हुआ तव राजाने कहा वेटा ये क्या हुवा
तव धोकलसिंह बोला हे पूज्य मोलवीसाहिब-
के कहणेमाफक कुरानसरीफके कायदेपर चला
तोभी खुदाने मेरे तरफ कुछभी खयाल नही

न्नया वजीर जब मुजरे आया तब वजीरकूं सब बात कह सुणाई तब वजीर श्रीमाल सामतसिंह उंसवालनें विचारा वादशाहकी अक्कल मोलवीयोनें निकाल माली है इनोकूं समजाणा चाहीये सो एसें कहूंगा तो मानेगें नही बलके गुस्सेंमे आकर कहेगें काफिर कुरान मौलवी उंर मेरा हुकम अदूली करता है एसा विचारके बोला जो हुकम धीरे २ सबको रुकसत करउंगा अपणे मकानपर आके एक खतरूमके वादशाहकों लिखाके इहां दिल्लीके वादशाहने सब फोज निकालदी है आप सुरताणहो वादशाहत लेणेकी दरकार होय तो जलदी फोज लेकर दिल्लीपर चढआइये नही तो एसी नाताकतरासतकों कोइभी छीनलेगा उस खतमें अपणा नाम पता नही लिखकर एक वेपारी रूमका जोकी व्यापार करणे देहली आयाथा उसका लिखदिया वादशाह रूमखत पढतेही चढाईकी वजीरने सब फोजोके अपसरोकों बुलाकर हुकम दिया अपणे २ शस्त्र लगाइके कामल तयार रक्खो चंददिनमें काम पडेगा अब रूमका वादशाह मजलोंमजल हन्दूस्थानके सीमपर आया सांम्पये सवारोने वादशाहकों

खवरदी रूमके बादशाहकी फोज आरहीहै तब बादशाह सब मोलवियोसें कही मोलवी बोले हजूर आप क्यों डरतेहे मके सरीफको जाताहोगा वह बात वजीरने सुणी तब अपणी सब फोजको हुकम दिया तुम सब चुपचाप इहांसे जाकर आठ कोसके फासलेपर जाव सो जब बुलाउं तभी हाजर होणा वजीरने बादशाहसें अरजकी गरीबपर हुकमकी तामील बजाइ गइ बादशाह बोला अच्छा कीया रूमका बादशाह पंजाबमें आ पहुंचा सवारोने खबरदी बादशाह मोलवीयोसें पूछा मोलवीयोने कहा ख्वाजेकी जारत जाताहोगा आखिरकों दिल्ली-के एक मजलपर डेरा दिया डेर दिल्लीके बादशाहकूं कहला भेजा तीन दिनमें किल्ला खाली करो या मोरचे मजबूत करो ये सुणतेही बादशाहके छक्के छूटगये डेर घबराकर मोलवी-योसे कहा जूलम हुवा अब क्या करणा तब मोलबी बोले गरीब परवर क्यों घबरातेहें हम अभी समझा देतेहे एसा कहकर बग्ने खलीतो में कुरान सरीफको डाल रूम सुरत्राणपास पहुंचे बादशाह कुरब कायदेसें बिठलाये कुसल क्षेम-की बात चीत पूछकर पूछा हजूरका आणा केसें

हुवा वादशाहने कहाके दिल्लीमें अमल दखल करणेकूं मोलवी कुरानका सिपारा दिखलाके बोले इस किताबमें अगर आपका हकीनहे तव तो वसलोट जाइये नही तो फरमावे आप किस कायदेसें आये वादशाह चुपरहा जब उन मोलवीयोने दो तीन वखत बोले बताइये आप किस कायदेसें आये तव वादशाह म्यानमेंसें खांडा निकालकर दिखलायाके हम इस कायदेसें आये तव तो मोलवीयोकूं कुछभी जवाब नही आया कुरान खलीतेमें नालके अपणे वादशाहपास पहुंचे वादशाहकूं कहा वस दिल्लीका किल्ला खाली करदीजीये जो काफर कुरानके वचनपर यकीन नही रखता उसका इमानगया आपकी रियासत गई दोरोटी उर सालण आप जहा रहेगे वहां खुदा देही देगा सुणतेही वादशाहके छक्के छूटगये खाणा उर पीणा भूलगया फिकरमे आकर फेर पूछा आप लोक फिर क्या करेंगे जो अब चैन करतेहे मोलवी बोले हम लोक इनके पास रहजायगें जो नही रखेगा तो आप क्या नही जांणतेहे मुसलमीनोके कायदाहीहे धन होणेसें अमीर भूखें फकीर मरे तो पीर जेसी आ वीतेगी

खुदाकों जो करणा होगा सो करेगा इस वजे राजाने जब बात कही तब धोकलसिंहने पूछा फेर हजूर रियासत गई या रही राजा बोला तब मोलवीयोकी बात सुणके बादस्याह बड़ा फिकर बंध होकर वजीरकूं बुलाया उर आंखोसें पाणी टपकाता हुवा मोलवीयोकी हकीगत कह सुणाई तब वजीर बोला हजूर जापनाह कुरान सरीफका कायदा राजकाजमें क्या दखल करसकताहे ये राजनीति शास्त्रही जुदाहे जिसमें साम दाम दंड भेदादिक अनेक छल बल उर बहादुरीहे खेर इन पढत मूर्खोंकी बातपर फेर ज्यादे ख्याल मत करणा बादस्याहने तोबा खाइ तब वजीर बादस्याहकूं दिलासा देकर कहा हजूर दिलमें धीरज रखीये जो कुछ सिपाहहे उसहीसे लड़ेंगें क्या आपने नही सुणाहे रणजीतसिंह सिख पांच घोड़ेका सूबेदारथा सो अपणी बहादुरीसें पंजाब हत्थेका बादस्याह होगयाथा उसीवखत रूस सूलतानकूं लिखभेजा आप तीनदिन ठहरें फेर मुकाबला करेंगें एक सवार फोजके तरफ भेजा आठ पहरमें फ़ोज आकर रूमको घेर लिया एसा हाल देख रूमनें कहला

नेजा में कुछ लक्षणें नही आयाहुं जब मेनें एसी खबर पाई तो तुमकों नसियत देणें आयाहुं वजीरनें दोनों वादशाहोंकी मुलाखात यानें संधि कराई दिल्लीके वादशाहसें आणेजाणेका खर्च दिल्लाकर रूमकों रवाणें कीया इतनी बात सुणकर धोंकलसिंह जैन पंडितोसें धर्मशास्त्र राज्यनीति दोनों सीखके इस लोकमें ओर परलोकमें सुखी हुवा विवेकी आदमीके अगर जो नुकशान धनका होजाय तो उदास नही होणा चाहीये उद्यममें मजबूत रहणा कारणके निश्चय सत रखणेवाला ओर चतुर परिश्रम करणेमे तकलीप सहणेवाला दावसे उद्यमकरणेवाले पुरषके लक्ष्मी कहांतक नागके जायगी जेसें आजदिन अंगेरेजोके प्रत्यक्ष प्रमाणसे लंदन राजधानी तथा अमेरीका साक्षात् सोनें किसी लंका वणरहीहे जहांसे वहोत धनकी आवंद होय उस जगे थोमाबहोत नुकशानभी होय तो सहणाही पमताहे बीज जाट करबणी वोता हे अनाज मणो वध होताहे लेकिन् वो वोया हुवा दाणा तो असली कभी नही मिलताहे संपदा ओर तकलीप दोनोंमें सम परिणाम रक्खे वो गृहस्थ धन्यहे

संपदा स्थिर नही रहे तो विपदा क्या थिर रहतीहे जो लक्ष्मीकूं श्रीकृष्ण प्रेमसें गोदीमें बेठालाथा एसी जो लक्ष्मी समुद्रके ओर कृष्णाके ही जब नही रही तो उन्माद बेकूबोके पास कब रहसकतीहे पूर्वभवके पापके उदयसें जो कभी आगे जेसी भाग्यवानी नहि आवे तोभी मनमें धीरज रखवणी क्योंके आपदारूप समुद्रमें डूबतेकूं धीरज हेसो जिहाजहे सब दिन एक सरीखे नहि रहते इस जगतमें सदा सुखी कोणहे लक्ष्मी जब जगतसेठजीकेही स्थिर नही रही तो ओर किसके रहेगी प्रेमभी स्थिर कब रहताहे मोतके वश कोण नहीहे ओर विषयाशक्त कोण नहीहे इसवास्ते विपदमें संतोष रखना जो कभी ज्यादा फिकर करे तो इस भवमें रोगोत्पत्ती परभवमें बुरीगती होतीहे तरे २ के उपाय करणेसेंभी जब अपणी तकदीर नही खुले तो किसी श्रीमंत भाग्यवानका सहारा लेणा कारणके लक्कडके सहारेसें लोहभी पाणीमें तिरणे लगताहे एक भाग्यवानके सधर मुनीमथा वो जब मरगया तो उसका बेटा निर्धन होगया तब सेठ उसकूं नोकरी रक्खे नही लेकिन् कभी २ छुटकर काम करणा सोपें

लेकिन् निर्धन जांणकर सेठ उस्सें ज्यादा बात करे नही तब उसने एकदिन दो च्यार आदम्योंकों गवा रखकर सेठके छाने सेठकी वहीमें अपणे नांमे दो हजार रुपे लिखदीये एकदिन सेठने अपणी वही देखी तब उस मुनीमसे रुपे मागे तब मूनीमके बेटेने कहा कुछ रुपे आप ऊपर सराकरोतो कमाके दूंगा सेठ अपणी अगली रकम अदा करणेकों दो हजार उंर दीये उस रुपेसें उस अकलवंदने रुजगारकर बहोत रुपे कमाकर सेठके व्याज समेत रुपे देणे लगा तब सेठ बोला दो हजार आगूंके लाउं तब गवादारोकूं बुलाके सब हकीगत कह सुणाइ सेठ उसकूं बमा अकलवंत समजणेलगा मुनीमजी सेठ वणगया दरखतके आसरे वेल-वढजातीहे एसा बमोका आसरा आपत्कालमें लेणा चाहीये नीच आदमीके लक्ष्मी आ जा-णेपर इतनी वातें उस [illegible] संगमे निर्दइपणा १ अहंकार [illegible] लोभ [illegible]

पुरप सो आपदा आणेसें दीन नही होय लक्ष्मी संपदासे गर्व न करे पराया दुख देख दुखी होवे आपमें संकट पमे तो सीदावे नही उस पुरपकूं नमस्कारहे समर्थावान होकर पराया पुरपोंका कीया हुवा उपद्रवसहे धनवान होकर गर्व नही करे पंमित होकर विनयवान होय यह तीनों पुरप पृथ्वीमें अलंकार समानहे विवेकी वहीहे जो कोइके संग क्लेश नही करे तथापि बमे अदम्योसें तो भूलचूककेभी कभी क्लेश नही करणा कहाहे जिसकूं खासीका विकार होय उसकूं चोरी नही करणा जिसकूं बहोत नींद आती होय वो जारी नही करणा जिसकूं रोगहे वो मीठे आदि रसऊपर आसक्त नही होणा जुवान वसररवणा पथ्यमें रहणेसें रोग मिटही जाताहे धनवान होकर किसीसें वैरविरोध नही करणा भंमारी राजा गुरु तपस्वी पक्षपाती ताकतवर क्रूर उर नीच इनोंके संग वाद विवाद नही करणा कभी किसी बमे आदमीसें धन जमीनादिकवास्ते असरचा पमगया होय तो विनय बुद्धिसें काम निकाल लेणा चाहीये चाणाक्यनीति तथा पंचाख्यानमे लिखाहे उत्तम पुरुपकूं आजीजीसे

वस करणा सूरवीरकूं बलसें वस करणा नीच पुरषकूं अल्प द्रव्यादिक देणेसें वस करणा ंर अपणे बराबरीवालेकों अपणी ताकत देखाकर वस करणा धनके गरजीकूं तथा धनवानकूं विशेषकर गम रखणा चाहीये क्योंके क्षमा रखणेसें धनकी वढोतरी ंर रक्षा होतीहे ब्राह्मणका बल होम मंत्र राजाका बल नीतिशास्त्र अनाथ गरीब प्रजाका बल राजा ंर वणिक् पुत्रका बल क्षमाहे मीठा वचन ंर क्षमा ये दोनोंही धनका मूलहे धन शरीर योवनअवस्था ये तीन कामनाका कारणहे दांन दया ंर इंद्री-योका जीतणा ये तीन धर्मका कारणहे ंर सर्वसंग परित्याग करणा मोक्षका कारणहे जुवानका क्लेश सब ठिकाणे वर्जणा दारिद्र संबाद ग्रंथमें कहाहे लक्ष्मीजी इंद्रकूं कहतीहे हे इंद्र जिस जगे गुणवांन बडे आदमीकी पूजा होतीहे न्यायसें धन पेदा करतेहें ंर जराभी वचनसें क्लेश नही करता उस जगे में रहतीहूं तब दारिद्र कहताहे हे इंद्र जो हमेशां जुआ खेलतेहे स्वजनकेसाथ द्वेष रखतेहे कि-मीयागरीसें धनकी चाह रखतेहे सदा आलसु तथा पेदास तथा खरचकी तरफ खयाल नही

रखणेवाले एसे आदम्योंके पास में हमेसां रह-
ताहुं विवेकी आदमी उधारकी उगराइ पण
कोमलता राखकर करणा दुनियामें निंदा नही
होय जेसे करणा एसा नही करे तो देणदार-
की चतुराइ लाज वगेरेका लोप होय उस्सें
अपणा धर्म तथा धनकी प्रतिष्ठाकी नुकसाणी
होणा संभवहे इसवास्ते लंघन वगेरे न करणा
नही कराणा लंघन करणे उर कराणेवाला अं
गरेजी राज्यके कायदेसें सजावार हे जो कि-
सीकों भोजनादिकमे अंतराय देगा वो जीव
कृष्णाके कुमर ढंढण ऋषिकी तरे भोजनकी
अंतराय पावे सर्व पुरषोकूं तथा वणियेकूं चा-
हिये सो संप तथा च्यारजनोकी सलाहसें
काम करणा चाहीये सब काम साधनके साम
दाम दंड भेद एसे च्यार भेदहे जिसमेंभी सा-
मसे सर्वत्र कार्यसिद्धीहे वाकी उपाय सामके
जोमेंके नहीहे करडा उर करूर अदमीभी
मीठी जुवानसें वस होजाताहे लेणदेणमें कूलमें
जो कभी जगडा पडजावे तो निकम्मा विवाद
नही करणा तब पांच पंच चतुर लोकीकमें
प्रतिष्ठावंत जो कहे सो मंजूर करणा उन पं-
चोका कहा न माने तो जगडा मिटे नही अं-

बमा उपगारका काम होय अथवा कोइ करणे योग्यही इन्साफ होय तो पंचायती करणी चाहिये तेसें किसी जीवके संग मगरूरीभी नहि करणा धनप्राप्ति कर्माधीनहे इसवास्ते निकम्मा अभिमान करणेसें क्या फायदा दोनोंभवमें दुखदाईहे चिंतेपर तो पमे घर दुसरेका धन देखके कभी ईर्षा नहि करणा धानका रुजगारमें काल विचारें पसारीके रुजगारमें रोगकी बढोतरी चाहे इत्यादिक दिलमें बुरे विचार न करे काल स्वभावसें पमजाय तो अथवा किसीमें संकट पमजावे तो अछा हुवा एसी दिलमें खुसी नहि करणा कारण मन मलीन होणा पापका मूलहे जेसें दो वणिक् मित्रथे एक तो ढूंढक साधोंका परम भक्तथा अंर दुसरा सात विसनोंका सेवणेवाला वैस्या लंपटथा एकदिन सांझकूं वैस्यागामी बोला चलो मित्र तुमकों नाच रंग नसा पत्ता एसविलास करालावे दुसरा बोला चल ढूंढक साधोंके सो मूं बांधकर सबूजी कांबल बिछाकर रातका पोसा करेंगें साधोंकी जोम गावेंगे फजरमें दया पालेंगें सो कमाइ कजाइ कुछ नहि करणा पमेगा साधर्मीलोग जो अनसन मरणांत समयका पुन्यखाते

ीया एसा द्रव्य जो निरवद्य उसकी मिठाइ
जींये सीधा ले आवेगा सो बेठके खालेंगे
ाधोंके उपदेशसें बमे लाज होगा स्नान करणे-
ा मंदिर करवाणेका मूर्त्तिपूजामें एकांत पापहे
सवास्ते इस्न बातका जावज्जीव त्याग साध
राय देगा अपणेको धर्मी जाणके बमे आदमी
ो ढूंढक धर्मीहे सो धनकी मदत देंगे खेर वो
ाणिकू तो वेस्याके गया उंर ढूंढक पंथी ऋषि-
ीके थानक गया समयसार नाटक ग्रंथमे
लेखाहे दया दान उंर पूजादिक विषय कषा-
ादिक इन दोनोंका एक खेत्रहे इन दोनोंके
नन परणाम आश्री दोनोंकी करणी अंतमे ए-
कसीहे कारण ज्ञानीको नोग सोतो निर्जराका
हेतुहे अज्ञानीको नोग सोतो बंध फल देतुहे
ये अचरिजकी बात हिये नहि आवे पूछे कोइ-
यक शिष्य गुरु समझावे १ अब वो वेस्याके
गया उसनें मनमें विचारा धिक् मेरी बुद्धि सो
में सब जन्म इनही कुकर्मोंके करणेमें खोया
धन्यहे वो सो धर्म करणीके वास्ते गयाहे ए-
सा विरक्त नावना नावता हुवा वेस्याके संग
रातनर रहकर प्रनातसमें निकला रस्तेमें संवे-
गधर्मी स्वेतांबरी साधू मिले जिनके मुखसें

धर्मोपदेश सुण सम्यक्तमूल बारे व्रत लेकर परमेश्वरकी मूर्तिकूं साक्षात परमेश्वररूप मानकर सत्तर भेदादिक पूजा करता हुवा समाधि मरणसें मरा अब इसके परिणाम शुद्ध होनेकरके थोडे भवोमे मुक्ती जायगा एसा अनुमान होताहे और दुसरा जो थानक गया उसने विचारा मे मूर्ख हकनाहक यहां आया उसके संग जाता तो भोग विलास नाच रंगकी मोज लूंटता इत्यादि अशुभ ध्यान धरता हुवा ढूंढक वचनोकी द्रव्य दया पालन करता हुवा संसार बहुल उपार्जन कीया इसवास्ते मति जेसी गतीहे लेकिन एसें अशुभ व्यवहारमें विरलेकों एसी भावना आतीहे व्याजकी रकम दुणी अनाजकी वृद्धी तिगुणी किरियाणामें जितना मुनाफा मिले व्यापार सबमें एसी मुजब जितना मिले उतनाही लेणा तेसेंइ किसीकी गिरी हुइ चीज पराइ समजकर उठाणी नही ममइ वगेरे मुलकमें बहोतसे आदमी इस पराइ चीज उठाणेके फंदेमें ठगोके हाथ ठगाये जातेहे खोटा वट खोटी तराजु रखणा नही ज्यादा लेणा नही धोखेसे कम देणा नही पुराणी भेल संभेल करणा नही इस वातोसें दोनुं भव विगम-

ताहे निरख तोमकर वे सुमार मोल वधायकर अयोग्यरीते व्याज वधायकर रुसपत देकर अथवा लेकर जूठा माम्रूल कर्षणोसें धोखा-बाजी करके खोटा नाकल घसाहुवा रुपया पेसा देकर कोइ खरीदता होय अथवा वेचता होय उसका नंग करके पराया ग्राहकोकूं नरमाय कर नमूना एक बतावे माल दुसरा देणा नही जहां लेणेवालेकूं वरावर दीखे नही एसी जगे कपमा वेचे नही लिखणे पढणेमें फेरफार करणा नही इत्यादिक ठगाइ धोखाबाजी कनी करणा नही इस नवमें सरकारसे दंम परनवमें स्वर्ग मोक्षके सुखमें हानी पहुंचतीहे कोइयक मूर्ख एसा कहतेहे कूम कपटविना कमाइ होती नही आजिविका तो कर्मके आधीनहे लेकिन व्यव-हार शुद्ध रख्खे तो उलटे ग्राहक ज्यादे आवे मुनाफा ज्यादा होय इसपर एक दृष्टांतहे एक सुंदरपुर नगरमें हेलानामका सेठ रहताथा उसके चार लमका हुवा उरजी उसके परिवार ज्यादाथा तब वो सेठ ग्राहक जब आता तब लमकोंकूं समजा रखाथा उसवास्ते गाली देणेके वहाणेसें त्रिपुष्कर पंचपुष्कर एसा शब्द कहकर खोटी तराजु वट वापरकर लोकोकूं ठगताथा

उसके छोटे लम्केकी बहू बहोत समझवारथी उसनें सुसरेकूं छाने समझाया तब सेठ बोला एसा नही करें तो पेट भराइ केसे होय बहू शास्त्रोंमे लिखाहे भूखा आदमी कोणसा पाप नहीं करे तब बहू बोली हे पूज्य हक्कमें बरकत हे धर्ममें चलणेवाले आदमीके सब काम सिद्ध होताहे इस बातकी परीक्षा करणी होय तो छ महीनेतक शुद्ध व्यवहार करके देखो इतनेमें परतीत आ जावे तो आगेभी एसा करते रहणा अब सेठ इस बातकी परिक्षा करणेकूं एसाही करणेलगा अनुक्रमें ग्राहक बहोत आणे लगा आजीविका अछी तरे चलणे लगी छर च्यार तोला सोना खरचबरच जाके बचा तब बेटेकी बहू इनकूं प्रतीति उपजाणेकूं बोली हे तात हक्कके कमाइमें कितनी बरकतहे न्यायोपार्जित धन अगर खोया जाय तोभी फेर पीछा आताहे एसा कहकर एक लोहपर सोना मंढाया उसका अपणे नामका कांठला बणाया उसकूं छ महीने पहरकर एक पाणीके द्रहमें नाल दीया उसकूं एक मछली निगलगइ धीवर उस मच्छीकूं पकमी उसके पेटमेसें कांठला निकला सेठका नांम लिखाहुवा देखकर

सेठकूं लायकर कांवला दीया एसा देखकर सेठकूं हक्क कमाणेपर आस्ताआई शुद्ध व्यापार करता हुवा सेठ बमा धनवांन होगया श्रावक धर्ममें अगवाणी जया उसका नांम लेणेसे सब विघ्न टलगया तब जिहाजोके चलावणेवालोकूं आदि ले सब मनुष्य हेलाहेलो नाम पुकारणे लगा विचारवानोकूं सब पापोंके काम छोमणा उसमेंजी अपणा मालक दोस्त अपणेपर विश्वास रखणेवाला देव गुरु वृद्ध तथा बालक इनोके संग वेर विरोध करणा नही इनोकी धरवट खाणी नही जमारवाणा उनोकी हत्या करणे जेसीहे जूठी गवा देणेवाला बहोत दिनोतक गुस्सा रखणेवाला विश्वासघाती उंर कीये उपगारीका उपगार लोपणेवाला कृतघ्न ए च्यारोही कर्मचंमाल उंर पांचमा जातिचंमाल जाणना विश्वासघातपर विसेमिराका दृष्टांत हे विसाला नगरीमें नंदराजा जानुमती राणी उनोका पुत्र विजयपाल उंर बहुश्रुतनामे मंत्रीथा नंदराजा जानुमती राणीपर आसक्त होणेसें सजामेंजी राणीकूं पासही रखताथा शास्त्रोमें लिखाहे राजाका वैद्य उंर गुरु तथा मंत्री ये लोक राजाकूं प्रसन्न रखणेकूं मीठी २

वातेंही बनाया करतेहे राजा रूस जायगा एसा समज सची बातभी नही कहतेहे तब राजाके शरीरका ओर धनका ओर धर्मका इनती नोका नास होताहे एसा नीतिशास्त्रका वचन हे इसवास्ते राजाकूं सच बातही कहणा चाहीये इसपर एक भट्ट पोराणिक कथा व्यासका दृष्टातहे एक रत्नपुर नगरमें रत्नसिंह राजा बमा मांसाहारमें रक्तथा लेकिन् ठाकुरकी पूजा विप्रोका दानेश्वरीथा उस राजाके कथा व्यासथा सो उस्सें राजा हमेसां प्रभातसमे कथा सुणता फेर दांन देकर ठाकुरकूं पूज तुलशी चरणामृत लेकर बाद भोजन करताथा उस व्यासका दो रुपे रोज ओर दो पक्का पेटीयाथा ओरभी सइकमों रुपे दान पुन्यमें पाताथा उस व्यासका लमका एक जती साधूके पास पढाथा सो बमा धर्मात्मा शांतशील षट्शास्त्री बमा पंमित तत्वज्ञथा पुराणादिक शास्त्रोंकों आजीविका शास्त्र समजताथा एकदिन व्यासजीकूं किसी ग्रामांतर जाणेका काम पमा तब राजासें रजा मांगके बोला हजूर मेरा लमका कथा बांचणे आया करेगा राजाने कहा अच्छा व्यासजी गये बाद इनका पुत्र पेट निर्वाहार्थ कथा

राजाके सामने हमेसां वांचे जो वाक्य यथार्थ आवे उसका विस्तार करे बाकी अवशेशकूं कविताका दखल मांनता हुवा वांचके सुणावे एकदिन कथामें मांस खाणेका निषेध अधिकार सात्वकी आया व्यास बोला यःपुमान् तिलतुप प्रमाणं पललभुंक्ते साधो अवन्यां कुंभीपाके पचति अर्थात् जो तिल तुलभर मांस खाताहे वो मनुष्य कुंभीपाक नर्क नीचेकी पृथ्वीमें पकताहे ये बात सुणके राजा चमक उठा एसी व्याख्या राजाने कभी बड़े व्याससें नही सुणीथी राजा बोला अहो व्यासजीके पुत्र एसा अर्थ आपने सुणाया ये अर्थ झूठाहे क्या व्यासजीसें आप ज्यादे पंडितहो अगर आपका कहा अर्थ सचाहे तब तो वेदमे जो यज्ञोमें नानातरेके पशुउकों होमके मांस खाणेकी विधी लिखीहे उस मुजब असंख्य जीवोका पुरोडासा अर्थात् यज्ञ कीये बाद बचा जो मांस सो तुमारा बगेरा तथा अनेक राजाउनें खाया उर खातेहें क्या वो सब नरक गये होंयगे वेदके वचन कभी झूठे होसक्तेहे जोकी भगवान ब्रह्माजीने प्रकास कराहे जिस यज्ञोकी तारीफ वेद व्यासजीने पुराणोमें गा-

ईहे ये बातमें आपकी सरासर झूठ समझताहूं व्यासपुत्र बोला हे राजेंद्र अहिंसा परमोधर्मः ये वातभी तो व्यासजीने कहीहे ओर, नारदादिक मुनिभी इस बातकूं त्यागे सोही उच्च गति पाताहे एसा कहतेहें में तो पुराणमें लिखा वेसाही वांचताहूं राजा बोला इतनां दांन पुन्य ब्रह्मभोज गंगास्नानादिक करताहूं सो क्या में मांस खाणेकरके नर्क जाऊंगा गंगास्नान करणेसें सब पाप छूट जाताहे एसा व्यासजी हरिवंस सुणाया तब, मेनें सुणाथा व्यासपुत्र बोला हे राजेंद्र भागवतमें प्राचीन वर्हि राजाने यज्ञ करणेपर हजारों पशु मारेथे अंतमे नारदजीने प्रतक्ष नर्क दिखाकर हिंसक यज्ञ छुडाया भागवत क्या व्यासजीका आप नही मांनतेहे राजा बोला हम तो तुमारी वात नही माने नही कथा सुणे व्यासपुत्र बोला इकत्यार आपका सुणे चाहे नही सुणे खूनका भीगा कपडा खूनमें धोणेसें हे राजन् कभी साफ नही होता एसी हिंसा करणेवाले पशु जीवघाती जीव हित्याकरके फेर पाप उतारे चाहतेहे वो पुरुष कोडों सोनइया हमेसां ब्राह्मणोंकों दान देवे अथवा हमेसां प्रथ्वी-

दांन करे ओर एक आदमी एक जीवकों मरतेकूं बचावे तो कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन अहिंसा बराबर कोइ धर्म नही राजा स्वार्थीये सच्च मार्ग कभी नही बतासकतेहे एसा कह व्यास घरकूं आया राजाने पेटीये ओर रुपये बंधकर लिये चंददिनमें व्यास घरकूं आये तब व्यासण रोणेलगी व्यासने पूछा क्या नया व्यासणने सब हकीगत कह सुणाइ व्यासका लरका बोला आप केसी कथा हमेसां वांचतेहे सो राजा सच्चे अर्थकूं जूठा कहणेलगा व्यास बोला कलसुबे राज महलमे आजाणा देख केसाक राजाकूं समजाताहूं खेर फजर होतेही व्यासजी राजापास जाके आसीर्वाद दिया राजा नमस्कार कर सत्कार कर पूछा कुशल क्षेमहे व्यासने कहा अन्नदाता कुशल क्षेमतो हजूरकी सु निजरसेंही रहसकतीहे राजा बोला महाराज कथा इतनेतक तो आपके मुखसें सुणी लेकिन लोकोमें मेने एसा सुणाथाके व्यासजीका पुत्र बडा पंम्तिहे सो तो मुझ नही व्यास बोला गरीबपर पंम्ताईका भार धूसहे कलियुगके पंम्तहे आप तो कल्पवृक्ष कामधेनु साक्षात ईश्वररूपहो एसा सुणकर राजा प्रसन्न

होकर कथा वांचणेका हुकम दीया इतनेमें व्यासपुत्रजी आ पहूंचा व्यासजी वोही तिल-तुसत्तर मांस खानेवाला नर्क जाताहे एसा अर्थ करा राजा बोला क्या में नर्क जाऊंगा व्यास बोला आप तो स्वर्ग वेकुंठ पधारोगे राजा बोला मे मांस खाताहूं व्यास बोले धर्मावतार पुराणका रहस्य आप विचारो जो तिलतुसत्तर मांस खावे सो नर्क जावे आप क्या तिलतुसत्तर खातेहें राजा बोला नही २ सेर अधसेर नित्त तव व्यास बोले हे धर्ममूर्त्ति आप तो शिवलोक सिधावेंगें क्योंकी व्यासजी महाराजने तो तिलतुसत्तर खाणेवालेकूं नर्क लिखाहे सेर अधसेरवालेकूं कुछ नही लिखा राजा प्रसन्न होकर च्यार रुपे नित्त उर च्यार पेटीये सरु करवा दिये राजा व्यासजीके लड़-केकूं बोला देखा छोटे व्यासजी पंडिताइ इसकूं कहतेहे तुम पूरे पढे नही जब व्यासजी जेसी कथा वांचोगे तबही मेरे कथा व्यास होवोगे तब व्यासपुत्र स्वार्थीयापणा दोनोका समझके एक श्लोक बोला ॥ समुष्ट्राणांविवाहेपु गीतंगार्यं-तिरासभा परस्परं प्रशंसंति अहोरूप महो-ध्वनि ॥ १ ॥ राजा संस्कृत पढा नहीथा

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी उंर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लमकेका हाथ पकमके अपणे घर ले आये वेटा बोला वावा तुमने वमा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपनें स्वर्ग जाणा केसे वतलाया तव व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसावसें नर्क जावे तो क्या उंर वेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तवही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची वात नही कहे तो राजाका धर्म विगम जाताहे इसीतरें जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजवही हमेसां पथ्य वताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमे एसा लिखा हुवा वाचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

वो वैद्य निषेधितहे चाहीये वैद्यकों सो दे
काल अवस्था ताकत रोगकी रोगीकी तथ
ओपधीके अनुयाईही पथ्य वतलावे, राजा इस
वातकी परिक्षा करणेकूं वैद्यसें पूछी वैद्यजी मुझे
सब सागोमें वेंगणका साग अच्छा मालम
देताहे वैद्य वोलां हां हजूर सचहे भोजन
वागविलास ग्रंथमे लिखाहे वृतांकं सागनायकं
अर्थात् वेंगणहे सो सब सागोका मालकहे बमा
रुचिकर वात कफ कर्त्ता होणेसे वृंहणहे स्वा-
डुहे बमा लज्जितदार होणेसें दोय रोटी खाणे-
वाला च्यार खाजाताहे मारु वेंगण पमदायत
व्यभिचारणी स्त्रियोंकूं बमा प्याराहे श्रीकृष्ण
नारायणकूं जब ये बहोत अच्छा लगा तब
प्रसन्न होवो अपणा मुकुट ओर वदन छविकी
स्यामता वेंगणकूं इनायतकी तवहीसे वेंगण
मनोहर लगणेलगा इसवास्ते वेंगणकी जितनी
तारीफ करी जावे इतनीही थोमीहे गरम म-
सालेदार निहायत ऊमदा वणताहे तब राजा
बोला कुछ यक गरमी तो करताहे वैद्यजी बोले
जी हजूर वेंगण बमी खराब चीजहे गरमी
सुजाक भगंदर गंठिया नासूर श्लीपदादिक
अनेक रोगोका करणेवालाहे सका वेंगण मरा

चूओ जेसा वमा विदरूप दीखताहे म्लेच्छ अ-
नार्योंका खांणापीनाहे इस वेंगणकूं वहुत बीज
होएेसें जैनधर्मवाले अनक्ष कहतेहे उर पुरा-
णोमें व्यासजीनें लिखाहे जो प्राणी वेंगण
खायाहे उर ७ महीनेमे आदमी मरजावे अगर
एक बीजनी जो पेटमें रहजावे तो प्राणी नर्क
जाताहे तब राजा बोला वैद्यजी हमने जब
वेंगणकूं अच्छा कहा तब तो आपनेनी अच्छा
काहा उर मेने बुरा कहा तब बुरा कहा ये क्या
हालहे तब वैद्य बोला गरीवपरवर नोकर आ-
पके क्या वेंगण चंदजीके बापके आप राजी
रहो हमकूं तो वेसाही कहणा जरूरहे ॥
दुहा—जाटकहेसुणजाटनी इसीगांवमेंरहणा ॥
उंठविलाइलेगया हांजी २ कहणा ॥१॥
सो हमकूं तो वेसा कहणा जरूरहे एसा
खुसामंदीया वैद्य राजाके रोगका वढाणेवाला
होताहे एसा विचार मंत्री राजाकूं कहणेलगा
महाराज सनामें राणीसाहिवकूं पास रखणा
वाजिवनही क्योंके नीतिमे लिखाहे अति नि-
कट विनाशाय अतिदूरेतिनिष्फलः सेव्यतांमध्य
नागेन राजावन्हिगुरौस्त्रियः ॥ १ ॥ अर्थ ॥
राजा अग्नि गुरु उर स्त्री ए च्यार वहोत न-

जीक होय तो विनाश कर्त्ताहे जर वहोत दूर रहे तो बराबर फल देते नहीहे इसवास्ते मध्यमे इनोसें काम लेणा चाहीये इसवास्ते राणीकी एक तसवीर चित्रायकर पासमें रखिये तब नंदराजा एक तसबीर चित्रायकर सारदानंदननामें आपणे गुरुकूं दिखलाई तब शारदानंदन अपणे पंमिताइ दिखाणेकूं बोला हे राजन् राणीके माबी जांघपर तिलहे सो इसमें कीया नही राजा गुरुका वचन सुणकर राणीके शीलमे शंशय आया तब राजा मंत्रीकूं हुकम दीयाके शारदानंदनकूं मारमालो तब मंत्रीने विचार करा एकाएक विगर विचारा कांम नही करणा पीछे पछताणा पमताहे फेर उपाय क्या करसकताहूं तब बोला जो हुकम एसा कहकर प्रच्छन्नपणे पंमितकूं अपणे घरमे रख्का एक वखत नंदराजाका लमका सूअरके पिछामी लगके दूर गया आखिरकों सांझ पमने आई तब राजकुमार एक सरोवरमें जल पीकर नाहरके मरसें एक दरखतपर चढा उस दरखतपर एक देवाधिष्टित बंदर रहताथा उस बंदरनें कुमरसें कहा हे कुमार इस जंगलमें एक बमचतर सिंह रहताहे सो वो अनेक दीन ताप·

ऐकेर आदमीका दिल पिघलाकर दगाबाजीसें मनुष्योंका प्राण लेताहे इसवास्ते पेस्तर तूं मेरी गोदमें सोजा पीछली रात्रिकों में सोउंगा तब राजकुमार उस बंदरकी गोदमें सो रहा बाघने अनेक छलबल कीये लेकिन् बंदरने राजकुमार-कूं नीचे नाला नही जब पिछली रात्री आइ तब राजपुत्रकी गोदमे बंदर सूता बहोत स-मझाया हे कुमार देख एसा नही होजाय जो बाघकी दया लाके मुझे तूं नीचे पटकदे में तेरे सरणागतहूं मेरे प्राण तेरे हाथहे एसा समझाकर कुमरके गोदमें वानर सोरहा इतनेमें बाघ आकर बहोत आजीजी करणेलगा हे कुमर में बहोत भूखाहूं तुजें बडा पुन्य होगा ये बंदर तेरे क्या लगताहे उर इसकूं तुं मुझे देदेगा तो तेरेभी प्राण बचजायगें तब कुमर अपनी ज्यांनकी रक्षावास्ते बंदरकूं नीचे नाल-दिया तब बंदर बाघके मूंमे गिराये स्वरूप देख के बाघ हसणे लगा तब बंदर बाघके मूंमेसें निकलकर रोणे लगा तब बाघ बंदरकूं रोणेका कारण पूछा तब बंदर बोला जो कोइ आदमी अपनी जाती छोडकर पराइ जातिपर आसक्त होतेहे उण मूर्खोंकी क्या गती हो-

यगी एसा कहकर शरमिंद राजकुमरकूं पागलकर दिया तब राजपुत्र विसे मिरा २ एसा पुकारणे लगा एसा हुये बाद नंदराजा पिछमी खबर करणेकूं असवार भेजा आगे घोमा इकेला फिरता देखा उसके पगोंके खोजसें फिरते २ कूमर दिवाना हुवा मिला राजाने बहोत उपाय कराया लेकिन् कुमर अच्छा हुवा नहीं तब राजाकूं शारदानंदन याद आया जो इस वखत वो होय तो बिलकुल अच्छा करदेवे लेकिन् अब उसकूं कहासे लाउं एसा अपसोस बंद होकर रोणेलगा तब प्रधान बोला गरीब परवर मेरी बेटीहेसो कुछ एक उपाय जाणतीहे एसा सुण नंदराजा अपणे पुत्रसमेत मंत्रीके घर गया तब परूदेके अंदर बेटी भया हुवा शारदानंदन बोला विश्वास रखणेवालेकूं ठगाणा इसमें क्या चतुराइहे अपणे गोदमे सूतेकों मारणा इसमे क्या ताकतपणाहे शारदानंदनका एसा वचन सुणकर कुमर बि छोमके से मिरा २ कहणे लगा सेतु रामने बंधाइ उसकी पाल देखणेसें गंगा सागरका संगमकूं देखकर स्नान करणेसें ब्रह्महत्याके पापसें जीव छूटताहे लेकिन् मित्रकूं मारणेवाला सेतुकी पाल तथा सं-

गम स्नानके पापसें छूटता नही एसा सुणकर दुसरा अक्षर से छोमदीया मित्रकूं मारणेवाला कृतघ्नी इच्छा करणेवाला कृतघ्नी ओर विश्वास- घाती चोर ये च्यारोंही जहांतक सूर्य चंद्रमाहे वहांतक नर्कमें रहेगें तब कुमर तीसरा अक्षर मि कहणा छोम दीया राजन् तूं अपणे लमकेका कल्याण चाहताहे तो सुपात्रोंकों दान दे का- रण गृहस्थ दांन देणेसें शुद्ध होताहे एसा वचन सुण कुंवर चोथा अक्षर रा छोमदिया तब अछा होकर कुंवर वाघ ओर बंदरका सर्व वृ- तांत सुणाया तब राजा पमदेमें रहा शारदा- नंदनकूं पूछणेलगा हे वाला वनमे जो वीती बात सो तुजे क्या खबर सो तेने सब हकी- गत श्लोकोमे बनाकर कहकर मेरे पुत्रकूं अच्छा करदिया तब पंमित बोला हे राजन् जिनेश्वर देव सद्गुरूके प्रतापसें मेरे जीभ्याग्रपर सरस्व- तीहे जिस्सें जेसें मेने जानुमती राणीके जां- घका तिल जाण्या तेसेंइ यह बातजी जाण- ताहूं तब पीछे दोनोकी मुलाखांत जइ दोनोंके आनंद जया इसवास्ते विश्वासघात करणा नही इस लोकमे पाप दो प्रकारकाहे एक तो गुप्त ओर दुसरा जाहिर वो छानेका पापजी दो

तरेकाहे एक खोटा ओर एक बमा खोटी तराजु वट माप वगेरह रखणा ये खोटा गुप्त पाप ओर विश्वासघात करणा यह गुप्त महापापहे प्रगट पापका दो प्रकारहे एक तो कुलाचारसें करणा सो दुसरा लोकीक लाज छोमके करणा सो गृहस्थलोक कुलाचारसें आरंभ समारंभ कर-तेहें तेसें म्लेच्छ लोक कुलाचारसें हिंसा कर-तेहें वो जाहिरा खोटा पाप जांणना तेसेंही साधुका वेप पहरकर निर्लज्जपणेसें हिंसा प्र-मुख करतेहे वो प्रगट महापाप जांणना ल-ज्या छोमके महापाप करणेसें अनंत संसारी-पणा होताहे क्योंके प्रगट महापाप करणेसें जैन शासनका उमाह होणेसें महापापहे कुलाचारसें प्रगट लघु पाप करे तो थोमा कर्मबंध होताहे ओर जो गुप्त खोटा पाप करे तो तीव्र कर्मबंध होताहे जो कोइ आदमी परायें अवगुण छिद्र ओर मर्म उघामकर स्वार्थ साधनकी उन्नती क-रतेहें वो कभी होती नही जेसे अरटकी घम-नाल खाली ओर भरी होजातीहे कोइ एसी शंका करतेहे की न्यायवान ओर सदाधर्ममें चलणेवाले दुखी देखणेमें आतेहे ओर अन्याइ अधर्मी लोक सखी देखणेमें आतेहे जिसका

समाधान एसाहे जो अन्याइ अधर्मी सुखी दिखतेहे ओर धर्मी दुखी दिखतेहे ये सब पूर्वकृत पुन्यपापका फलहे इस भवका ओनोंके नहि जांणना श्रीधर्म घोषसूरजीने कहाहे पुण्यानु बंधिपुन्य १ पापानु बंधिपुन्य २ पुण्यानु बंधिपाप ३ पापानु बंधिपाप ४ इसतरेसें पूर्वकृत कर्मके सुखदुखके च्यार भेदहे जो जीव जैन धर्मकी विराधना नही करतेहे वो जीव भरतचक्रवर्त्तिकी तरह निरुपम सुख पातेहे वो जीव पुण्यानुबंधवाले कहातेहे जो जीव पूर्वजन्ममें अज्ञानसें कष्ट करे वो जीव कोणिक राजाकी तरे वहोत ऋद्धि निरोग शरीरवाला होताहे पापकर केभी धर्म करे नही ओर पापकर्ममें रक्त होय वो पापानुबंधिपुन्य जांणना जो जीव पापके उदयसें दलद्री ओर दुखीहो करकेभी लेसमात्र दयाधर्म होणेसें द्रमक मुनिकी तरे जैनधर्म पाताहे वो पुण्यानुबंधिपाप जाणना ३ ओर जो जीव काल शोकरिकश्रंमाल कसाईकी तरे क्रूरकर्म करणेवाला अधर्मी निर्दई करे हुये पापका पश्रतावा नही करणेवाला ज्यों ज्यों दुखी होता जाय त्यों त्यों ज्यादा २ पापकर्म करताजाय वो पापानुबंधि पाप कहलाताहे पुन्यानुबंधिपुन्यसें

बाहरकी शुद्धि उर अंतरंग शुद्धिभी पातेहे दोनोंमेंसें एकभी शुद्धि जिसने नहि पाइ उस मनुष्यजन्मकों धिकारहे जो जीव पहली अछे परिणामसे धर्मकाम सुरू करे उर पीछेसें शुभ परिणाम उतर जाणेसें पूरा धर्म करे नही वो जीव परभवमें आपदा संयुक्त संपदा पावे इसतरें कोइ जीवकूं पापानुबंधी पुन्यके उदयसें इस लोकमें दुखकष्ट जतावे नही तोभी उसकूं अगले भवमें परिणामसें निश्चें पापकर्मका फल मिलेगा इसमें शंका नही कहाहे के द्रव्य पैदा करणेकी बहोत इच्छासें अंधा हुवा मनुष्य पापकर्मकरके जो धन पातेहे वो धन मांसमें पोये हुये लोहके कांटेकी तरे उस अदमीका नास करे विगर पचता नही इसवास्ते जिसमें स्वामीद्रोह होय एसा मासूलकी चोरी वगेरे सर्वथा छोडणा उस्सें इसलोकमें उर परलोकमें अनर्थ उत्पन्न होताहे जिसवातसें किसीको थोडीभी तकलीप पैदा होवे वो व्यवहार तथा घर दुकान करावते तथा लेणेमें तथा रहणेमें जो कुछ होय सो वर्जणा क्योंके किसीकों तकलीप देणेसें अपणे सुखकी उर धनकी वधोतरी नहि होती कहाहे के जो कोइ

आदमी मूर्खताइसें मित्रकूं कपटसें धर्मकूं सुखसें विद्याकूं क्रूर उर कठोरताइसें स्त्रीकूं वस करणा चाहे तेसेंऽ दुसरेकूं तकलीफ देकर आप सुखकी चाह करे उसकूं मूर्ख जांणना विवेकी लोकोंको चाहीये सो ज्यों अपणेपर लोक प्रीति करे तेसें चलणा क्योंके इंद्रीयां जीतनेसें विनयगुण पैदा होताहे उर विनयसें अछे २ गुण पैदा होतेहे तब सब लोक उस गुणोके पिआरी प्रीति रखतेहे उर लोकोके अनुरागसें सर्व संपत्ति पैदा होतीहे चतुर पुरषकों चाहिये अपणे घरके धनका नफा नुकसांन कीया हुवा संग्रह वगेरह बात कोइके आगे नहीं कहणी क्योंके चतुर आदमी स्त्री आहार पुण्य धन गुण दुराचार मर्म उर मंत्र ये आठ चीज अपणी छीपाके रखणी कोइ अजाण अदमी ऊपर लिखी आठ वातोंमेसें पूछे तो जूठ तो नही बोलणा लेकिन् एसा कहणा तुमारे इस वातसें क्या मतलब हे एसा उत्तर भाषासुमतिसें देणा राजा गुरु वगेरे बडे आदमी इनमेंकी बात पूछे तो सच्च २ जेसा होय वेसा कहदेणा क्योंके मित्रोके साथ सच्च बोलणा उरतके साथ मीठा बोलणा दुस्मन साथ जूठ

लेकिन् मीठा बोलणा उर अपणे मालकके साथ उनोकों अच्छा लगे एसा सच्च बोलणा सच्च बोलणा ये मनुष्यकूं बमा आधारहे कारणके सच्च बोलणेसें विश्वास पेदा होताहे इसपर एक दृष्टांतहे दिल्ली शहरमें एक मोहनसिंहनामका पारख रहताथा वो बमा सत्यवादीथा एसी उसकी कीर्त्ति फेल रहीथी बादशाह एकदिन उसकी परिक्षा करणेकूं उस मोहनसिंघकूं पूछा तुमारे पास कितनाएक धनहे मोहनसिंह बोला में अपणा वहीखाता संन्नालके कहूंगा उसनें अपणा वहीखाता संन्नालकर अरज करी गरीबपर मेरेपास आसरे चोरासी लाख रुपया होगा बादशाह बोला में थोमा सुणाथा लेकिन् इसने तो बहुत कहा बादशाह प्रसन्न होकर उसकूं पारखपद देकर अपणा निज खजाना सोंप दीया विवेकी पुरुषकूं चाहीये सो कष्ट आपदामें साहाय करे इसवास्ते एक मित्र करणा वो धर्मसें तथा धनसें प्रतिष्टासें तथा उरन्नी अच्छे गुणोसें अपणी बराबरीका बुद्धवान उर निर्लोन्नी होय रघुवंशकाव्यमें लिखाहे राजाका मित्र बिलकुल शक्तिरहित होय तो राजाके वखतपर काम

पमणेसें राजापर उपगार नहि करसके उर राजाका दोस्त राजासें ज्यादा शक्तिवांन होय तो वो राजासें इर्षासे वैर विरोधकर वेठताहे इसवास्ते राजाका दोस्त मध्यम शक्तिवाला होणा चाहीये मित्र एसा होताहे सो आपदाकू दूर कर विपमवखतपर सहाय करताहे जिस वखतमें सगा भाइ उर वाप उर कोइभी स्वजन कांम नही देसकताहे रामचंद्रजी कहतेहे हे लक्ष्मण अपणेसे बमा उर समर्थकी साथ प्रीति रखणी मुझे रुच तीनही कारण उसके घर जब आप जावे तव तो अपणा कुछ आदरसत्कार होता नही अगर वो जब अपणे मकानपर आवे तव उसकी सब तरेसें हाजरी भरणी पमे उर धन खरच करणा पमे एसाहे तथापि जब कोइ बमा कांम आय पमे तो बमे अदमी विगर सुधरताभी नही उरभी हरतरेके फायदेहे क्योंके यातो आप समर्थावान होणा या समर्थकूं हाथमें रखणा नही तो कार्य साधनका दुसरा रस्ता नहीहे बमे आदम्योकों चाहीये सो हलके आदमीके संगभी दोस्ती करणा कोइ काम एसा आय गिरताहे सो हलका आदमीसेही निकलणेका होताहे पंचा-

ख्यानमें लिखाहे जंगलमें बंधनमे पमे हुये कबुतरोके बंधन ऊंदरने छुमाये सुईका काम तलवारसें बणे नही मित्रोकूं शुद्ध मनसें न्याइ-बंधवोंको सन्मानसें स्त्रीउंकों प्रेमसें नोकर चाकरकूं दानसें दुसरे लोकोकूं चतुराईसें वस करणा कोइ वखतपर दुष्ट अदमीकोंभी अग-वाणी करणा पमताहे अपणां मतलब सिद्ध करणेकूं रसकूं चाखणेवाली जीभ लमाइ कर-णेकी वखत एसी चतुरहे सो दांतोकों आगे कर-के अपणा काम साधतीहे कांटाहे सो प्रायें दु-खदाइहे लेकिन उस विगर निर्वाह होता नही देखो खेत गाम घर बगीचोकी रक्षावास्ते प्रायें कांटोंकी वाम लगाइ जातीहे जहां प्रीती मोह-वत होय वहां लेणदेण करणा नही जिस अ-दमीसें मैत्री नही करणी होय उहांही लेणदेण करणा ओर जहां अपणी इज्जत जाणेका मर होय उहां खमा नही रहणा सोमनीतिमें लि-खाहे जहां लेणदेण ओर सामल रहणा होय वहां लमाइ हुये विगर रहे नही अपणे दोस्त-कोंभी कोइ चीज सोंपणी होय तो गवाही रखे विगर नही सोपणी तेसेंइ कोइ चीजवस्त किसीको भेजणी होय तो मित्रके साथ भेजणी

नही अगर विश्वास रक्खे तो धनकी हानी नही रक्खे तो अनर्थ होय विश्वासवाला या अविश्वासवालाहो लेकिन् एसा मित्र विरला होगा सो अपणी छुपाकर सोंपी चीजपर लोभ नही करे बल्के २ सेठ साहूकारोंकी बुद्धि अस्त-विस्त होजातीहे पराइ जमा जब अपणे घरमें आयल्हे तो मनमें कहतेहें हे इष्टदेव ये धरवट धरणेवाला मरजावे तो तुझें प्रसाद चढाउंगा जरूरसें धन अनर्थकी जल्हे लेकिन् जेसें अग्नि विगर तेसें धन विगर गृहस्थका काम चलता नही इसवास्ते चतुर पुरषोंकों चाहीये सो अ-ग्निकी तरे धनका जावता करे एक धनेश्वर सेठ अपणा सब धन माल वेचकर आठ रत्न एक क्रोल्में खरीद कीया किसीकूं खबर नही पल्के इसतरेसें अपणे मित्रकूं सोप दीया पीछे आप धन कमाणेकूं परदेश गया वहां वहोत दिन रहा अंतमें बेमारीके वस मरणे लगा तब लो-कोनें पूछा कुछ समाचार अपणे वेटोसें कहणा होय तो कहदो तब सेठ बोला इहां जो मेनें वहोत धन कमाया सो तो लोकोमें उधार लेणाहे सो तो पुत्रोंकों मिलणा मुसकिलहे ले-किन् एक क्रोल्के आठ रत्न मेरे मित्रके पासहे

लंगोटी ऊर तूंबा चिमटा रखताथा उस ब्राह्मणकों तीर्थ जाणेकी जरूरी जइ मनमें विचारणे लगा वणियोकूं सों पूगा तो खाजायगें कारण ब्याजके लालचसें पहली तो धरणेवाला मांगे नहीं देवाला निकाले वाद वणिया देता नही इय वात दुनियांमे मसहूरहे ॥

दुहा—कंताकवहुनकीजिये वणिकपुत्रविसवास ॥
धीरजादेकेधनहरे रहेदासकोदास ॥ १ ॥

दुसरे भेषधारी पट्दर्शनवालेंकी जमातो बहोतही राजीपेकेसाथ हजम करताहे निहूंता देदेके चंगेमाल खिलाताहे उस लालचमें ब्राह्मण ऊर भेषधारीकी जमा जाते रहतीहे एसा विचार करते बडे त्यागी वेरागी जोगी फक्कर याद आया मनमें विचारा ये बाबा कोभीभी नही डीपताहे एसा विचार बावेजीके पास एकांतमे जाके बोला बाबा साहिब बडी महरबानी होगी में आपकी कृपासे च्यारों धाम आऊं अगर ये आपके पास धरलो तो ये बडा आसान होगा आप तो परमार्थ साधते हो दुसरे लोभी साहूकारोका मुझे भरोसा नही आता आप निस्पृही इस सोनेको धूल मट्टी समझतेहो तब योगी बोला चल २ इहांसे

में क्या करूं इसके लालचसें कोइ मुझें मार जायगा इस बखेड़ेको दूर रख ज्यों ज्यों ब्राह्मण वहोतही नम्रतासे पांव पकड़के आजीजी करणेलगा दुनियामें आये हाथही घी गिरताहे तब जोगी बोला उस आलेमें इस थेलीकों रखके तालाबंध करके कूंची तेरेपास लेजा किसीसें कहणा मत तब वो ब्राह्मण खुस होकर इसी तरेसें धरके चलधरा थोड़े दिनबाद योगीने थेली निकालकर विचारणे लगा एक २ मोहरके अगर पचीस २ रुपे वटेंगे तो अढाइ लाख होगा होते धन तकलीप पाणा ये वे अक्कलीहे इसवातका कोइ गवा साक्षी तो हेनहीं यह धन तो मेरा ही चूका एसा विचारकर जोगी अब गृहस्थोसें कहणेलगा बाबा एक जोगी यानी लटका हासिल कीयाहे पतवाके तो देखें उन लोकोकें पाससें एक झाड़साही पेसा मंगाके बावाजी कुछ जंगलकी पत्तीमें धरके अंगीठीमें पहले मोहर धर दीया करे ठंडा हुये वाद वो मोहर निकालकर उन गृहस्थोके हाथ विकवाणा सरू करा बाबा बोले लो बच्चा एक मठ तो बनवा माले नांम रहजायगा अब तो बावेकूं रसाणी किमीयागर जांण-

के हजारो लोकोंकी भीम मचणेलगी बमी सायेदार हवेली झुकावी गद्दी तकीये पलंग वगेरोसें डुसरे जाणो साहूकारही वण बेठा इधर तो रेणमाल रखणा गुमास्ते अंर सीपाही अ-ब्ीपोसाक अतर पांन फूल चंगे मलीदे उमणेलगे बमे २ साहूकारोका आम दरवार जुमणेलगा बावेजीके पासमें रुजगार व्यापारमें पांच सात लाखका धन जमा होगया तब बावेजीने विचारा कुछ धन पासमें खजानेमे रखणा जोगीनें अपणे गुमास्तोसें दस हजार उसही सिक्केकी मोहर मंगाकर उस ब्राह्मणकी थेलीमें मालकर अपणे पासमें रख छोमा मनमें विचारणे लगा अमे वमे काम आवेगा सोनेकी तेजीमें वेचके व्याजनी पैदा करलूंगा यूंकरते पांच छ वर्षवीते वाद व्यारोंही धामकर ब्राह्मण पीछा आके देखे तो बावेजीकी झोंपमी नहि देखी बमी अंबारत देखके पूछणेलगा लोकोसें इहां बावा जोगी रहतेथे सो कहां गये लोकोने कहा ये मकान उनहीकातोहे तब ब्राह्मनके धसका पमा कुछ दालमें कालाहे खेर विचारा अंदर गया तो बावेजीके जरीतास मुखमली पोसाख देखके पहचाणा नही लेकिन जोगीने पहचाण

लिया लोकोसें पूछा जोगीबावा कहा लोकोंनें इसारेसें बतलाया तब नजीक जाकर धीरेसें बोला महाराज अछे हो जोगी बोला तुम कोणहो कहांसे आये क्यां नांमहे ओर क्या कामहे तब ब्राह्मन बोला महाराज में वो ब्राह्मनहूं जोकी दश हजार मोहरे धरगयाथा ये बात सुणतेही बावेजी बोले अरे इस तूरवे ब्राह्मनकों सेर आटा देकर बाहर निकालो एसे भिक्षुकोकों मेरेतक अंदर केसे आणे देतेहो एसा कहता उठके अंदर चलागया इतनेमें नोकर आके ब्राह्मनकूं बोला लेजा सेर आटा हुकमहे बावेजीका ब्राह्मन तो मूर्च्छा खाके जमीनपर गिरगया नोकरोंनें उठाकर बाहिर चोकीपर धरदिया जब जाग्रत हुवा तब हाय मोहरें २ करता फिरणेलगा मनमें विचारणेलगा गवा साक्षी विगर सिरकारजी तो सुणेगी नही इसरो सब लोक मुजे जूठा कहेगें मेरी कोण सुणेगा क्या करूं कहां जाउं हा विधाता मेरी बे अक्कलीका फल मुजकों मिला एसा वो ब्राह्मन निरास दिवानेकी तरे मोलणेलगा एसे फिरतेकूं एक वेस्याने देखा तब उस ब्राह्मनकूं बुलाके बहोत धीरज ओर दिलासा देकर पूछा

तब उसने सब हकीगत कही वेस्या बोली मत घबराउ में मोहरें पीछी दिला देतीहूं लेकिन् में जिसवख्त उहां जाके बेठूं उस वख्त तुम उस योगीसें मोहरें मांग लेणा फोरन् देदेगा एसा कह वो वेस्या पांचसात संदूकोमें पत्थरोकों नालके कुलफ लगाकर बंधकर उसका बीजक कोइ क्रोड़ रुपे आसरेका बनाया उर जनाउ गहणा मोहरे रुपया वगेरे एसी नगदायतकी एक संडुक अलग रक्खी आप एक सेठाणीका वेष बनाकर पांच सात बनारणोकों संग लेकर रथमें सवार हो वो संडुकोकूं संग ले बावेजीके पास पोहची बनारणे पेस्तर जाके खबरदी बावासाहिब सेठाणीजी आपके दरसणकरणे आतीहे सो आप सब आदम्योकों बाहिर भेज देवें बावाजीनें एसाही कीया वेस्या आयके पांच मोहरे भेटकर पांवोमें गिरके रोणे लगी बावाजी दिलासा देकर बोले क्यों बच्चा क्यों इतना घबरातीहे क्या हालहे सो कह पातर बोली क्या कहूं स्वामीजी बारे वर्ष हुये सा-दी करके सेठसाहिब परदेस गयेथे सो अब-तक मेनें राह देखी लेकिन् अब में उनकेपास जातीहूं लेकिन् इहां मुझें किसीकाभी भरोसा

नही ऊर आपकी नेकनांमी दुनियामें मसहूरहै सो भरोसा जांणके ये कोम रुपयेका सामान तो इस संदुकोमेंहै सो सबमें खोल २ के दिखातीहूं एसा कहकर पेसतर लाख दस एकका जो सामानकी गहणोंकी संदूक खोलके दिखाणे लगी देखतेही बावाजी तो दंग होगये ऊर मनमें विचारणे लगे अबी दिनदसा जागी अब इस मालमेंभी मेरे वहोत सामाल हाथ लगेगा कीमती नग निकालकर हलके जमवा दूंगा कमसेकम वीस लाखका इसटेट तो मेरा होचूका इतनेमें तो वो ब्राह्मन आकर बोला बावाजी आजके ७ वर्ष पेस्तर जो मेनें झोपमीमें दस हजार मोहरे आपकेपास रकखीथी सो दीजीये बावाजीने विचारा जो में नामुकर जाउंगा तो ये सेठको धनमें मनचिंता केसें पेस होगा तब बोला हां भाइ लेजा झट ऊठके वो थेली दस हजारकी लाके देदी ऊर बोला ले भाइ तेरी संभाल ले ब्राह्मण गिणकर थेली कबजे करी इतनेमें तो दोमती २ आयकर दासी बोली वधायजे २ सेठाणीजी साहिब सेठसाहिबकी सवारी घरपर आयगइ इतना सुणतेही वेस्या एकदम हसती २ झपकेसें वो

पांचों मोहर उठाके उठी तब ब्राह्मणकूं हसी आइ ये तमासा देख योगीकूं हसी आगइ तब दासीने एक चोपाइ पमी ब्राह्मन हस्यो गयो धन पायो सेठाणी हसी सेठ घर आयो तूं क्यों हस्योरे जरमा जेखी जोगी बोला एक कलासे अध कीसीखी सो जिस अदमीकी चतुराइ लायक तारीफकेहे सो गया धन पीछा लावे किसीने धरवट जमा धरीहे अगर वो मालक मरजावे तो उसके पुत्रादिक परवारको देदेणा चाहिये कदास वारिस कोइ नही होय तो संघके सांमने धर्मखाते लगादेणा इतने कांममें आलस नही करणा गांठमे धन रखते चीजकी परिक्षा करते गिणतीके वखत गुप्त रखणेमें खरच करणेमें ओर नामाठामा हिसाबकी वखत अगर रखेगा तो नुकशानी पायगा क्योंकें विगर लिखे मूंसे वात याद रहणी मुसकिलहे ओर भूलणेसें वृथा कर्मबंध होताहे अपणे निर्वाहकेवास्ते चंद्रमा जेसें रविके पिछाडी चलताहे तेसेंइ राजा ओर प्रधानोके अनुयाइ चलणा नही तो वखतपर अनादर होजाताहे राजाके आश्रयसें अनेक कार्य सिद्ध होताहे तेसेंइ सहज काममें जेमें तेसें सोगण नही खाणी

विधाताका कोप होताहे तब रसायण जूवा फाटका अंजनसिद्धि ओर यक्षणीकी गुफामें प्रवेश करणेकी बुद्धि होतीहे जो आदमी मंदिरकी धर्मकी सची या जूठी सोगन खातेहे उसका बोधवीज जाते रहताहे ओर अनंत शंशार रुलताहे किसीकी जमानत नही देणी कारण जमानतभी एक आपदाहे ये पांच चीज आपदाका कारणहे घरमें दलद्री होकर दो ओरत रस्तेपर खेत जमानत देणी गवाही भरणी ओर दो तरेकी खेती विवेक पुरषोकों चाहीये सो वणे जहांतक जहां रहता होय वहांही व्यापार करणा जिस्से स्वजनोसें विछोहा नही होवे धर्मभी अछी तरेसें वण आताहे जो आजीविका नही होती दीखे तब तो परदेस जाणेकी तकलीप उठावे कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन दलद्री रोगी मूर्ख मुसाफर ओर हमेसां पराइ नोकरी करणेवाला ये जीतेभी मरे जेसेंहें एसा समजणा जो परदेस जाणेकी जरूरी होय तो आप अथवा अपणे लरकोंसें परदेसमें व्यापार नही करवाणा अपणे परीक्षावंत खातरीदार मूनीमसें व्यापार चलाणा कोइ कारण योगसें परदेस जाणा परे तो अछे

सकुन मुहूर्त्त स्वर देखकर देव गुरु वंदन करके अच्छा साथ देखकर विदा होणा रस्तेमें नींद प्रमाद विश्वास करणा नही भाग्यवानका साथ होय तो बहोत अच्छाहे किसीमें जमा या लेणदेण भने होय तो अपणे स्वजनोकूं वाकब करदेणा स्वजनोकूं सीखामण देकर सबके संग राजीपेसें बात चीतकरके विदा होणा अपणे पूज्य पुरषका अपमानकर अपणी स्त्रीसें लडाइ करके वचन कहकर किसीकूं मार पीटकरके बालककूं रोवाय करके परदेस नही जाणा विदा होणेके दिनोमें कोइ पर्वया उच्छव नजीक आगया होय तो करके जाणा जन्मका डर मरणके सूतकमें अपणी स्त्री रजस्वला होय तब तथा डर कोइ मंगलीक कामभी होणके नहि जाणा दूध खाय करके डरतसें भोगकरके स्नान करके उलटी करके थूकके किसी अदमीके कहे हुये करडे वचन सुणकरके हजामत कराय करके आंखोमेंसे आंसु नाखकरके तथा अपशकुन होता होय इतने कारण करके परदेश नही जाणा जिधरका श्वर चलता होय वोही पांव देहलीसें बाहिर धरणे करके जाणेसें सर्व काम सिद्ध होताहे जाता हुये सामने रोगी बुढा

ब्राह्मण अंधा गाय पूज्य गुरु आदि राजा गर्भ-
वंती स्त्री ओर सिरपर बोजा उठाया हुवा आ-
दमी इतनोकों पहली रस्ता देकर पीछे आप
जाणा कच्चा अन्न पक्का अन्न पूजणेयोग्य मंत्रका
मंन्डल नांख दीया गया एसा उबटणा स्नानका
पांणी खून ओर मराहुवा कलेवर थूक श्लेष्म
विष्टा मूत जलती हुइ अग्नि साप मनुष्य शस्त्र
इतनी चीजों कोइ वखतभी उल्लांघणी नही
विवेकी पुरष नदीके किनारे तक गाय बांधनेके
ठिकाणेतक वन वगेरेके दरखततक तलाव सरो-
वर कूआ वगीचा वगेरे आवे जहांनक मित्रा-
दिकोकों पोहचाणे जाणा चाहीयें अपणा भला
चाहणेवाले अदमीकों रातकूं दरखतके नीचे
रहणा नही अजाण अदमीके संग अथवा गो-
लेके दासके संग रस्ते चलणा नही दो पहरका
तथा आधी रातका रस्ते चलणा नही लेकिन्
रेल तथा अग्निवोट टालकर क्रूर अदमी रख-
वाली करणेवाला चुगल सिल्पी अर्थात् कारीगर
अयोग्य मित्र इनोकेसंग बहोत वातचीत नहि
करणी वेवखत इनोके संग आणा जाणाभी नही
रस्ते चलते चाहे जितना थकेला चढजाय तो-
भी भेसा गधा गाय इनोपर नहि चढणा हा-

थीसे हजार हाथ गाडीसे पांच हाथ सींग मारणेवाले पशु तथा घोडेसें दस हाथ दूर चलणा विगर जातासंग लिये विगर रस्ते च-लणा नही मुकाम करणा उहांभी ज्यादे नींद नही लेणा सइकलोइ काम आपके तोभी एके-ला नहि जाणा एकेला किसीके घरमेंभी नहि घुसणा कोइके मकानमें आगे रस्तेभी नही घुसणा पुराणी नांवमें नही बेठणा एकेला नदी-में नही घुसणा ओर सगेभाइके संगभी एका-एक विचारकर धनपासमें लेके चलणा नही जल या थलमें विगर जावते पग धरणा नही जो अदमी क्रोधी सुखके चाहणेवाले ओर कं-जुस होय वो लोक अपना स्वार्थ खो बेठतेहे जिस समुदायमें सब लोक मालकपणेका अभि-मांन धरातेहे ओर सब लोक मनमें पंडिताइ मांनतेहे ओर वडपन चाहतेहे वो समुदाय ख-राब अवस्थामें जागिरताहे जहांपर केदी लोक रहते होय अथवा जहां जनमकेदी अथवा जिनोकों फासी लगणीहे एसे अदमी जह रहते होय जहां जूआ चलता होय जहां अपणा अनादर होता होय तथा किसीके ख-जानेमें अंते उरमे जाणा नही डुगंवा नफ

रत आणेकी जगह मसाण सूनवाड़ बजार अथवा ढिलका या सूका घास विखरा होय जहां जाते हुये बहोत तकलीफ होय जहां कचरा डालते होय अकूरमा खारी जमीन दरखतके शिखरपर पहाड़की टूंकपर नदी ऊर कूवेके कांठेपर जहां राख कोयला बाल खोपरी वगेरे पड़ी होय इतना ठिकाणोमें ज्यादे खड़ा नहीं रहणा बहोत महनतभी होय तोभी जोकाम करणा होय सो करणाही अगर तकलीफसें डरेगा तो पुरुपार्थका फल जो धर्म अर्थकाम ये तीनोंही मिलसकता नहीं जो अदमी आडंबर रहित होताहे उसका अनादर होताहे इसवास्ते बुद्धिवानोंकूं जरूर आडंबर रखणा परदेस जाणेसें अपनी इज्जत माफक आडंबर अपणे धर्मकी नेष्टा रखणी इस वातोंसें बड़ाइ बहुमान ऊर मनमे विचारे हुये कामकी सिद्धी परदेसमें बहोत लाभ होय तोभी ज्यादे नहीं रहणा कारण पिछाड़ी मकानकी व्यवस्था विगड़ जातीहे काम सिद्धीकेवास्ते पंचपरमेष्ठीका ध्यांन तथा गौतमका नांम लेणा कितनेक चीजे देव गुरु तथा ज्ञानकेवास्ते काम आवे एसी तरेकी रखणी क्योंके धर्ममें धन लगाणेसें ध-

नकी सफलता होतीहे धर्मके सात क्षेत्रोमें धन लगानेका मनोरथ करणा जोकी धन पेदा करते आरंभ करणा पडे उसकी निवृत्तिके वास्ते विवेकी आदमीकों चाहिये सो नित्त बडे २ मनोरथ करता रहे कारण मनुष्यकी बुद्धि जेसी अपणी तकदीर होय उसही तरेकी काम करणेका यत्न करताहे धन काम उर यश ये तीनोका कीया हुवा यत्न वाजेवखत निष्फल होताहे लेकिन् धर्म कांम करणेके मनोरथ खाली नही जातेहे जीर्ण सेठकी तरे जब धनकी वृद्धि होय तब धर्मकामकेवास्ते पहली कीया हुवा मनोरथ सफल करणा चाहीये क्योंके उद्यमका फल धन धनका फल सुपात्रोकों दान देणा जो अगर सुपात्र दांन नही करे तो लक्ष्मी उर उद्यम दोनों दुर्गतिका कारण होताहे सुपात्रोके दानसें धर्म धन कहलाताहे धर्ममें लगाइ जाय सो धर्म ऋद्धि भोगमें लगाइ जाय सो भोग ऋद्धि उर जो इन दोनोंके काममें नही लगे उर अनर्थ पेदा करे वो पापऋद्धि कहलातीहे पूर्वभवके करे पापसें अथवा आगूं होणेवाले पापसें पाप ऋद्धिजीव पाताहे इसपर दृष्टांतहे वसंतपुर नगरमें एक

ब्राह्मण एक रजपूत एक वणिया एक सुनार ए च्यारजणे आपसमे दोस्तथे वो च्यारोंही धन कमाणे परदेस चले रातकूं एक उद्यानमें रहे उस जगे रातकूं दरखतके सोनेका पोरसा लटकता देखा च्यारोंमेंसें एक बोला धनहे तब स्वर्ण पोरसा बोला धन अनर्थका मूलहे तब तीनोंनें तो उसका लालच छोरू दिया लेकिन् सुनार बोला नीचे गिर तव स्वर्णपुरप नीचे गिरा तव सुनार उसकी अगली काटली वाकीके स्वर्णपोरसेंको खड्डेमें डालदिया पीछे उन च्यारजणोंमेसें दो अदमी खानपान लाणेकों गांममें गये ओर दोजणे बाहिर रहे तब गाममें गये सो जहर मिलाके खांनपांन लाये मनमें विचारा वो दोनों इसके खाणेसें मरजायगें तब पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा उधर उन दोनोने विचार कीया वो जब सहरमेंसे आवेगें तब उनोकों तलवारसें मारडालेगें तब ये पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा आखिरकों उन दोनोंकों उनोनें शस्त्रसें मारदिया ओर वो दोजणोनें उनोकों मारके मिठाइ खाइ सो वोभी दोनु मरगये ये पापऋद्धि कहलातीहे इसवास्ते हमेसां देव अरिहंतका पूजन अन्नदान वगेरह

पुण्य तथा कोइ वखत पर संघ पूजा साधर्मी वात्सल्य वगेरह धर्मकाम करके लक्ष्मीकूं सुक्षेत्रमें लगाणा हमेसा थोडा २ पुन्य करणाही चहीये थोडा होय तो थोडेमेसे थोडाही लगाणा धर्मके काममें ढील नही करणी ज्ञानवानकी इर्ष्यां न करणी द्रव्य पैदा करणेका उद्यम हमेसां करणा वणिया वेश्या कवि भट्ट चोर ठग ब्राह्मण इतने अदमी जिसदिन कुछ नही मिले वो दिन निष्फल मांनतेहे थोडी आवंदमें उद्यम छोडणा नही माघ काव्यमें लिखाहे जो अदमी थोडीसी संपदा मिलणेसेंही अपणी अच्छी दशा मां न लेवे उसका देवभी अपणा कर्त्तव्य कीया हुवा जाणके संपदा वधाता नहीहे ज्यादा लोभभी नहि करणा क्योंके अति लोभके वस सागरसेठ समुद्रमें डूबके मरगया हदविना तृष्णाका धन तो मिलणाहे नही कंगाल अदमी अगर चक्रवर्त्तिपद चाहे तो क्या मिलसकताहे भोजन वस्त्र वगेरह तो मिलभी सकताहे जेसी अपणी योग्यता होय वेसीही इच्छा करणी क्योंके अपणी तकदीरकों पेसतर पिछाण लेवे लोभ एसी बुरी बलायहे सो ज्यों ज्यों लाभ होता जाताहे त्यों त्यों बढ-

ताही जाताहे जीवण मल नाहटेके अफीमके फाटकेमें नगद असी हजार रुपे पासमें होगये तब मोहनलाल गोलछेने कहा अब जीवणमल फाटकेका सट्टा छोडकर जेपुरमें सराफी दुकान करले सो लखपती जेसा रुजगार खरच चलता रहेगा जीवणमल बोला लाख रुपया होणेसें फाटका छोडूंगा आखिरकों यह हाल हुवा सो वो सब धन बरबाद होकर हजारो रुपेका करजदार होकर आखिरकों बरबाद होगया ये बात मेंनें प्रतक्ष देखीहे जो अदमी आस्याका दास भया वो जगतका दास होजाताहे ओर जिसनें तृष्णा आसा जीतली उसनें जगत् जीतलिया गृहस्थोंकों चाहीये सो धर्म अर्थ काम इन तीनोकों आपसमें बाधा नही पोहचे एसा सेवन करणा अपणे २ वखतपर सब करणा निकेवल विषयसुखमें मग्न एसा कोण आदमीहे सो आपदामें नही पडताहे विषय मग्न आदमीके धनकी धर्मकी शरीरकी लोक लाजकी नुकशानी होतीहे धर्म ओर काम दोनोकों छोडके जो कष्ट करके धन पैदा करतेहें वो धन दुसरेही भोगतेहें जेसे सिंह हाथीकूं मारकर फकत पापकाही भागी होताहे अर्थ

पुण्य तथा कोइ वखत पर संघ पूजा साधर्मी वात्सल्य वगेरह धर्मकाम करके लक्ष्मीकूं सुक्षेत्रमें लगाणा हमेसा थोमा २ पुन्य करणाही चहीये थोमा होय तो थोमेमेसे थोमाही लगाणा धर्मके काममें ढील नही करणी भाग्यवानकी इर्ष्या न करणी द्रव्य पैदा करणेका उद्यम हमेसां करणा वणिया वेश्या कवि भट्ट चोर ठग ब्राह्मण इतने अदमी जिसदिन कुछ नही मिले वो दिन निष्फल मांनतेहे थोमी आवंदमें उद्यम छोमणा नही माघ काव्यमें लिखाहे जो अदमी थोमीसी संपदा मिलणेसेंही अपणी अच्छी दशा मां न लेवे उसका देवभी अपणा कर्त्तव्य कीया हुवा जाणके संपदा वधाता नहीहे ज्यादा लोभभी नहि करणा क्योंके अति लोभके वस सागरसेठ समुद्रमें डूबके मरगया हदविना तृष्णाका घन तो मिलणाहे नही कंगाल अदमी अगर चक्रवर्तिपद चाहे तो क्या मिलसकताहे भोजन वस्त्र वगेरह तो मिलभी सकताहे जेसी अपणी योग्यता होय वेसीही इच्छा करणी क्योंके अपणी तकदीरकों पे सतर पिछाण लेवे लोभ एसी बुरी बलायहे सो ज्यों ज्यों लाभ होता जाताहे त्यों त्यों बढ-

ताही जाताहे जीवण मल नाहटेके अफीमके फाटकेमें नगद असी हजार रुपे पासमें होगये तब मोहनलाल गोलछेने कहा अब जीवणमल फाटकेका सट्टा छोडकर जेपुरमें सराफी दुकान करले सो लखपती जेसा रुजगार खरच चलता रहेगा जीवणमल बोला लाख रुपया होणेसें फाटका छोडूंगा आखिरकों यह हाल हुवा सो वो सब धन वरवाद होकर हजारो रुपेका करजदार होकर आखिरकों वरवाद होगया ये बात मेनें प्रतक्ष देखीहे जो अदमी आस्याका दास भया वो जगतका दास होजाताहे अंर जिसनें तृष्णा आसा जीतली उसनें जगत् जीतलिया गृहस्थोंकों चाहीये सो धर्म अर्थ काम इन तीनोंकों आपसमें बाधा नही पोहचे एसा सेवन करणा अपणे २ वखतपर सब करणा निकेवल विषयसुखमें मग्न एसा कोण आदमीहे सो आपदामें नही पडताहे विषय मग्न आदमीके धनकी धर्मकी शरीरकी लोक लाजकी नुकशानी होतीहे धर्म अंर काम दोनोकों छोडके जो कष्ट करके धन पैदा करतेहें वो धन दुसरेही भोगतेहें जेसे सिंह हाथीकूं मारकर फकत पापकाही भागी होताहे अर्थ

उर काम इन दोनोंकों छोमके जो फकत धर्म-ही सेवन करतेहें वो साधू मुनिराजकाही धर्महे गृहस्थका नही गृहस्थोकूंभी चाहीये सो धर्मकूं बाधा उपजायकर अर्थकूं उर कामकूं सेवन नही करणा जेसे खेत वोणेकूं रखे हुये बीजोकों जो जाट खाजाताहे एसें अधर्मी पुरषका अंतमें कल्याण नही होताहे जो अदमी परलोक नही विगामे उर इस लोकका सुख भोगे वोही सुखी कहलाताहे तेसेंइ धनकूं विगामकर धर्मकूं उर कामकूं सेवन करताहे वो करजदार होजाताहे तेसेंइ कामकूं बाधा पोहचायकर धर्मकूं उर धनकूं सेवन करताहे उसके सुखका लाभ नही होताहे इस मुजब क्षणिक थोमी देरके विषयसुखके विषे आसक्त हुये मनुष्य उर मूलकूं खानेवाला उर कंजूस इन तीनोके धर्म अर्थ काममें बाधा पहूंचतीहे जो अदमी कुछभी जमा नही करे जो कुछ मिले वोही विषयके ऊलफतमें खरच देवे वो क्षणिक विषयसुखी कहलाताहे जो आदमी अपने बापदादेका कमाया धन अन्यायसें खाजाय वो बीज अर्थात् वो मूल भक्षक कहलाताहे उर जो अदमी अपने जीवकूं कडूंवेको नोकर चाक-

रकूं दुख देकर धन जमा करे वो कंजूस कृपण कहलाताहे योग्य ठिकाणे खरच नही करे वोभी कृपण कहलाताहे इसमें क्षणिक विषयासुखमें आसक्त उर मूल भक्षक ये दोनोंही धन खोणेवालेहे इय दोनोंही पीछे पछतातेहे कृपणकी जमा पराइ कहलातीहे राजा भाइबंध या जमीन या चोर वगेरे लोक कंजूसका धन खातेहें उसका धन धर्ममें अथवा काममें लगता नहीहे जिसके धनके भाइबंध मालक होय चोर लूंटे किसीभी बलसें राजा ले लेवे अंगारमें जल जावे जलमें डूबजाय जमीनमें रहजाय खोटी चाल चलणमें उडादेवे एसा जो धन बहोतोके तावेमें रहेहुयेकूं धिकार हो जेसें माल जादी उरत अपणे पुत्रकों लाड लडावते हुये पतिकूं हसतीहे तेसें मोत शरीरके रक्षककूं हसतीहे जमीनहे सो धनके रक्षककूं हसतीहे कीडियोका जमा कीया हुवा धान मखीयोका जमा कीया हुवा महत कंजूसका जमा कीया हुवा धन ये तीनोही पराये काममें आतेहे इसवास्ते गृहस्थकूं चाहीये सो धर्म अर्थ उर कांम इन तीनोंको बाधा नही पोहचावे जो कर्मयोगमें बाधा पडे तो इस मुजब हिफाजत

करणा कामकी जो गवाइ नही मिले तो धर्म-
की उर धनकी रक्षा करणी कारण इन दोनो-
की रक्षा करणेवालोकूं विषयसुख मिलनी सक-
ताहे तेसेंइ अर्थ उर कांम दोनोंकी-जोगवाइ
नही मिले तो घर्म तो जरूरही करणा कारण
धनकी जरु धर्महे ठीकरेमें नीख मांगकरकेनी
अपणी आजीविका चलाता होय उर धर्म क-
रता जाय तो मनमें विचारणाके में धनवानहूं
जो मनुष्य जन्म पायकरके इन तीनोका सा-
धन नही करताहे उसकी ऊमर पशुकी तरे
निकम्मी जातीहे जितनी धनकी आवंद होय
उसमें एक नाग जमा करणा डुसरा उर चोथा
हिस्सा व्यापार उर व्याजमें लगाणा तीजे नाग
चोथे नाग अपणे उपन्नोगमें तथा धर्मकाममें
खरचणा चोथेका चोथा हिस्सा कुटंब पोषणमें
लगाणा केइयक कहतेहे पेदासका ज्यादा
हिस्सा आधेसें धर्ममें खरचणा उर बाकी जो
पेदास बचे उसमें शंसारके सब काम चलाणा
केइयक कहतेहे ऊपर लिखी पहली बाबत
गरीब गृहस्थकेवास्तेहे डुसरी कलम धनवान
बमेके वास्तेहे लेकिन् धर्मके आगे सब काम
तुच्छहे जीवत उर लक्ष्मी किसकूं वल्लन नहीहे

लेकिन् वखत पडनेपर सत्पुरुष दोनोंकों तिनखे बराबर गिणतेहे १ यशका फेलाव करणा होय २ दोस्ती करणी होय ३ अपणी प्यारी स्त्रीके वास्ते कुछ कांम होय ४ अपणे निर्धनभाइबंधुओंकों सहाय करणा होय ५ धर्मकाम करणा होय ६ विवाह करणा होय ७ दुस्मनका क्षय करणा होय ८ अथवा कोइ संकट आगया होय इत्यादिक कांममें स्याणे आदमी धन खरच करणेकी गिणती रखते नहीहे चतुर आदमीका एक बदामभी अगर खोटे रस्ते चला जाय तो हजार रुपया गया एसा समझतेहे वो अदमी अच्छे रस्ते आतेहे एसा आदमी अगर क्रोडों रुपया खुल्ले हाथसें खरच करे तोभी धन खूटता नही इसपर एक दृष्टांतहे एक सेठके बेटेकी बहू नइ परणी हुईथी उसनें एकदिन अपणे सुसरेकूं चराकके अंदरसें नीचे गिरे हुये तेलके बुंदसे अपणी जूती चुपडते देखकर दिलमें विचारणे लगीके मेरा सुसरा कंजूसहे यह बडी कसरहे तब उसने पारख करणेकूं एसा वाहना कीया के मेरा सिर दुखताहे एसा कहती हुइ रोणे लगी तव सेठ बहोतही इलाज करवाया लेकिन् जांणकर करे

थिर होगइ लक्ष्मीकी एसी बात सुणके सेठने विचार कीया कदास मेरा व्रतमें भंग न पमे एसें मरसें नगर छोम बाहिर चलागया इतनेमें विना पुत्र नगरीका राजा मरगया उसके पिछामी मंत्रीयोने पाट हस्तीकी शुंममे अभिषेक कलस दीया जिसपर माले वोही राजा आखिरकों उसनें विद्यापति सेठका अभिषेक कीया तब देवतोंने आकासवाणी करी हे सेठ यह राज्य तो तुजें करणाही होगा तब सेठ राज्य सिंहासणपर ऋषभ देव अरिहंतकी मूर्तिकूं बेठायकर आप राजकाज चलाया अनुक्रमसें पांचमें भव मोक्ष गया न्यायसें धन कमाणेवालेका कोइ सक नही रखताहे जगे २ तारीफ होतीहे प्राये करके नुकशान नही होताहे सुख समाधि दिन २ वढते जातीहे इसवास्ते न्यायवंतपणेका धन दोनों भवमें सुखदाईहे धर्मी पुरुष शुद्ध चलणसें धीरजसें वर्त्तावा करतेहे लेकिन् पापी अदमी कुकर्मी होणेसें सब जगे शंकासें वर्त्तावा रखताहे इसपर दृष्टांतहे देव उर यश ये दोय नांमके सेठ वहुत प्रीतिसें साथ २ फिरतेथे कोइ सहरमें रस्तेमें पमा हुवा रत्नसें जमा हुवा कुंमल उन दोनोनें देखा देव तो

श्रावकथा इसवास्ते पराया धन लेणेका नियम होणेसें पीछा घिरा यशभी उसके संग पीछा घिरा लेकिन् मनमें विचारणे लगा पडी चीज उठानेमें क्या दोषहे तब देव सेठकी नजर चुकायकर कुंभल उठा लीया फेर मनमें विचारणे लगा मेरा मित्र देव हे सो धन्यहे जिसमें केसीक निर्लोभता गुणहे लेकिन् केइयक दिन ठहरेबाद इनमें उसकूं आधीपत्ती देउंगा एसा विचार यससेठ उस कूंभलके धनसें बहोत किरीयाणा खरीद किया अनुक्रमसें दोनुं अपणे सहरमें आये पांती करतीवखत ज्यादा किरियाणा देखके देवसेठ इसका कारण पूछा तब उस यशने सब हकीगत कही तब देव सेठ बोला अन्यायसें पेदा कीयां हुवा ये धन मेरे कुछ कामका नही जेसें खट्टी कांजीसें दूधका नांस होय तेसें इसके संग अच्छा धनभी जाते रहताहे एसा कहकर ज्यादा किरियाणा दूरकर अपणे हक्कका किरियाणा उसमेंसें लेलिया यस वो सब किरियाणा ले जाकर अपणी दुकानमें रखा रातकूं चोर वो सब किरियाणा लूंटके लेगये प्रभात सहरके [illegible] । आये किरियाणा नभी बजारमें [illegible] उत[illegible]

तेजी आइ सो देवसेठके मालमें चोगुणा लाभ होगया अन्यायके धनका एसा हाल देखकर श्रावक व्रत यशनेभी अंगीकार करा इस तरेसें न्यायसें कमाया धनका अगर दांनभी लीया जाय तो लेणेवालेके बहोत वढोतरी होतीहे इसपर दृष्टांतहे चंपा नगरीमें सोमनामे राजा था उसनें अच्छे पर्वपर दांन करणेकूं बहोत धन जमा कीया तद पीछे अपणे प्रधानकों पूछा अहो मंत्री दांन लेणेवाला सुपात्र चाहीये तब मंत्री बोला इस नगरीमें एक ब्राह्मणहे लेकिन हे स्वामी न्यायोपार्जित धन मिलणा मुसक्लिहे तेसेंइ सुद्धमनवाला उर योग्य उर गुणवान एसा पात्र ये दोनोका योग मिलना तो बहो-तही कठणहे तब सोमराजा न्यायसें धन कमाणेकी इच्छासें वेप बदलकर कोइ नही पहचाणे इस मुजब वणियेकी दुकानपर जाके मजूरी करके आठ मोहरे कमाइ पर्व आणेसें सब विप्रोकों निहुंता दीया उस सुपात्रकों न-हुंता देणे मंत्रीकूं भेजा तब वो ब्राह्मण बोला हे मंत्रवी जो ब्राह्मन लोभके वश राजासें दांन ले वो तमिस्रा घोर नर्कमें पड़के दुखी होय राजाका दांन सदृतमें जहर मिला जेसा हे, [illegible]

श्रावकथा इसवास्ते पराया धन लेणेका नियम होणेसें पीछा धिरा यशभी उसके संग पीछा धिरा लेकिन् मनमें विचारणे लगा पमी चीज उठानेमें क्या दोषहे तब देव सेठकी नजर चुकायकर कुंभ उठा लीया फेर मनमें विचारणे लगा मेरा मित्र देव हे सो धन्यहे जिसमें केसीक निर्लोभता गुणहे लेकिन् केइयक दिन ठहरेबाद इनमें उसकूं आधीपत्ती देउंगा एसा विचार यससेठ उस कूंभके धनसें बहोत किरीयाणा खरीद किया अनुक्रमसें दोनुं अपणे सहरमें आये पांती करतीवखत ज्यादा किरियाणा देखके देवसेठ इसका कारण पूछा तब उस यशने सब हकीगत कही तब देव सेठ बोला अन्यायसें पेदा कीयां हुवा ये धन मेरे कुछ कामका नही जेसें खट्टी कांजीसें दूधका नांस होय तेसें इसके संग अच्छा धनभी जाते रहताहे एसा कहकर ज्यादा किरियाणा दूरकर अपणे हक्कका किरियाणा उसमेंसें लेलिया यस वो सब किरियाणा ले जाकर अपणी दुकानमें रखा रातकूं चोर वो सब किरियाणा लूंटके लेगये प्रभात सहरके व्यापारी किरियाणा नही बजारमें इसवास्ते ७त

चार भंग होतेहें जिसमें पहला भेद एसें हे यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें उत्कृष्ट देवतापणा युगलियोमें मनुष्यजन्म उंर सम्यक्त वगेरेका लाभ होताहे अंतमें मोक्षसुख होताहे जेसे धन्नासार्थवाहने घीका दांन देणेसें साधूउंको तेरमे भवमें ऋषभदेव तीर्थंकर हुवा शालिभद्र क्षीरके दांनसें हुवा २ न्यायसें पेदा कीया धन उंर कुपात्रोंको देणा ये दूसरा भंगहे यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें इससें कोइ २ भवमें देवता लाभ विषयसुखका होताहे तोभी अंतमें फल कम्वे लगतेहें इस जगे लाख ब्राह्मनोकों जीमाणेवाले ब्राह्मनकी तरे वो दृष्टांत एसाहे एक ब्राह्मन हमेसां ब्राह्मनोकों जीमाते २ लाख ब्राह्मन जीमाया उंर विषयसुख भोगता हुवा मरके भद्रजातीका सेचनक नामका हाथी हुवा उंर उसही जगे ब्राह्मणोकों जीमाये वाद जो अन्न वचता सो एक गरीब दलद्री ब्राह्मन सुपात्रोकों दान देदेता वो गरीब ब्राह्मन उहांसें मरके सो धर्म देवलोक गया उहांका सुख भोगके आयुष्य पूर्णकर श्रेणिक राजाके नंदिखेण नामका पुत्र हुवा उसकूं देख सेचनक हाथीकू जातिस्मरण ज्ञांन हुवा

तपर चाहे पुत्रका मांस खावे सो श्रेष्ठ लेकिन् राजापास दांन नहि लेणा चक्रवर्त्तपास दांन लेणा दस हिंसा समान ध्वजकेपास दांन लेणा हजार हिंसा समान राजापास दांन लेणा सो दश हजार हिंसा समान एसा स्मृतियोंका तथा पुराणोका वचनहे इसवास्ते में राजदांन नही लेउंगा तब मंत्री बोला हे साक्षात् ब्रह्ममूर्ति आपकूं निजन्यायसें पेदा किया धनका दांन देगा इसवास्ते उसमें कुछ दोष नही इत्यादिक वचनोसें समझायकर मंत्री राजाकेपास लाया राजा उसकूं निजासन दीया पगधोकर विनयसें पूजा करी वो आठ मोहर दक्षिणा तरीके कोइ नही देखे इस मुजब मूठीमें दांन दिया दुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकूं देख मनमें गुस्से हुये राजाने इसकूं कोइ सार पदार्थ देदीया पीछेसे राजा बहोतसा धन दुसरे ब्राह्मनोकों देदेकर खुस कीया राजका दीया धन उस विप्रोके थोरे दिनोमें खूट गया सब ब्राह्मनोके लेकिन् वो आठ मोंहरे तो खाते खरचते जन्मभर उस ब्राह्मणके अखूट होगया जेसें खेतमें बीजवृद्धि होय तेसें न्यायसें पेदा कीया धन ओर सुपात्र दांन इसके

चार भंग होतेहैं जिसमें पहला भेद एसें है यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें उत्कृष्ट देवतापणा युगलियोमें मनुष्यजन्म ओर सम्यक्त वगेरेका लाभ होताहे अंतमें मोक्षसुख होताहे जेसे धन्नासार्थवाहने घीका दांन देणेसें साधूओंको तेरमे भवमें ऋषभदेव तीर्थंकर हुवा शालिभद्र क्षीरके दांनसें हुवा २ न्यायसें पेदा कीया धन ओर कुपात्रोंको देणा ये दूसरा भंगहे यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें इससें कोइ २ भवमें देखता लाभ विषयसुखका होताहे तोभी अंतमें फल करूवे लगतेहैं इस जगे लाख ब्राह्मनोकों जीमाणेवाले ब्राह्मनकी तरे वो दृष्टांत एसाहे एक ब्राह्मन हमेसां ब्राह्मनोकों जीमाते २ लाख ब्राह्मन जीमाया ओर विषयसुख भोगता हुवा मरके भद्रजातीका सेचनक नामका हाथी हुवा ओर उसही जगे ब्राह्मणोकों जीमाये वाद जो अन्न वचता सो एक गरीब दलद्री ब्राह्मन सुपात्रोंकों दान देदेता वो गरीब ब्राह्मन उहांसें मरके सो धर्म देवलोक गया उहांका सुख भोगके आयुष्य पूर्णकर श्रेणिक राजाके नंदिखेण नामका पूत्र हुवा उसकूं देख सेचनक हाथीकू जातिस्मरण ज्ञांन हुवा

तपर चाहे पुत्रका मांस खावे सो श्रेष्ठ लेकिन् राजापास दांन नहि लेणा. चक्रवर्त्तपास दांन लेणा दस हिंसा समान ध्वजकेपास दांन लेणा हजार हिंसा समान राजापास दांन लेणा सो दश हजार हिंसा समान एसा स्मृतियोंका तथा पुराणोका वचनहे इसवास्ते में राजदांन नही लेउंगा तब मंत्री बोला हे साक्षात् ब्रह्ममूर्ति आपकूं निजन्यायसें पेदा किया धनका दांन देगा इसवास्ते उसमें कुछ दोष नही इत्यादिक वचनोसें समझायकर मंत्री राजाकेपास लाया राजा उसकूं निजासन दीया पगधोकर विनयसें पूजा करी वो आठ मोहर दक्षिणा तरीके कोइ नही देखे इस मुजब मूठीमें दांन दिया डुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकूं देख मनमें गुस्से हुये राजाने इसकूं कोइ सार पदार्थ देदीया पीछेसे राजा वहोतसा धन डुसरे ब्राह्मनोकों देदेकर खुस कीया राजका दीया धन उस विप्रोके थोडे दिनोमें खूट गया सब ब्राह्मनोके लेकिन् वो आठ मोंहरे तो खाते खरचते जन्मभर उस ब्राह्मणके अखूट होगया जेसें खेतमें बीजवृद्धि होय तेसें न्यायसें पेदा कीया धन उर सुपात्र दांन इसके

सें खरीदकर क्रोमो सोनइये लगाकर मंदिर बनवाया जिस मंदिरकों तोमणेंको उरंगजेब मुसलमीन बादशाह चढा जबके मंदिरकी कोरणीकी रमलक देखी तब हाथमें जो गुरजथा सो बूटगया उर कहणेलगा अय परवर दिगार में इस अइमारतको हरगिज नही तोमसकता करवाणेवाले उर कारीगरोकों कहांतक खूबी दीजाय बमे २ अंगरेज उस मंदिरकी छिब देखकर यह कहतेहे अगर सब मुल्कका धन इनाममें दीया जाय तोजी इस जिन मंदिरकी नकल नही कोइ बणासकता तो अनेक पापारंजसे अनुचित काम करके जमा कीया धन धर्मखाते नही लगावे तो इस जवमें अपयश उर परजवमें नरक पमणा होताहे जिसपर मम्मणसेठका दृष्टांत जाणणा ४ अन्यायसें पेदा कीया धन उर कुपात्र दांन यह चोथा जगहे जिसकरके मनुष्य धिकारणे लायक होतेहें विवेकीयोकूं जरूर ठोमणा चाहीये जेसें गायकूं मारके कउश्रेकूं पोपणा जेसें अन्यायके कमाये धनसें श्राद्ध करतेहें उस कर्मसे चंमाल जिल्ल एसी हलकी जातमें जन्म लेणा होताहे जेसें विद्यमानकालमें तेरा पंथीमतके ढूंढक गुरु

तोभी अंतमे मरके पहली नरकगया इसवास्ते सुपात्र दांनही श्रेष्ठहे ३ अन्यायसें पेदा कीया हुवा धन ओर सुपात्र दांन इस मुजब तीसरा भंग होताहे अछे क्षेत्रमें हलका बीज वोणेसें जेसा अंकूरा पेदा होताहे लेकिन अनाज पेदा होता नही तिसतरे इससें सुखका संबंध होताहे जिसकरके राजा व्यापारी ओर बहोत आरंभसे धन पैदा करणेवाले लोकोके वो मानने योग्य होताहे यह लक्ष्मीका सघासकी लकडीकी तरे सार विगरकी ओर रस विगरकी होकरके शात क्षेत्रोमें वोयकरके ऊखके जेसी बणाइ जेसें खलगायकूं देणेसें दूधरूप होजाताहे ओर दूध सापकूं पिलाणेसें जहर होजाताहे इसीतरे सुपात्र कुपात्रके न्यारे २ फल होतेहे स्वातिनक्षत्रका जल सांपके मूंमें गिरणेसें जहर होताहे ओर सीपमें गिरणेसें मोती केलेमें कपूर अब बुद्धिमान विचार लेवे वोही स्वातिनक्षत्र ओर वोही जल लेकिन् पात्रके फेरफारसें कितना तफावतहे इस विषयपर खरतर गच्छी श्रीवर्द्धमानसूरिका उपदेशित आबू पहाडपर विमलमंत्री राजकाजसे धन कमाकर चोखूंटे कोमों रुपया देकर अचलगढकी जमीन ब्राह्मणो-

सें खरीदकर क्रोमो सोनइये लगाकर मंदिर बनवाया जिस मंदिरकों तोमणेंको उंरंगजेब मुसलमीन बादशाह चढा जबके मंदिरकी कोरणीकी रमन्नक देखी तब हाथमें जो गुरजथा सो बूटगया उंर कहणेलगा अय परवर दिगार में इस अइमारतको हरगिज नही तोमसकता करवाणेवाले उंर कारीगरोकों कहांतक खूबी दीजाय बके २ अंगरेज उस मंदिरकी छिब देखकर यह कहतेहे अगर सब मुल्कका धन इनाममें दीया जाय तोजी इस जिन मंदिरकी नकल नही कोइ बणासकता तो अनेक पापारंजसे अनुचित काम करके जमा कीया धन धर्मखाते नही लगावे तो इस जवमें अपयश उंर परजवमें नरक पमणा होताहे जिसपर मम्मणसेठका दृष्टांत जाणणा ४ अन्यायसें पेदा कीया धन उंर कुपात्र दान यह चोथा जंगहे जिसकरके मनुष्य धिकारणे लायक होतेहें विवेकीयोकूं जरूर ठोमणा चाहीये जेसें गायकूं मारके कउत्र्वेकूं पोषणा जेसे अन्यायके कमाये धनसें श्राद्ध करतेहे उस कर्मसे चंमाल जिल्ल एसी हलकी जातमें जन्म लेणा होताहे जेसें विद्यमांनकालमें तेरा पंथीमतके ढूंढक गुरु

गद्दी धरके मरणेपर उनके मतके उस बाल
ज़ारो रुपे जमाकरके ढेढ थोरी नंगीयोंकों दे
उच्छालकर २ के उर मनमें सुपात्रोंकी न
समजके फूलतेंहे जेपुरमें जीतमलके पिछा
वीस हज़ार लगाये सिरदार सहरमें मघरा
के पिछाम्मी वीस हजार लगाये उर सात क्षे
जो उचित महापुन्यरूपहे उसमें एक पेसा
नहि लगातेहें पुन्यनिखेधतेहे धन्यहे इ
समजकूं जिन मंदिरोकी कुछ्भी सार संभा
नहि करतेहे न्यायसें उपार्जन कीया धन सु
पात्रोकों दान दे तो कल्याण होताहे लेकि
अन्यायसें कमाये धनसें कल्याण चाहतेहे सो
कभी होणा नही वो कालकूट जहर खाणे जे
साहे अन्यायसें धन कमाणेवाले गृहस्थ अ
न्याई लभाइखोर अहंकारी उर पापकर्मी हो
ताहे जेसे विक्रम संवत तीनसेमें रांका सेठका
होणेकी कथा श्राद्धविधीमें लिखीहे वेसा अ
न्यायसें धन जमा कीया अंतमे दुखदाइ हो
ताहे साधुउंका आहार विहार व्यवहार उर
वचन ये च्यारोंही शुद्ध होताहे सो दुनिया
देखतीहे लेकिन् गृहस्थका तो एक व्यवहारही
शुद्ध देखतेहे व्यवहार शुद्ध होय तो सब धर्म

काम सफल होताहे श्राद्धदिनकरमेंभी लिखाहे व्यवहार शुद्धधर्मका मूलहे कारण व्यवहार शुद्ध होय तब कमाया धन शुद्ध होताहे उर धन शुद्ध होय तब आहार शुद्ध होय अहार शुद्ध होय तब देह शुद्ध होताहे उर देह शुद्ध होय तब धर्मके योग्य होताहे उर धर्मकृत्य सफल होताहे व्यवहार शुद्ध विना सब निर्फलहे व्यवहार शुद्ध नही रखे वो अदमी धर्मकी निंदा करातेहें उर धर्मकूं निंदा कराणेवाला दुर्लभ बोधि होताहे इसवास्ते एसे यत्नसें एसा काम करणा जिस्सें मूर्खलोक निंदा नही करसके आहार माफक शरीरकी प्रकृति वंधतीहे जेसें बालक ऊमरमें घोमा भेंसका दूध पीताहे वो तो जलमे अच्छी तरेसें पमे रहतेहे उर गायका दूध पीणेवाले जलसें घोमे दूर रहतेहे तेसेंइ बालक जेसा आहार करताहे वेसाही उसकी प्रकृति होतीहे इसवास्ते विवहार शुद्ध रखणा तेसेंही देसविरुद्ध कामकूं छोमणा जेसें सिंधदेसमे खेती करणी देश विरुद्धहे तेसेंइ लाट जो भरु अच्छका प्रांत देस जिसमें दारू सराप निपजाणाभी देसविरुद्धहे इस मुजब उरभी अनेक देशोंमें अनेक वात-

गही घरके मरणेपर उनके मतके उस बाल ह-
जारो रुपे जमाकरके ढेढ थोरी भंगीयोंकों देतेहे
उच्छालकर २ के उर मनमें सुपात्रोंकी भक्ति
समजके फूलतेहे जेपुरमें जीतमलके पिछाडी
वीस हजार लगाये सिरदार सहरमें मघराज-
के पिछाडी वीस हजार लगाये उर सात क्षेत्र
जो उचित महापुन्यरूपहे उसमें एक पेसाभी
नहि लगातेहें पुन्यनिखेधतेहे धन्यहे इस
समजकूं जिन मंदिरोकी कुछभी सार संभाल
नहि करतेहे न्यायसें उपार्जन कीया धन सु-
पात्रोकों दान दे तो कल्याण होताहे लेकिन
अन्यायसें कमाये धनसें कल्याण चाहतेहे सो
कभी होणा नही वो कालकूट जहर खाणे जे-
साहे अन्यायसें धन कमाणेवाले गृहस्थ अ-
न्याई लभाइखोर अहंकारी उर पापकर्मी हो-
ताहे जेसे विक्रम संवत तीनसेमें रांका सेठका
होणेकी कथा श्राद्धविधीमें लिखीहे वेसा अ-
न्यायसें धन जमा कीया अंतमे दुखदाइ हो-
ताहे साधुउंका आहार विहार व्यवहार उर
वचन ये च्यारोंही शुद्ध होताहे सो दुनिया
देखतीहे लेकिन गृहस्थका तो एक व्यवहारही
शुद्ध देखतेहे व्यवहार शुद्ध होय तो सब धर्म

दोय राजाउंके आपसमें तकरार चालती होय उहां धाड़ वगेरे पड़णेसें रस्ता बंध होय अथवा पार नही पड़े एसे बड़े जंगलमे समी सांझ वगेरह भयंकर वखतमें विना सहाय अथवा विनाताकत जांणेसें प्राणकी अथवा धनकी हानि होय अथवा डुसरा कोइ अनर्थ सांमने आवे सो काल विरुद्ध कहलाताहे अथवा फागण महीनेवाद तिल पीलणा तिलका व्यापार करणा अथवा तिल खाणा वर्षातकी मोसममे चंदलीया वगेरे पत्तोका साग खाणा जहां वहोत जीवाकुल जमीन होय उसरस्ते गाड़ी गाड़ा असवारी चलाणा एसा बड़े जुलम करणा सो काल विरुद्ध कहलाताहे राजविरुद्ध नहि करणा सो इस तरेसें राजा प्रधानादिकोका ढगुण निकालणा राजमाने एसा मंत्री वगेरेका आदर सत्कार नहि करणा राजासें वे मुख एसें आदमीकी सोहवत करणी वैरि डुस्मनोके ठिकाणे लोभसें जाणा वैरि डुस्मनोके ठिकाणेसें आये हुये अदमीके संग वर्त्ताव रखणा राजाकी महरबानीहे एसा समझ राजाके करे हुये कांममें फेरफार करणा सहरमें आगेवान जो लोक होवे उनोंसें विपरीत चलणा

का रुजगार देसविरुद्ध जो श्रेष्ठ लोकोनें मना कीयाहे सो नहि करणा जातिकुलवालोंमें जो रीत वंधीहे उससें विरुद्ध नहि करणा जेसें ब्राह्मण होकर मद्य नहि पीणा तिल लूंण वगेरे- का रुजगार नहि करणा उनोके शास्त्रमें तिल- का रुजगार करणेवाले ब्राह्मणकूं नीच उर शुद्र लिखाहे परभवमें घाणीमें पिली जताहे कुलकी मरजादा मुजब शोलंकी राजपूतोके तथा सीसो दिया राणाके मदरा पीणा मनाहे परदेसवाले लोकोके सामने उनके देसकी निंदा करणी वोभी देसविरुद्धहे अब काल विरुद्ध नहि करणा सो लिखतेहे ठंडकालेमें हिमालय पर्वतके आसपास जहां बहोत ठंड पडती होय जहां गरमीकी मोसममें मारवाड बीकानेर आदि प्रांत देशोमें जहां बिलकुल जल नही उर वर्षातकी मोसममें मालवा दक्षण प्रमुख देशोमें जहां वहोत कादा बहोत पाणी दरियावके कांठे कोकण देशमें विना अपणी अच्छी शक्ती विगर किसीके सहाय विगर नही जाणा जहां बहोतकाल होय कालकावासाप्रायें इन देशोमें रहताहे ॥

दुहा—पगपूगलधडमेडते वासोबीकानेर ॥
भूलोचकोमालवे ठावोजेसलमेर ॥ १ ॥

अपणे मालकके साथ निमक हरामी करणी यह सब बाते राजविरुद्ध कहलातीहे इसके फल बहोत बुरेहे जेसें भुवनभानूकेवलीका जीव पूर्वभवमे रोहणीथी वो बडी विचारवाली नेष्टावाली भेर पढी हुईथी लेकिन् राजाकी राणीका वृथा कुशील कलंक बोलणेसें राजा उस साहूकारकी बेटी रोहणीकी जीभ काटकर देससें निकालदी दुखी होकर रोहणी अनेक भवोमें जीभ कटानेका दुख पाया इसवास्ते राजविरुद्ध कांम नही करणा लोककी तेसेंइ विशेष करके गुणीजणोकी निंदा करणी भेर आपणे मूंसे अपणी तारीफ करणी ये दोनोंही लोकविरुद्ध कहलाताहे खरा या खोटा पराया भेगुण निकालणेसें धनका भेर यशका लाभ होता नही इतनाही नही लेकिन् जिसके भेगुण प्रकास करे वो एकनया दुस्मन पैदा होताहे अपणी तारीफ पराइ निंदा वस नही रख्खी हुइ जुवान ४ भेर अच्छे कपडे ५ भेर क्रोधादि कषाय ए पांच चीज संयम पालणेकुं अच्छे उद्यम करणेवाले मुनि [illegible] त
जिस अदमीमें अच्छे [illegible]
हर

बमाईमें क्या फायदाहे आप अपणे मूंसे तारी-
फ करे उसके मित्र उसकूं हसतेहे जाइ निंदा
करे एसे आदमीकों बमे आदमीपास नही
बिठलाते ओर उसके माबापभी उसकूं वहोत
मानते नही अपणी तारीफ ओर परनिंदा भवो-
भवमे नीच गोत्र कर्मबंधताहे वो कर्म क्रोमों भव
होणेसेंभी छूटणा मुसकिल होताहे पराइ निंदा
करणी यह बमा पापहे कारण बहोत खेदकी
बातहे विगर कीये पापभी पराइ निंदा करणे-
वालेकूं खड्डेमें गिराताहे इसपर एक दृष्टांतहे
सुग्राम गाममें सुंदर नांमका एक सेठथा वो
बमा धर्मीथा सो मुसाफर वगेरह लोकोकूं भो-
जन वस्त्र रहणेका ठिकाणा वगेरह देकर उनके
ऊपर उपगार करताथा उसके पमोसमें एक
ब्राह्मणी रहतीथी वो सेठकी हमेसां निंदा कीया
करे लोकोकूं कहा करे यह सेठ मुसाफर लोक
परदेसी मरजाताहे उसकी जमा हजम कर-
णेकूं यह वणिया एसा करताहे एकदिन एक
कार्पटि अर्थात् सामी प्यासकरके व्याकुल आ-
या तब सेठ अहीरणके पाससें छाछ मोल लेकर
उसकूं पिलाइ उसके पीणेसें वो गुसाइ मरग-
या-कारण उस अहीरणने छाछका वरतण उ-

अपणे मालकके साथ निमक हरामी करणी यह सब बाते राजविरूद्ध कहलातीहे इसके फल बहोत बुरेहे जेसें भुवनभानूकेवलीका जीव पूर्वभवमे रोहणीथी वो बमी विचारवाली नेष्टावाली ओर पढी हुईथी लेकिन् राजाकी राणीका वृथा कुशील कलंक बोलणेसें राजा उस साहूकारकी बेटी रोहणीकी जीभ काटकर देससें निकालदी दुखी होकर रोहणी अनेक भवोंमें जीभ कटानेका दुख पाया इसवास्ते राजविरुद्ध कांम नही करणा लोककी तेसेंइ विशेष करके गुणीजणोकी निंदा करणी ओर आपणे मूंसे अपणी तारीफ करणी ये दोनोंही लोकविरुद्ध कहलाताहे खरा या खोटा पराया अंगुण निकालणेसें धनका ओर यशका लाभ होता नही इतनाही नही लेकिन् जिसके अंगुण प्रकास करे वो एकनया दुस्मन पैदा होताहे अपणी तारीफ पराइ निंदा वस नही रखवी हुइ जुवान ४ ओर अच्छे कपडे ५ ओर क्रोधादि कषाय ए पांच चीज संयम पालणेकूं अच्छे उद्यम करणेवाले मुनिराजकूंभी हरजाना करताहे जिस अदमीमें अच्छे २ गुण हे तो विगर कहे जाहिर हुयेविगर रहेगा नही नही ७८ ॥

बनाईमें क्या फायदाहे आप अपणे मूंसे तारी-
फ करे उसके मित्र उसकूं हसतेहे जाइ निंदा
करे एसे आदमीकों बमे आदमीपास नही
विठलाते उंर उसके माबापजी उसकूं बहोत
मानते नही अपणी तारीफ उंर परनिंदा जवो-
जवमें नीच गोत्र कर्मवंधताहे वो कर्म क्रोमों जव
होणेसेंजी छूटणा मुसकिल होताहे पराइ निंदा
करणी यह बमा पापहे कारण बहोत खेदकी
बातहे विगर कीये पापजी पराइ निंदा करणे-
वालेकूं खड्डेमें गिराताहे इसपर एक दृष्टांतहे
सुग्राम गाममें सुंदर नांमका एक सेठथा वो
बमा धर्मीथा सो मुसाफर वगेरह लोकोकूं जो-
जन वस्त्र रहणेका ठिकाणा वगेरह देकर उनके
ऊपर उपगार करताथा उसके पमोसमें एक
ब्राह्मणी रहतीथी वो सेठकी हमेसां निंदा कीया
करे लोकोकूं कहा करे यह सेठ मुसाफर लोक
परदेसी मरजाताहे उसकी जमा हजम कर-
णेकूं यह त्रणिया एसा करताहे एकदिन एक
कार्पटि अर्थात् सामी प्यासकरके व्याकुल आ-
या तब सेठ अहीरणके पाससें छाछ मोल लेकर
उसकूं पिलाइ उसके पीणेसें वो गुसाइ मरग-
[illegible]रण उस अहीरणने छाछका वरतण उ-

शिरोमणीने लिखाहे के सर्वधर्मी लोकोकों जो-कही आधारभूतहे इसवास्ते जो वात लोक-विरुद्ध अथवा धर्मविरुद्ध होय वो सर्वथा नहि करणी ये दोनों विरुद्ध छोमणेसें लोकोंकी अ-पणे ऊपर प्रीति होतीहे स्वधर्म साचवणेमें आताहे ओर सुखसें निर्वाह होताहे लोकप्रिय आदमी सम्यक्त्व वृक्षके बीजभूतहे अब धर्मवि-रुद्ध कहतेहे मिथ्यात्वका काम करणा मनमें दया नहि रखता हुवा बलद वगेरोकों मारणा बांधणे आदि तकलीपका देणा जूंमांकणोकों धूपमें भालणा सिरके बाल बमी बारीक कांग-सीसे सभारणा लीखोंकों फोमणा गरमीकी मोसममें गलणे मजबूतसें तीन वेर ओर मो-सममें दो वेर जीवोकी सार शंभाल नहि रख-कर पांणीका छाणनेका उपयोग नहि रखणा अनाज इंधन गोवरी शाग खाणेके साग पान फल फूल तपासणेमें अच्छी तरे उपयोग नहि रखणा सावत सोपारी खारक खजूर बुहारा वालोल फली वगेरे सावित यूंकी यूं मूंमें भाल-णी नाला वगेरह धाराका जल पीणा चालते बेठते सोते सिनान करते कोइ चीज रखते अथवा लेते रांधते कूटते दलते घसते ओर मल-

त्र खंखार थूंकते कुरला करते जल तथा पां-
का पीक नाखते बराबर जतना राखणी धर्म
रणीका आदर करणा देवगुरु तथा साधर्मी
नोके संग द्वेष नहि करणा देवके द्रव्यकूं अ-
णे कांममें नहि लाणा अधर्मी अदमीकी सो-
बत नहि करणी धर्मी अदमीकी मस्करी नहि
रणी कषायका उदय वहोत नहि रखणा
होत पापकारी चीज लेणी या वेंचणी नही
ठोर खरकर्म तथा पापमइ अधिकार इत्या-
देकमें नहि प्रवर्त्तणा ये सब बावते धर्मविरुद्ध
हलाती है यह जो ऊपर लिखी बाबत मि-
थ्यात्व वगेरेका बयान अर्थ दीपकामें कीयाहे
धर्मी लोक देसविरुद्ध कालविरुद्ध राजविरुद्ध
अथवा लोकविरुद्ध आचरण करे तो धर्मकी
निंदा होतीहे इसवास्ते इन सब बातोको धर्म-
विरुद्धही समजणा अब हितोपदेशमालामें नव
प्रकारका उचित आचरण लिखाहे वो आचरण
केसा कहेके सब मनुष्य तो देह इंद्रीयों धरा-
णेवाले एकसेहीहे उनोमें केइयक आदमी इस
शंशारमें स्याणे विचक्षण होकर यशवंत कहला-
तेहें वो सब उचित आचरणकीही महिमाहे वो
इस मुजबहे अपणे पिता संबंधी१ मातासंबंधी

शिरोमणीने लिखाहे के सर्वधर्मी लोकोकों लो- कही आधारभूतहे इसवास्ते जो बात लोक- विरुद्ध अथवा धर्मविरुद्ध होय वो सर्वथा नहि करणी ये दोनों विरुद्ध छोडणेसें लोकोंकी अ- पणे ऊपर प्रीति होतीहे स्वधर्म साचवणेमें आताहे उर सुखसें निर्वाह होताहे लोकप्रिय आदमी सम्यक्त वृक्षके बीजभूतहे अब धर्मवि- रुद्ध कहतेहे मिथ्यात्वका काम करणा मनमें दया नहि रखता हुवा बलद वगेरोकों मारणा बांधणे आदि तकलीपका देणा जूंमांकडोकों धूपमें डालणा सिरके बाल बडी बारीक कांग- सीसे सजारणा लीखोंकों फोडणा गरमीकी मोसममें गलणे मजबूतसें तीन वेर उर मो- सममें दो वेर जीवोंकी सार संभाल नहि रख- कर पांणीका छाणनेका उपयोग नहि रखणा अनाज इंधन गोवरी शाग खाणेके साग पान फल फूल तपासणेमें अच्छी तरे उपयोग नहि रखणा सावत सोपारी खारक खजूर बुहारा वालोल फली वगेरे सावित मूंकी मूं मूमें डाल- णी नाला वगेरह धाराका जल पीणा चालते बेठते सोते सिनान करते कोइ चीज रखते अथवा लेते रांधते कूटते दलते घसते उर मल-

मूत्र खंखार थूंकने कुल्ला करते [illegible] तथा [illegible] लका पीक नाखते बराबर [illegible] [illegible] [illegible] करणीका आदर करणा देवगुरु तथा [illegible] इनोके संग द्वेष नहि करणा देखके [illegible] [illegible] पणे कांममें नहि लाणा अवर्णी [illegible] [illegible] हवत नहि करणी धर्मी [illegible] [illegible] नहि करणी कषायका उदय वहोत नहि [illegible] बहोत पापकारी चीज लेणी या [illegible] नहीं कठोर खरकर्म तथा पापकर [illegible] [illegible] दिकमें नहि प्रवर्तणा ये सब [illegible] [illegible] कहलातीहे यह तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थ्यात्व वगेरेका बयान अर्थ [illegible] [illegible] धर्मी लोक देसविरुद्ध [illegible] [illegible] अथवा लोकविरुद्ध आचरण [illegible] [illegible] [illegible] निंदा होतीहे इसवास्ते इन सब [illegible] [illegible] विरुद्धही समजणा अब [illegible] [illegible] प्रकारका उचित आचरण [illegible] [illegible] [illegible] केसा कहेके सब मनुष्य तो [illegible] [illegible] [illegible] णेवाले एकसेहीहे उनोमें [illegible] [illegible] [illegible] शंसारमें स्याणे विचक्षण [illegible] [illegible] तेहें वो सब उचित [illegible] इस मुजबहे अपणे पिता

२ भाईसंबंधी ३ स्त्रीसंबंधी ४ पुत्रपुत्रीसंबंधी ५ सगेस्वजनसंबंधी ६ बडे लोक संबंधी ७ सहरके रहणेवाले लोक संबंधी ८ तेसेइ अन्य दर्शनीसंबंधी ए ये नव उचिताचरणा सब मनुष्योंकोंकरणा वा जिव हे पिताकी भक्ति मनवचन कायासें करणी चाहिये बापकी शरीर शेवा चाकरकी तरे आप करणी उनोका पग धोणा दाबणा वृद्ध अवस्थामें उठाणा बेठाणा देश उर कालके माफिक उनोंकों भोजन कराणा बिछावणा वस्त्र गहणा वगेरे वस्तु देणा कोइके कहणेसें तिरस्कार अपमान नही करणा पुत्र अपणे बापके सामने बेठा जेसा शोभापाताहे वेसी शोभाका सो माहिस्सा उंचे सिंहासण बेठणेसें कभी मिलणेका नही बापके वचन मूंमेंसें निकल तेही उठा लेणा चाहिये जेसे राजतिलक बेठणेके वखत रामचंद्रजीनें पिताका वचन पालणेकूं वनवास पधार गये वेसें सपूतोंकों करणा चाहीये जी हजूर जो हुकम अभी करताहूं एसी मुजबही कबूल करणा लेकिन आनाकानी सिर धूणना अथ ... पो

एसें सब कांम करणा अपणी अक्कलसें कोइ कांम निश्चेही करणा विचारया होय तोभी उनके जचे तभी करणा बुद्धिका पहला गुण यहीहेकी मावापकी टेहल करणी जब वो प्रसन्न होतेहें तब गुप्त रहस्य सब बतादेतेहें ज्ञानकरके जो बमेहे उनकी बंदगी नहि करणेसें चाहे कितनेही पुराण ओर आगम पढो चाहे कितनीही अपणी बुद्धिसें कल्पना करो लेकिन ज्यादे बुद्धिकी प्रबलता होती नही एक स्थविर जो बातें जाणताहे सो लाखों जुवान नही जांणतेहे देखो राजाकूं लात मारणेवाला आदमी वृद्धोके वचनसें पूजाताहे वृद्धोकें वचन सुणने कांम पमनेपर बहुश्रुत वृद्धकोंही पूछणा सम्यक्त कोमुदीमें लिखाहे हंसका टोला बंधनमे पमे हुयेकूं वृद्ध वचनोने बुमाया तेसेंही मनका अभिप्राय पिताके आगे प्रकटपणे कहणा जो काम मना करे सो नही करणा कोइ कसूर होणेसें पिता करमी जुवान कहे तो तोभी विनीतपणा नहि छोमणा मर्यादा छोमकर बेतरेका उत्तर नहि करणा जेसें अभयकुमार श्रेणिक राजा ओर चेलणा माताका मनोरथ पूर्ण कीया तेसें साधारण मनुष्यभी अपनी शक्ति माफक

मनोरथ पूर्ण करणा उसमेंजी देवपूजा गुरुनक्ती धर्म सुणना व्रत पच्चखान करणा व आवस्यकमें प्रवर्त्तणा सात क्षेत्रोमें धन लगाणा तीर्थयात्रा करणी ओर दीन दुखी अनाथोकूं परवरिस करणा ये धर्म मनोरथ पिताके अच्छे उमंगसें पूरा करवाणा कोइजी तरे मातापिताके उपगारका जार पूत्र नही उतार सकता लेकिन अपने बमेरे गुरु लोकोंको केवलीका कहा सद्धर्मके विषे जोमे विगर ओर उपाय उनके बदला उतारणेका नही ठाणांग सूत्रमें लिखाहे तीन अदमीका उपगार उतर नही शके एसाहे मावापका १ धणीका २ ओर धर्माचार्यका ३ कोइ अदमी जावज्जीवतक प्रजातसमें अपने माबापकूं शतपाक सहस्रपाक तेलसेती मालिस करे सुगंध पीठीमसले गंधोदक गरम पाणी ठंमा पाणीसें स्नान करावे गहणे पहरावे सुशोनित करे जोजन शास्त्र मुजब रांधकर अठारे जातिके शागयुक्त मन माफक अन्नादिक जीमावे ओर यावज्जीव खंधे उठाये फिरे तोजी मावापके उपगारका बदला पूत्र नहि उतार सके लेकिन जब वो पुरप केवली जाषित धर्म सुणायकर मनमें बराबर उतरायकर धर्मका मूलजेद ओर

उत्तरभेदकरके प्ररूपणाकरके उस धर्ममें स्थापन करदेवे तब तो मावापके उपगारका बदला उतर सकताहै इसी तरे कोइ बमा धनवान आदमी एकाध दलद्रीकूं धन वगेरे देकरके अच्छी अवस्था बणादेवे उर वो भाग्यवानही बणा रहे तदपीछे वो देणेवाला कर्मयोगसें दलद्री होजाय उसकूं वो अपणा सर्व धनमाल देदेवे तोभी अपणेकूं भाग्यवान बनानेवाले मालकका बदला नही उतारसके लेकिन् जो उस मालककूं केवली कथित जिन धर्ममें दृढ करदेवे तभी उस मालकका बदला उतरशके कोइ पुरुष सिद्धांतमे कहे मुजब श्रमणमाहण धर्माचार्यके पाससें धर्मका एक उत्तम वचन सुणकर मनमें उसका विचार करे मरणकी वखत तदपीछे देवलोकमे देवता होकरके अपणे धर्माचार्यकूं काल पमे हुये मुलकसें सुकालके देसमें लेजाकरके रक्खे बमा विकराल जंगलमेंसें पार उतारे अथवा बहोत दिनोंके बेमारीकों मिटावे तोभी उस धर्माचार्यके उपगारका बदला नहि उतरे लेकिन् जब धर्माचार्य केवलि प्ररूपित धर्मसें भ्रष्ट होजाय उसकूं केवलि कथित धर्ममें पीछा दृढ करे तभी बदला उतरसके मातापिताकी

छुपाके रखे नही जिसकरके ठगोसें ठगावे नही मनमें दगा रखके धन नही छिपावे लेकिन संकटमें काम आवे इसवास्ते कोइ वखत काम आवेगा एसा समजके छिपाके रखणेमें कुछ दोष नही २ अगर खराब संगतसें अपणा भाइ धीठ होय तो उसकों उसका दोस्त होय जिस्सें समजावे आप एकांतमें समजावे अथवा दुसरेके मिषसें समजावे काका मामा सुसरा साला वगेरे लोकोंसें सीखामण दिरावे आप ज्यादा तिरस्कार भाईका करे नही क्योंके कदास बेसरम होकर मर्यादा न छोड़देवे हृदयमें प्रीति होय तोभी बहारसें उसकूं अपणा स्वरूप क्रोधी जेसा देखावे ओर जब वो भाइ विनयवान होजावे तब उसके संग पूरे प्रेमसें वात करे इत्यादिक उपरके लिखे मुजब उपाय करणेसेंभी जब सुधरे नहि तो इसका स्वभावही एसाहे एसा तत्वविचारकर उसकी उपेक्षा करे ३ भाईकी स्त्री पूत्र वगेरोके देणे लेणेमें समान दृष्टि रखणी अपणे स्त्री पूत्रकी तरे आदर रखकर भरण पोषण करणा ओर सोकेलमाके भाईके स्त्री पूत्र वगेरोका मान पान उपचार अपणे स्त्री पूत्रसेंभी ज्यादे रखणा कारण

उन लोकोकें थोमीसी बातमे दिलमें फरक आताहे उर लोकोमें अपकीर्ति होतीहे इसीतरे उर लोकोसेंजी उचिताचरण जिसके जेसा योग्य होय वेसा ध्यांनमें रखणा जेसेंके पेदा करणेवाला १ पालणेवाला २ विद्याका सिखाणेवाला ३ अन्न वस्त्र देणेवाला ४ उर अपणे जीवकूं बचाणेवाला ५ ये पांच पिता कहलातेहे राजाकी स्त्री १ गुरुकी स्त्री २ सासू ३ उर जन्मदेणेवाली ४ उर धाय माता ५ ये पांच माता कहलातीहे सगा जाई १ संगमे पढणेवाला २ मित्र ३ मांदगीमें वंदगी करणेवाला ४ उर रस्तेमें बातचीत करणेसें हुवा सो मित्र ५ ये पांच जाइ कहलातेहे जाइयोकों चाहीयें सो एक एककूं अच्छी तरेसें धर्म करणी याद कराणा चाहीये जो पुरप प्रमादरूप अग्निसें सिलगे हुये शंशाररूप घरमें मोहरूप नींदमेंसें सूतेंकूं जगावे वो उसका परम बंधु कहाताहे जायोंकी आपसमें प्रीतिपर जरतका दूत आणेसें रूपज देवके अठाणवे पूत्र जगवानकूं पूछणेगये उनोका दृष्टांत जांणना इसतरे जाईका उचिताचरण जांणना ३ अब जार्याके संग उचिताचरण लिखतेहे मनुष्यकूं चहीये सो स्त्रीका अच्छीतरे

करणा चुणना फटकाणा कूटणा पीसणा वस्त्र सीणा कसीदा निकालणा कलाबतू कनारी गोटे वगेरोके गोखरू अलमास चंपा लमी नामा कसणा बणाणा गहाणा पोणा गाय दूहणी दही जमाणा विलोणा करणा भोजन पाक वगेरे सब तरेकी तयारी बणाणी जिसकूं जेसा लायक एसा पुरसारा करणा भाग्यवानकी स्त्री- यां अगर आप नही करे तो नोकरणी दासी अथवा सूपकारादिकसें निगें दास्तीसें करवाणा अपणे लायक होय सो आप करणा सासू सुसरा भर्त्तार नणद जेठ देवर वगेरेका विनय साचवणा इस वजेसें अनेक किसम कुलवहूउं- का कृत्य जांणना जो घरका पति इनकामोमें स्त्रीयोकों नहि लगावे तो उरतें हमेसां उदा- स रहतीहे उर स्त्रीके उदास रहणेसें घरका काम बिगमताहे दुसरे उरतका स्वभाव चपल होताहे सों निकम्मी रहणेसें विगमतीहे स्त्रीकूं देखणेसें वातचीत करणेसें उसके गुणकी तारी- फ करणेसें उसके मनमानी चीजोके देणेसें उर मनमुजव चलणेसें पुरषके ऊपर मजबुत प्रेम जमताहे एसा श्री उमास्वातिवाचक प्रशमरति ग्रंथमे लिखतेहे पुरषोंकूं चाहीये सो पिसाचका

आख्यान सुणके कुलस्त्रीका रक्षण करणा उर अपणी आत्मासंयमके योगसें हमेसां उद्यममें रखणा स्त्रीकूं अपणेसें दूर नहि रखणा स्त्रीकी सार शंभाल नहि लेणेसें वहोत निगेदास्ती करणेंसें जब आपसमें सामल होय तब नहि बोलणेसें अहंकारसें उर अपमांनसें इन पांच कारणोसें प्रेम घटताहे पुरष हमेसां मुसाफरी करता रहे तो स्त्रीका मन उस ऊपरसें उतर जाताहे विभचारणीभी होजातीहे स्त्रीकूं क्रोधमें आकर एसा विनाकारण कभी नहि कहणाके में तेरेपर दूसरी परणूंगा कोइ कसूर स्त्रीने कीया होय तो एकांतमे एसी हितशिक्षा देवे सो फेर एसा कांम नही करे वहोत गुस्सेंमें भरगइ होय तो उसकूं समझावे धनका फायदा हुवा होय या नुकसान हुवा होय तो स्त्रीके सांमने बात नहि करणी तेसेंइ घरकी गुप्त मसलत उसके सांमने नहि कहे दोय उरतवाले पुरषकूं चैन नही रातदिन लभाडमें वीतताहे बभी आपदाका कारणहें राजा या बभा भाग्यवानोके दो स्त्री फेरभी निभसकतीहे एक स्त्रीका पतीका प्रेम रामचंद्र जेसा होताहे वहोत स्त्रीयोंका पतीका प्रेम कृष्ण जेसा होताहे

कोइ कारण योगसें दो स्त्री परणे तो दोनोंके पूत्रोंपर सम दृष्टि रखे उनोंमेंसें किसीका बारा खंन्ति नही करणा जो स्त्री अपणी शोकका बारा खंन्ति करके मैथुन सेवे उसके चोथे व्रतमें अतीचार लगे उंरतोसें हमेसां नरमायस रखणा कारण बहोत गुस्सेमें आणेसे प्राण घाततक कर बेठती हे उंर विना नरमायस कार्यमें हरजाणा करती हे जो कभी घरकी स्त्री निर्गुणीभी मिलजाय तो बहोतही समझदारीके साथ घरका कांम चलाणा देहमें जीवहे उहांतक मजबूत वेमी लगी समझणा गृहणीहे सोही घरहे नफा कहणेसें स्त्री खुल्ले हाथोसें धन खरचणे लगजातीहे स्त्रीके पेटमें बात टिकती नही इसवास्ते नुकसानी वगेरे कोइभी गुप्त बात उसके सामने कहदेणेंसें लोकोमें कहकर आबरू खोदेतीहे राजसंबंधी बातोकें कहणेसें राजदंडभी होजाताहे जिसपर एसा दृष्टांतहे रूमके बादशाहने दिल्लीके बादशाहसें च्यार चीजें मंगवाइ गादीका गधा सराइ कुत्ता असलकी कमअसल कमअसलकी असल वह दृष्टांतसे जांणना अर्थात् सब उंरते उ गुणगारी नही होती प्रायें होतीहीहे अच्छे

कुलकी उंरत पढी हुइ चतुर उंरत रूपवंत पद्मनी या चित्रनी वह उत्तम स्त्री कहलातीहे समजदार उंरत तो घरमें मुकत्यारी करे तो फेरनी केइ बातोसें डुरस्तनीहे लेकिन् जिस घरमें प्रायें उंरतोका चलण होताहे वो घर मट्टी मिलजाताहे सरकारी दंम्नी होताहे इसवास्ते चतुरोंकों चाहीये सो विगर विचारे घरमें उंरतोकों मुख्य नही करे जिसपर एसा दृष्टांतहे एक जुलाहे कपमे वूणनेवालेके घरमें स्त्री मुकत्यारथी वो जुलाहा एकदिन वस्त्र वूणनेके उंजारकेवास्ते लकमी लाणेकूं जंगलमे गया एक सीसमके दरखतकूं काटणेलगा उसका अधिष्टायक कोइ व्यंतर बोला मतकाट तोनी जुलाहा मरा नही साहसकर काटणेलगा तब इसका सत्व देखके नूत प्रसन्न होकर बोला वरमांग जो मांगेगा सो दूंगा वह जुलाहा स्त्री लंपटथा बोला मेरी उंरतसें पूछके वर मांगूगा खेर स्त्रीकूं जाके पूछा तब वो उंरत तुच्छ स्वन्नावकीथी इसवास्ते उसके यादमें एसी बात आइ ॥ श्लोक ॥ प्रवर्द्धमानपुरुष स्त्रयाणामुपघातकृत् पूर्वोपार्जितमित्राणां दाराणामथवेस्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थ—जब पुरषकूं लक्ष्मी बहोत मिलजाती

हे तब पुरष पुराणे दोस्तकूं ओरतकूं ओर पुराणे घरकूं छोडदेताहे एसा विचार करके खाविंदसें कहा हे पति बडा दुखदाइ राज्य लेकर क्या करोगे एसा वर मांगों सो दो हाथोंके च्यार तो हाथ हो जावे ओर दो सिर होजावे पेट एकही रहे अगर जब च्यार हाथ होयगा तब दुप्पट मजूरी कमाउंगें इतनेमेंही अपणा घर तो धनसें भरजायगा अहो २ स्त्रीकी स्वार्थता व्यर्थ सर्वस्व खोणेका उपाय बताया उसने वेसाही वर मांगा जूतने वेसाही बणादिया गांमके लोकोंने उसका एसा विचित्र रूप देखकर राक्षस जांणके लठी ओर पत्थरोंसे मारडाला जिसमें अपणी अक्कल होय नहि स्याणे मित्रका कहा माने नहि ओर अक्कलहीन स्त्रीके वसमे रहे वो इस जुलाहेकी तरे नास होय इस मुजब दृष्टांत कोइयक ठिकाणेही बण आताहे बुद्धमांन स्त्री होय तो उसकी सल्ला जरूर लेणा फायदा होताहे इसपर अनुपम देवी ओर वस्तुपालका दृष्टांत जांणना अच्छे कुलकी पक्की उमरकी कपट करके रहित धर्म करणी करणेमे तत्पर अपणे साधर्मणी ओर अपणों स्वजनसंबंधीयोके घरकी बेटी बहू होय

सीखजावे तो उस कामोसें धनका नास बेइ-
ज्जती राजदंण्ड होताहे इत्यादिक दुर्दसाकी
बातोके दृष्टांत सुणावे जो उस्का अक्कलवाला
ऊर तकदीरवाला होय तो जरूर विसनोंसें बच
जाताहे रोकडकी कूंची उस्केकूं सौंपे तो आवंद
खरच ऊर शिलक हमेसां संभाल लेवे उसकरके
मनोमती नहि होसके गुरूकी तारीफ सामनें
करणी भाईकी ऊर दोस्तकी तारीफ पिछाडी
करणी चाकरकी दासकी गुमास्तेकी तारीफ
अच्छा कांम करचूके तब करणी स्त्रीकी तारीफ
मरे बाद करणी पुत्रकी तारीफ तो बिलकुल
करणीही नही जो करणी तो पीछाडी करणी
जबकी बिना तारीफ कीये सरे नही तब उस्-
केकूं राजसभा दिखलाणी क्योंके कोइ कर्म-
योगसे अणचिंता संकट आपडे तो कायर होके
घबराता नहीहे बडे २ राजमान्य पुरषोके संग

हे तब पुरुष पुराणे दोस्तकूं उंरतकूं उंर पुराणे घरकूं छोरदेताहे एसा विचार करके खाविंदसें कहा हे पति बना दुखदाइ राज्य लेकर क्या करोगे एसा वर मांगों सो दो हाथोंके च्यार तो हाथ हो जावे उंर दो सिर होजावे पेट एकही रहे अगर जब च्यार हाथ होयगा तब दुप्पट मजूरी कमाउंगें इतनेमेंही अपणा घर तो धनसें भरजायगा अहो २ स्त्रीकी स्वार्थता व्यर्थ सर्वस्व खोणेका उपाय बताया उसने वेसाही वर मांगा भूतने वेसाही बणादिया गांमके लोकोंने उसका एसा विचित्र रूप देखकर राक्षस जांणके लठी उंर पच्छरोंसे मारमाला जिसमें अपणी अक्कल होय नहि स्याणे मित्रका कहा माने नहि उंर अक्कलहीन स्त्रीके वसमे रहे वो इस जुलाहेकी तरे नास होय इस मुजब दृष्टांत कोइयक ठिकाणेही वण आताहे बुद्धमांन स्त्री होय तो उसकी सल्ला जरूर लेणा फायदा होताहे इसपर अनुपम देवी उंर वस्तुपालका दृष्टांत जांणना अच्छे कुलकी पक्की उमरकी कपट करके रहित धर्म करणी करणेमे तत्पर अपणे साधर्मणी उंर अपणे स्वजनसंबंधीयोंके घरकी बेटी बहू होय

परिचय कराणा कारण अच्छे मनुष्योके संग दोस्ती कराणेसें वल्कलचीरीकीतरे हमेसां धर्मकी वासना बणी रहतीहे उत्तम जातिके कुलवंत सुशीलके संग दोस्ती करणेसें कदास धन नही मिले भाग्ययोगसें लेकिन् आवता हुवा अनर्थ तो जरूरही टलजाताहे क्योंके अनार्य देशमें पेदा हुये हुये आद्र कुमारके अभय कुमारकी मित्रता मुक्तीकेवास्ते हुई लडकेकूं अच्छी कुलकी उर अच्छे रूपकी अठारे वर्षमें इग्यारे तथा बारे वर्षकी कन्यासें सादी करावणी लडकेकूं चाहीये सो वीस वर्ष उपरांत शंशारी उत्पत्तिके काममें जयणा करे अनुक्रमसें घरके कामकाजकी मुकत्यारी स्यानसबूरीमाफक सोंपे जो कदास योग्य कन्या परणावे नही तो उलटी विटंबना होजातीहे कारण दोनोंजणे अनुचित कृत्य करणे लगजावे तो फजीता होताहे आपसमे एक २ के परसन नही पडे तब स्त्री भर्तारके आपसमें विरोध पडजाताहे धारानगरमें एक कुरूप निर्गुणीके तो बडी रूपवान उर गुणवान स्त्री व्याहे गइ उर एक रूपवान गुणवानकूं विदरूप उर निर्गुणी स्त्री व्याहेगइ भवतव्यतासें दोनोंके घरमें चोरोने

खातमाली आगे दोनुं जोमोका संयोग डुरस्त नही एसा समज्ञ उन चोरोने वो रूपवांन स्त्री रूपवान पास सुलायदी कुरूप कुरूपके पास धरदी रूपवंत दोनों दिलमें उदासथे उन दोनोंके तो मनकांमना पूरी जई लेकिन् विदरूप वणिया प्रजातसमें एसा हाल देखकर राजा जोजसें फरियादकी तब राजा सहरमें ढंढोरा पिटवाया ये काम किसने कीया उर क्यों कीया करणेमें क्या फायदा देखा मेरे सांमने जाहर होवे तब चोरोने आकर कहा गरीब परवर काग हंशका जोमा जो विधाताने जूलके करदीयाथा सो जूल हम चोरलोकोने सुधारदी रत्नसें रत्न मिलादीया यह वात राजा सुणके हुकम दीया यह इनसाफ ठीकहे पुत्रकूं हमेसां पेदास खरच करणेका धरकाममे लगाणा जो लायक होय तो घरकी मुकत्यारी सोंप देणी क्योंके हमेसां घरके फिकरमें रहणेसें इच्छा चारी तथा मदोन्मत्त नही होताहे वमी तकलीफसें धन कमाणा पमताहे इस वातका जाणकार होजाय तब धन नही ऊमाताहे छोटी ऊमरमें इसमेही प्रतिष्ठित इज्जतदार कहलाताहे जेसें राजगृही नगरीका प्रशेनजित राजा अपणे

सो लरकोंका इमतियान करता हुवा श्रेणिककूं योग्य जांण उसकोंही राज्य सोंपदीया तेसें लरकेके माफक लरकीका भतीजेका बेटेकी वहूका उचिताचरण जांणना जेसें धन्नासेठ च्यारों बेटेकी बहूकी परिक्षा करणेकूं पहली उज्झिताकूं पांचशालि चावलोके दाणे दिये उसने फेंकदिये दुसरेकी बहू भोगवती सो उस दाणोंकों खागइ तीसरी रक्षिता यतनसे रख छोरा चोथेकी बहू रोहणी उसने अपणे पीहरके कर्षोंकों देकर खेतमें वो वादीये उस्सें तीसरे वर्ष जाते एककोठार भरगया परीक्षा पूछी तब सुसरेकूं दिखलाये तब सेठ फेंकणेवालीकूं झाडू बुहारु करणेका काम सोंपा दुसरीकूं राधणेका काम सोंफा तीसरीकूं आटा सीधा वगेरे घर विखरीका काम सोंपा रोहणीकूं गहणा जवाहिर रुपीया मोंहरे वगेरे सोंपी इय च्यारोंहीमे जो जो गुणथा वेसाही उनोनें ग्रहस्थाश्रममें उन्नतीकर दिखलाइ वापकूं चाहीये पुत्रकेरूबरू तारीफ नही करे कारण फेर उसकी लायकी ओर गुण बढते नही अभिमांनसें आजाताहे कदास लरका जूआ या चोरी या रंमीबाजी नसाबाजी पेटीपणा वगेरे कुलक्षण

सीखजावे तो उस कामोसें धनका नास बेइ-
ज्जती राजदंड होताहे इत्यादिक दुर्दसाकी
वातोके दृष्टांत सुणावे जो लडका अक्कलवाला
ओर तकदीरवाला होय तो जरूर विसनोंसें वच
जाताहे रोकडकी कूंची लडकेकूं सोंपे तो आवंद
खरच ओर शिलक हमेसां संभाल लेवे उसकरके
मनोमती नहि होसके गुरूकी तारीफ सामनें
करणी भाईकी ओर दोस्तकी तारीफ पिछाडी
करणी चाकरकी दासकी गुमास्तेकी तारीफ
अच्छा कांम करचूके तव करणी स्त्रीकी तारीफ
मरे वाद करणी पुत्रकी तारीफ तो विलकुल
करणीही नहीं जो करणी तो पीछाडी करणी
जवकी विना तारीफ कीये सरे नही तव लड-
केकूं राजसभा दिखलाणी क्योंके कोइ कर्म-
योगसे अणचिंता संकट आपडे तो कायर होके
घभराता नहीहे वडे २ राजमान्य पुरषोके संग
सोहवत करणेसें वहोत फायदाहे जेसेंके धन-
वानके दुस्मन वहोत होतेहे हरतरेसें जालला
पटकतेहें इसवास्तें राजवर्गीयोसें धनका फाय-
दा नही होवे तो अनर्थ तो जरूरही मिटा
सकतेहे परदेसकी रीतभांतसें लडकेकूं जरूर
वाकिफ करदेणा चाहीये क्योंके जव परदेशके

सो लम्कोंका इमतियान करता हुवा श्रेणिककूं योग्य जांण उसकोंही राज्य सोंपदीया तेसें लम्केके माफक लम्कीका नतीजेका बेटेकी बहूका उचिताचरण जांणना जेसें धन्नासेठ च्यारों बेटेकी बहूकी परिक्षा करणेकूं पहली उज्जिताकूं पांचशालि चावलोके दाणे दिये उसने फेंकदिये दुसरेकी बहू भोगवती सो उस दाणोंकों खागइ तीसरी रक्षिता यतनसे रख छोमा चोथेकी बहू रोहणी उसने अपणे पीहरके कर्षोंकों देकर खेतमें वो वादीये उस्सें तीसरे वर्ष जाते एककोठार भरगया परीक्षा पूठी तब सुसरेकूं दिखलाये तब सेठ फेंकणेवालीकूं झाडू बुहारु करणेका काम सोंपा दुसरीकूं राधणेका काम सोंफा तीसरीकूं आटा सीधा वगेरे घर विखरीका काम सोंपा रोहणीकूं गहणा जवाहिर रुपीया मोंहरे वगेरे सोंपी इय च्यारोंहीमें जो जो गुणथा वेसाही उनोनें ग्रहस्थाश्रममें उन्नतीकर दिखलाइ बापकूं चाहीये पुत्रकेरूबरू तारीफ नही करे कारण फेर उसकी लायकी उंर गुण बढते नही अभिमांनसें आजाताहे कदास लम्का जूआ या चोरी या रंमीबाजी नसाबाजी पेटीपणा वगेरे कुलक्षण

ज्ञातेहे उनोके संगभी उचिताचरण रखणा अपणे घरमें पुत्रजन्म तेसें विवाह सगाइ वगेरे मंगलीक कामोंमें उनोका हमेसां सत्कार करणा तेसेंही उनोंके नुकशांन वगेरे पमजावे तो उनोंकों अपणेपास रखणा स्वजनोमे संकट आपमे तब अथवा उनोके घर उच्छव होवे तब उनोके इहां आप जाणा रोगाग्रस्त अथवा धनहीन होजाय तो उनोका उद्धार करणा मित्र उर स्वजन वोही कहलाताहे जो रोगमें आपदामें दुकालमें संकट आपमे तब राजद्वारमें उर स्मशानमें जो संग रहे उर वेहनही दिखावे सो बंधव कहताहे स्वजनोका उद्धार करणा वो अपणाही उद्धार समजणा कारण लक्ष्मी चंचलहे अरटकी घमनालकी तरे भरी उर खाली होजातीहे तेसेंही पेसेवाला दलद्री उर दलद्री तालेवर होजाताहे इसवास्ते जिसकूं सहाय आपने कीया होय वखत पमणेपर जरूर वो अपणी सहाय करताहे स्वजनोकी परपूठ निंदा नही करणी उनोके संग मस्करी वगेरेमेंभी विगर कारण सूका वाद नही करणा वादविवादमें वहोत दिनोंकी प्रीती जनोके शत्रूके साथ दोस्ती नहं

चाल चलणसें वाकबी नहीं होवे वखत पमणे-
पर परदेश जाणा पमे तब गोजूजांणके परदे-
शके जालसाज अनेक तरेके फंदेसें धनका
लालच दिखाकर ठग लेतेहे तास गंजीफेके
खेलसें नोट बणाणेकी धोखाबाजीसें जमीनमें
गमाहुवा धन दिखाकर वेस्यायोंकों जाग्यवा-
नकी स्त्रियां बणाकर मम्मइ वगेरे मुल्कमें सो-
नाटोलीके लुबे विद्यमांनसमेंमें अनेकोंकों ठग-
तेहे मिरजापुर कासीमें गुंमेलोक कोइतो आ-
गूंकी बीतक बात वापदादोंका नांम बताकर
पहचान निकालकर अपणे मकानमें ले जा
माल ठीनलेतेहे कोइ निजूमी कोइ हकीम
बणकर पसारीयोंसें मिलकर माल ठगारतेहे जे
पुर आगरे वगेरोमें दलालोका फंदा ...
इत्यादिक देसावरी हालतोंसें वाकबकर दे
चाहीये इसबजे माताजी पुत्रकेवास्ते ...
बहूकेवास्ते उचिताचरण करणा अपणी
बेटेका लाम अपणे पूत्रसें ज्यादे रखणा
वातोंसें दुनियामें तारीफ होतीहे पराये
को अपणा करके केवटणा यह बात बमी
क वंदीकीहे पिताके कुलके माताके कुलके
... कुलके जो लोक होतेहें वो स्वजन

गीत ताल वगेरे कलामें कुशलहूं कामकी ज
दीपणा बताणेकूं अथवा दोष छल वगेरोका ना
करणेकूं चिमठी बजातीहूं टचकारासें शिक्ष
करतीहूं एसेंइ तीसरी अंगली अनामिका
पूछा तब वो बोली देव गुरु स्थापनाचार्य सा
धर्मीयोकी नवांग पूजा मंगलीक साथिया नं
द्यावर्त्त वगेरे करणा जल चंदन वासक्षेप चू
वगेरोका मंत्रणा ये कांममे करसकतीहूं त
तर्जनी चोथी अंगुलीसें पूछा तब वो बोली मे
पतलीहूं इसवास्ते कांन वगेरेकी खाज खुणनी
शरीरमें कष्ट आवे तब तकलीप पातीहूं भूत
शाकनीके उपद्रवमें कष्टसहके दूर करतीहूं
जापकी गिणती करणेमे अगवाणीहूं एसा सुण
के च्यारोंही आंगलीयोनें आपसमें दोस्ती करी
उंर अंगूठेकूं पूछा तुमारेमें क्या गुणहे तब अं
गूठा बोला में तुमारा मालकहूं देखो लिखणा
चित्रांम करा ग्रास लेणा चिमठी भरणी चिमठी
बजाणी टचकारा करणा मूठी भरणी गाठ देणी
हथियार वापरणा दाढी मूंछ समारणा कतरणा
कातणा उखेरणा लोच करणा पीजणा बूणना
धोणा कूटणा दलणा पुरसणा कांटा निकालणा
गाय दूहणी जापकी गिणती करणी बाल अ-

नेके मित्रोके साथ मित्राइ करणी स्वजन घरमें नही होय उर उनकी इकेली स्त्री घरमे होय तो एकेला नहि जाणा स्वजनोके संग उधार-का धंदा देस काल जाव सोचके करणा देवका या गुरुकाया धर्मका काम होय तो उनोमें सजनोके संग एक दिल होणा दोस्तीकी जगे तीनकाम नहि करणा वादविवाद उधारपार उनके नही रहणेसें उनकी स्त्रीके संग बात ये तीन बात नही करणी शंशारके काममेंनी जब च्यार आदम्योंका एक दिल होताहे तब अच्छी तरेसें काम सुधरताहे तेसेंही जिन मं-दिर वगेरे धर्मकांममें तो निश्चेही एक दिल करणेसें हीकाम निर्बाण चढताहे क्योंके धर्म-काम तो सर्व श्री संघके आधारपरहे स्वज-नोके संग एकदिल होणेपर पंच अंगुलीयोका दृष्टांतहे पहली अंगूठेकी पासकी अंगली तर्जनी सो लिखणेमें चित्राम करणेमें कोइ चीजकूं दिखाणेमें चीजोकी तारीफ करणेमें चिमटी व-जाणेमें अगवाणीहे इसवास्ते अहंकारमें आकर मध्यमा जो बिचली अंगलीहे उसकूं पूछणे लगी तेरेमें क्या गुणहे तब मध्यमा बोली मे सब अं-गुली- योमें मुख्यहूं बमीहूं बीचमें रहतीहूं तंत्री

गीत ताल वगेरे कलामें कुशलहूं कामकी जल दीपणा वताणेकूं अथवा दोष छल वगेरोका नास करणेकूं चिमठी बजातीहूं टचकारासें शिक्षा करतीहूं एसेंइ तीसरी अंगली अनामिकाकूं पूछा तब वो बोली देव गुरु स्थापनाचार्य साधर्मीयोकी नवांग पूजा मंगलीक साथिया नंद्यावर्त्त वगेरे करणा जल चंदन वासक्षेप चूर्ण वगेरोका मंत्रणा ये काममे करसक्तीहूं तब तर्जनी चोथी अंगुलीसें पूछा तब वो बोली में पतलीहूं इसवास्ते कांन वगेरेकी खाज खुणनी शरीरमें कष्ट आवे तब तकलीप पातीहूं भूत शाकनीके उपद्रवमें कष्टसहके दूर करतीहूं जापकी गिणती करणेमे अगवाणीहूं एसा सुणके च्यारोंही आंगलीयोनें आपसमें दोस्ती करी उंर अंगूठेकूं पूछा तुमारेमें क्या गुणहे तब अंगूठा बोला में तुमारा मालकहूं देखो लिखणा चित्रांम कवा ग्रास लेणा चिमठी भरणी चिमठी बजाणी टचकारा करणा मूठी भरणी गांठ देणी हथियार वापरणा दाढी मूंछ समारणा कतरणा कातणा उखेरणा लोच करणा पीजणा बूणना धोणा कूटणा दलणा पुरसणा काटा निकालणा गाय दूहणी जापकी गिणती करणी बाल अ-

थवा फूल गूंथणा फूल पूजा करणी वेरीका गला पकमणा तिलक करणा श्रीजिनामृतकों पीतेहे अंगुष्ट भ्पण करणा इत्यादिक अनेक शंशारके काम में करसकताहूं तब च्यारुं अंगुलीयां अंगूठेके आश्रय करके कांम करणेलगी अब धर्माचार्यके संबंधमे उचिताचरण लिखतेहे तीनोटंक नक्तिसें वहुमांनसें धर्माचार्यकूं मनवचन कायासें बंदना करणी धर्माचार्यके कहे मुजव षमावस्यक पोषधादि कृत्य करणा तथा उनोके पास शुद्ध श्रद्धानसे धर्मशास्त्रादि ग्रंथ सुणना धर्माचार्य जो हुकम देवे उसका वहुमांन करणा मनसेंजी उसकी अवज्ञा नहि करणी अन्यधर्मी लोकोंकी करी हुई धर्माचार्यकी निंदाकूं मिटाणेका यत्न करे लेकिन् आप उस निंदाके सांमल न होवे शास्त्रोंमें लिखाहे निंदा करणेवाला तो पापीहेही लेकिन् सुणनेवालेजी पापीहे धर्माचार्यकी तारीफ गुणानुवाद हमेसां करे कारणके धर्माचार्यके सामने अथवा परपूव स्तुति करणेसें पुण्यानुबंधि पुण्य वंधताहे धर्माचार्यका छिद्र नही देखणा सुखमें या दुखमें मित्रकी तरे उनके अनुयायी चलणा उनका निंदक जो उनोंकों उपद्रव करे तो जहांतक

अपणी शक्ति होय वहांतक दूर करणा इस वातपर कोइ संका करताहे के प्रमादसें रहित एसें गुरुउंके वख भिड होताही नही तो फेर देखेही क्या उंर मित्रकी तरे उनोसें केसें वर्त्तावा रखणा इस बातका एसा उत्तरहे तुमारा कहणा सचहे धर्माचार्यतो निश्चे अप्रमादी होतेहे लेकिन् पंचम कालमे शरीरके संघयणभी वेसा नही न एसा मनोबलहे इस कारणोसें अपवादके रस्तेकी आचरणा देशक्षेत्रादि कारणो करके करते होय तब श्रावक जो तुच्छ बुद्धीहे उनोंकी न्यारी २ प्रकृतीके अनुसार भाव प्रगट होताहे ठाणांग सूत्रमें लिखाहे हे गोतम च्यार प्रकारका श्रावक होताहे एक मातापितासमान दूसरा भाइ समान तीसरा मित्रसमान चोथा शोकसमान साधूउंका जो कुछ कांम होय सो मनमे विचारे किसीवखत साधुउंका प्रमाद देखणेमे आवे तोभी साधुउंके ऊपरसें प्रेमभाव कम नही करे जेसें मातापिता अपणे बालकपर अंतरंगसे हेत स्नेह रखताहे तेसें साधूपर दयाका परिणाम रक्खे वो श्रावक मातापिता जेसा समझणा १ जो श्रावक साधूउंपर मनसें तो वहोत भाव रक्के लेकिन् वहारसें विनय

थवा फूल गूंथणा फूल पूजा करणी वेरीका गला पकमणा तिलक करणा श्रीजिनामृतकों पीतेहे अंगुष्ट प्रष्ण करणा इत्यादिक अनेक शंशारके काम में करसकताहूं तब च्यारुं अंगुलीयां अंगूठेके आश्रय करके कांम करणेलगी अब धर्माचार्यके संबंधमे उचिताचरण लिखतेहे तीनोटंक नक्तिसें बहुमांनसें धर्माचार्यकूं मनवचन कायासें बंदना करणी धर्माचार्यके कहे मुजब षमावस्यक पोषधादि कृत्य करणा तथा उनोके पास शुद्ध श्रद्धानसे धर्मशास्त्रादि ग्रंथ सुणना धर्माचार्य जो हुकम देवे उसका बहुमांन करणा मनसेंनी उसकी अवज्ञा नहि करणी अन्यधर्मी लोकोंकी करी हुई धर्माचार्यकी निंदाकूं मिटाणेका यत्न करे लेकिन् आप उस निंदाके सांमल न होवे शास्त्रोंमें लिखाहे निंदा करणेवाला तो पापीहेही लेकिन् सुणनेवालेनी पापीहे धर्माचार्यकी तारीफ गुणानुवाद हमेसां करे कारणके धर्माचार्यके सामने अथवा परपूठ स्तुति करणेसें पुण्यानुबंधि पुण्य बंधताहे धर्माचार्यका छिद्र नही देखणा सुखमें या उखमें मित्रकी तरे उनके अनुयायी चलणा उनका निंदक जो उनोंकों उपद्रव करे तो जहांतक

अपणी शक्ति होय वहांतक दूर करणा इस बातपर कोइ संका करताहे के प्रमादसें रहित एसें गुरुउंके छज मिड्न होताही नही तो फेर देखेही क्या उंर मित्रकी तरे उनोसें केसें वर्त्तावा रखणा इस बातका एसा उत्तरहे तुमारा कहणा सच्चहे धर्माचार्यतो निश्चे अप्रमादी होतेहे लेकिन् पंचम कालमे शरीरके संघयणज्ञी वेसा नही न एसा मनोबलहे इस कारणोसें अपवादके रस्तेकी आचरणा देशक्षेत्रादि कारणो करके करते होय तब श्रावक जो तुच्छ बुद्धीहे उनोंकी न्यारी २ प्रकृतीके अनुसार जाव प्रगट होताहे वाणांग सूत्रमें लिखाहे हे गोतम च्यार प्रकारका श्रावक होताहे एक मातापितासमान दूसरा जाइ समान तीसरा मित्रसमान चोथा शोकसमान साधूउंका जो कुठ कांम होय सो मनमे विचारे किसीवखत साधुउंका प्रमाद देखणेमे आवे तोजी साधुउंके ऊपरसें प्रेमजाव कम नही करे जेसें मातापिता अपणे बालकपर अंतरंगसे हेत स्नेह रखताहे तेसें साधूपर दयाका परिणाम रक्के वो श्रावक मातापिता जेसा समजणा १ जो श्रावक साधूउंपर मनमें तो बहोत जाव रक्के लेकिन् वहारसें विनय

साचवणेमें मंद आदर दिखावे लेकिन् साधूको कोइ दुसरा अनादर करे तो तुरत उहां जाय करके सहाय करे वो श्रावक भाइ जेसा जांणना २ जो श्रावक साधूउंकों स्वजनसेभी ज्यादे गिणे उंर कोइ कामकाजमें साधू सला नही पूछे तो अहंकारसें क्रोध करे वह श्रावक मित्र जेसा जांणना ३ जो गृहस्थ अहंकारी साधूउंका छल छिद्र हमेसां देखा करे उंर उनोका जो कसूर प्रमादसें होजावे वो हमेसां जाहिर कीया करें उंर उन जती साधूउंको तिणखे जेसा गिणा करे वो श्रावक शोक जेसा जांणना निंदक लोकोंहे सो जो कुछ जिन मंदिर जैन शाशनकी हीलना निंदा करते होय तो यथा. शक्ति मिटाणा चाहीये जेसें कुंभारके भवमें साठ हजार आदमीका कीया हुवा उपद्रव दूर कीया यात्रा जाते हुये संघकी रक्षा करी वो मरके सगर चक्रवर्त्तिका पोता जन्हुकुमार हुवा वह दृष्टांत जाणना धर्माचार्य शिक्षा दे तो तहत्त कहणा धर्माचार्य कोइ तरेका प्रमाद सेवते होय तो एकांतमें समझाणा माहाराज आप जेसें चारित्रवंतोंकों यह बात योग्य नही इत्यादिक हित शिक्षा देणी शिष्योकों चाहीये साम-

ने आणा उवणा आसण देणा पग चंपी करणी शूरु वस्त्र पात्र अन्न उपधी ज्ञानके उपगरण वगेरे समयके उचितविनय उपचारन्नक्तिसे करणा हृदयमें प्रीति रखणी आप परदेशमें होय तो गुरुका सम्यक्त दांनके उपगारकूं हमेसां याद करे अब सहर वस्तीके लोकोंसें उचिताचरण लिखतेहें सहरके लोकोंमें कोइ संकट आय परुे तो मनमें समजणा की मेंन्नी संकटमें परुाहुं एसा विचारणा उच्छवमें होय तो आपन्नी उच्छव मांणना क्योंके एक वस्तीमें रहके द्विधा न्नाव नही रखणा एक धंदेके रुजगार करणेवालो आपसमें कुसंप होय तो निश्चे वो लोक संकटमें जा गिरतेहे बरुा कोइ काम करणा होय तो बरुाइ वधाणेकेवास्ते सब नागरिक लोकोंके संग जाणा जिस्से किसीका दिल नही डुखे इकेले नही जाणा कोइ कांमकी गुप्त मसलत करी होय तो बाहिर प्रकाश नही करणी किसीकी चुगली नहि करणी सब बराबरीके होय तोन्नी मुसलमीनोकी तरे एककूं अगवाणी करके आप उनोके पिछारुी रहणा लेकिन् राजाके हुकम मुजब मंत्रवी परीक्षा करणेकूं एकसेज सबोकों सोनेकूं दी तब पांचसे

मूर्ख कुसंपसें आपसमे झगडे लगे एसें कुसंप-
वाले लोकोकूं संग ले राजाकी मुलाखात कर-
णेकूं नही जाणा ओर एसोंकी अरजभी नहि
करणी प्रतक्ष प्रमाणहे कितनीही नाकात तुच्छ
चीज होय लेकिन् जब वोही चीज बहोत
एकठी होजाय तब बडी ताकतपर होजातीहे
देखीये कच्चे घास या सूतके तागे जब सांमल
होके रस्सा बनाया जाताहे तब हाथी जेसें
ताकतवरकूं बांध लेताहे जो अदमी आपसमें
एक २ का मर्म उघाडे वो वंबीमे रहे ओर पेटमे
रहे सापकी तरे मरणांत कष्ट पाते हे ॥ श्लोक ॥
परस्पराणिमर्माणि भाषंतेअधमानरा: ते नरावि-
लयंयाति वल्मीकोदरसर्पवत् ॥ १ ॥ किसी दोनो
अदम्योके आपसमें झगडा होय तो तराजूके
पालडे मुजब बराबर रहणा लेकिन् अपणे
स्वजन संबंधीयोकी खेंच अथवा किसीसें रुस-
पतखाके न्यायसें बेमुख कभि नही होणा उप-
गारभी सच्चे इनसाफसें करणा आप समर्थ
होकर गरीब लोकोंपर मासूल कर तथा राज-
दंडसें सताणा नही तथा थोडा कसूर किसीने
कर लीया होय तो एकदम दंड नहि करणा
मासूल तथा राजदंडसें तकलीप जब लोक

पातेहे तव आपसमें संप ओर प्रीति छोड देतेहे जब वस्तीवालोमें संप नही होय तो कितनाही ताकतवर क्यों न होय वगडमेंसे निकले हुये सिंघकी तरे जहांतहा अनादर पाताहे इस-वास्ते आपसमें संप रखणा कल्याणकारीहे उ-समेंभी अपणे पक्षमे न्यातीगोतीयोमें तो ज-रूरही चाहिये क्योके छिलके दूर करदीये जाय तो चावल ऊगते नहीहे इत्यादिक जांणना अपणा भला चाहो तो राजाके देवस्थानके अ-थवा धर्मखातेके अधिकारी देरासरी तथा उ-नोके नीचेके लोकोके संग लेणदेणका विवहार नही करणा क्योंके ये लोक पहले तो मीठी बात बणाकर आसन ओर पान वीडी देकर भ-लाइ दिखातेहे लेकिन् वखत पडणेपर रुपे मां-गणेसें एसा कहतेहे हमने तुमारा वो कांम कीया वो कांम कीया तिलके फोतरे जितने उ-पकारकूं उस वखत पहाड जितना गिणातेहे पहली बातकूं भूलजातेहे ब्राह्मणमें क्षमा १ मातामें द्वेष २ कसवणमे प्रेम ३ ओर सरकारीय हुदेदारोमें इमानदारी ४ ये बातें प्रायें होणी मुसकिलहे देणा तो दूर रहा लेकिन् ज्यादा मांगणेसें कोइ ज्यादे तूमत लापटकतेहे क्योंके

धनवानके लागूहे दखडीपर कोण तूमल लाताहे इसबजे नागरिक लोकोका उचिताचरण जांणना अब अन्यदर्शनी जेषधारीका उचिताचरण लिखतेहे अन्यदर्शनी जेषधारी अपणे घर जीखकूं आवे तो उनोंकों यथायोग्य दांन देणा उंर राजमान्य एसा जो अन्यदर्शनी मकानपर आवे तो विशेष जक्तीकरके दांन देणा श्रावकके दिलमें अन्य दर्शनीके जेषकी जक्ती तो नही उंर नही उनके गुणोका पक्षपातहे तोजी मकानपर आये हुयेका आदरमांन करणा गृहस्थका धर्महे मीठा वचन बोलणा आसण देणा जीमणेकूं निमंत्रणा करणी किसकारणसें आणा हुवा सो पूछणा उनोका काम करणा संकटमें पमे हुये लोकोकूं बाहिर निकालणा यह बात सर्व धर्मीयोकूं सम्मतहे श्रावककूं जो उचिताचरण करणा लिखा उसका मतलब एसाहे जो की उचिताचरण करणेमें कुशल नहीहे वो पुरुष लोकोत्तर पुरुष जो सर्वज्ञ उनकी वाणीका सुक्ष्म बुद्धिसें गृहण करणा एसा जो जैनधर्म उसमें केसें कुशल होसके इसवास्ते धर्मार्थी लोकोकूं अवस्य उचिताचरण ध्यांनमें लेणा गुणपर प्रीति रखणा दोषोंपर मध्यस्थ जाव रखणा जिन

वचनपर रुचि राखणी यह सम्यग् दृष्टिका लक्षणहे समुद्र मर्यादा छोम्ता नही पर्वत चलाय मांन होता नही तेसेंइ उत्तम पुरष उचिताचरण छोम्ते नही इसवास्ते जगद्गुरु तीर्थं करभी गृहस्थपणेमें मातापिताके संबंधमें उठणा प्रमुख आदरसत्कार करतेहे वर्म पुरप आपेसें आदरसें उठणा प्रमुख आचरणा करतेहे तो फिर उनोसें ज्यादा कोणहे सो उचिताचरण नही करे ऊपर लिखे उचित वचनोसें बहोत गुण पैदा होतेहे जेसें आंबम् जिसकी उलादवाले नणशाली उसवाल बजतेहे शोलंकी राजपूत वो आंबम् मल्लिकार्जुनकूं जीतकर चवदे क्रोम् मोलका भरे हुये छबटो करी चोदे २ भार तोलके एसे सोनेसें भरे हुये बत्तीस घमे सिणगार उंरत मर्दोके सजणेके रत्नजमित एक क्रोम् जहरकूं मिटाणेवाली सीप वगेरे धनमाल चहुआण महाराज कुमारपालके खजानेमें माली तब राजा प्रसन्न होकर राजपितामह एसा विरुद उंर क्रोम् द्रव्य उंर चोवीस जातिवंत घोमे एसा इनाम दीया ये सब धन आंबट घर पोहचते २ रस्तेमेंही याचकोकों देदीया इसबातकी चुगली किसीने राजासें खाई तब राजा गुस्सेंमें आकर आंबम्

जीमणेके वखत क्रोध करे २० बडे कायदेकी आसासें धन विखेरे २१ साधारण बोलणेमें कठन संस्कृत वगेरेके शब्द बोले २२ बेटेके हाथमें सब धन सोंपके आप दीन दुखी होवे २३ उंरतके पक्षके लोकोसें उधार वगेरे मांगणी करे २४ उंरतके संग लडाइ होणेसें दूसरी सादी करे २५ कामी पुरषोके संग हरीफाइसें धन उडावे २६ लडकेपर गुस्सा करके उसका नुकसान करे २७ मंगत लोकोंकी करी हुई स्तुति सुणके मनमे अहंकार लावे २८ अपणी अहंकार बुद्धिसें दुसरेका हितकारी वचन नही सुणे २९ हमारी बडी जातिहे एसे अहंकारसें किसीकी नोकरी नहि करे ३० दुखसें कमाया जावे एसा जो धन सो देकरके कांम भोग सेवे ३१ मोल किराया देकर खराब रस्ते जावे ३२ जो राजा लोभी होय उर उसके पाससें धन लेणेकी आसा रख्के ३३ हाकम दुष्ट अन्याइ होय उसके पाससें धनकी आसा रखे ३४ कायस्थ लोकोसें दोस्ती मोहवतकी आसा रख्के ३५ मंत्रबीजादिक क्रूर कठोर होय उसका डर नही रख्के ३६ कृतघ्नीसें उपगारके बदलेकी आसा रख्के ३७ जो मूर्ख रसकूं नहि

समझे उसके आगे अपणा गुण प्रगट करे ३७ शरीर निरोगी रहते हुये वे हमसें दवा खावे ३९ रोगी होकर पथ्यपरे जनहि करे ४० लोजके वस स्वजनोंकूं छोडदे ४१ जिस वातोसें दोस्तका दिल खट्टा होजाय एसी बात कहे ४२ फायदेका वखत आवे उस वखत आलस करे ४३ बडा धनवान होकर लडाइ दंगा करे ४४ जोतषीकी जुबानपर भरोसा रखके राज्य मिलणेकी इच्छा करे ४५ मूर्खके संग सल्लाह करणेका आदर रख्के ४६ गरीब अनाथ लोकोकूं तकलीप देणेमें सूरवीरता जाहिर करे ४७ जिसकी एबजा हिरा देखणेमे आवे एसी अंरत परप्रीति राखे ४८ गुणके सीखणेसें क्षणमात्र प्रीति राखे ४९ दुसरोंका जमा कीया हुवा धन उडावे ५० अहंकार रखकर राजा जेसा वणाव करे ५१ लोकोके सामने राजा वगेरोकी जाहिर निंदा करे ५२ दुख आणेसें दीनपणा प्रगट करे ५३ सुख होणेसें आगे होणेवाली खोटी गतिकूं भूल जावे ५४ थोडे बचावकेवास्ते ज्यादे खर्च करे ५५ परिक्षा करणेकूं जहर खावे ५६ किमियागरीमें धन होमे ५७ खयरोग होगयेवाद फेर रसायण खावे

आप अपणे बमाईका अभिमांन रक्खे ५९ गुस्सेमें आकर आत्मघात करणेकूं तयार होय ६० नित्त विगरकारण इधर उधर भटकता रहे ६१ शस्त्रोंके प्रहार लगेबाद फेरभी युद्ध देखे ६२ बमोके साथ विरोध करके नुकशानीमें जा पमे ६३ थोमा तो धन होय अर आमंबर बमा रक्खे ६४ में पंमित हूं एसा समजके बहोत बकवाद करे ६५ अपणी सूरवीरता समज किसीका मर नही रक्खे ६६ बहोत व्याख्यान करके अगले अदमीकूं त्रास उपजावे ६७ हासी करता हुवा मर्मकी जुवान कहे ६८ दलद्रीके हाथमें अपणा घर सोंपे ६९ पैदास तो होय नहि अर धन खर्च करे ७० अपणे हक्कमे खरच करणेकूं कंजूसपणा करे ७१ तकदीरके भरोसे रहकर उद्यम नहि करे ७२ आप दलद्री होकर बात बणाणेमें वखत गमावे ७३ व्यसनकी उलफतमें गिरके जीमणाभी भूलजाय ७४ आप निर्गुणी होकर अपणे कुलकी बहोत तारीफ कीया करे ७५ वररा अर करमा स्वर होय अर गाणा गावे ७६ अरतसें मर कर याचककूं दांन नही देवे ७७ कृपणपणा करके दुर्दशा भोगे ७८ जिस अदमीके प्रगट अवगुण दिखते

होय एसे अदमीकी तारीफ करे ७९ सन्नाका कांम पूरा हुवे नही ंर पहली ऊठजावे सो ८० दूतयाने हलकारेका काम करे ंर संदेसा नूल जावे ८१ खासीका रोग होय ंर चोरी करणेकू जावे ८२ डुनियामें नामंवरी ंर यशकी इच्छाके चाहसे नोजनका खरच बहोत रख्के ८३ लोक मेरी तारीफ करेगा इस नरोसे आहार थोमा करे ८४ जो चीज थोमी होय वो चीज बहोत खाणेकी इच्छा करे ८५ कपटी ंर मीठे वचनोके बोलणेवालेके जालमें जाफसे ८६ कसवणके जारके संग लमाइ करे ८७ दोजणे कोइ गुप्त सल्ला करते होय उसके बीचमें तीसरा आप जावे ८८ राजाकी महरवानी हमेसां वणी रहेगी एसा दिलमें नरोसा रख्के ८९ अन्यायके रस्ते चले ंर आपणी बढोतरीकी आसा रख्के ९० धन तो पासमे होय नही ंर धनसें होणेवाले कांम करे ९१ छानेकी वात लोकोमें जाहिर करे ९२ यशकेवास्ते अजाण अदमीका जामन होय ९३ हितवचन कहणेवालेके संग वैर करे ९४ सब जगे नरोसा रख्के ९५ लोक व्यवहार नही जाणे ९६ याचक नीख मंगा होकर गरम नोजन करणे-

की टेंम रक्खे ९७ मुनिराज होकर क्रिया पालणेमें शिथलतता रक्खे ९८ कुकर्म करता हुवा सरमावे नही ९९ ऊर बोलता हुवा बहोत हसे १०० इसतरेसें सो मूर्ख जांणना जिस वातोसें अपयश होय एसे सब काम छोडणा इस तरेसें विवेक विलासमें जिन दत्त सूरजीने लिखाहे सभामें बगासी हिचकी डकार हासी वगेरे करणा पडे तो मुख ढांककर करणा सभामें नाक कुचरणा नही ऊर हाथ मरोडणा नही पालखथी मारणी नही पगलंबा नही करणा निद्रा विकथा वगेरे खराब चेष्टा नही करणी उत्तम पुरषोका हसणा होठ फुरकाणे मात्र होताहे ज्यादे हसणा अनुचितहे बगल नहि बजाणी अंग बजाणा तिणखा तोडणा हाथसें जमीन खोतरणा नखसें नख अथवा दांतोका घसणा ये वातों नही करणी चारण भाट ब्राह्मण वगेरोके मुखसें अपणी तारीफ सुणके मनमे अहंकार नही लाणा ऊर समजदार अदमी अपणी तारीफ करे तो मनमें समजणाकी इतना गुण तो मेरेमेहे लेकिन् अभिमान नही करणा दुसरे अदमीके कहे मुजब वचनके अभिप्राय दिलमें धरणा नीच अदमी अपणेकुं

हलकी जुवान कहे तो पीछा उत्तर हलकी जुवानसें नहि देणा जो बात वीतगइ या आगे होणेवाली या वर्त्तमानकालमें भरोसा रखणे योग्य नही होय एसी बातमें एसा नही कहणा की ये तो सच हे अर एसेंहीहे एसा प्रगट अपणा अभिप्राय नही जाहिर करणा कोइ काम किसीके पाससें कराणा विचारया होय तो उसके सांमने किसी दृष्टांतसें अथवा विशेष वचनोसें पहली जताणा चाहीये अपणा विचारया हुवा कामके अनुकूल कोइ वचन कहे तो जरूर मांन लेणा चाहीये जिसका काम अपणेसें नही बणसके उसकूं पहलेहीसे नहिं कहदेणा झूठी दिलासा देकर धक्का नही खिलाणा चतुर पुरषोकूं चाहीये सो अपने दुस्मनकोंभी करूवी जुवान नही कहे अगर किसी मोंकेपर सुणाणा पडे तो मिसालकरके दुसरेके वहानेसें सुणाणा जो आदमी माता पिता रोगी आचार्य प्राहुणा भाइ तपस्वी बुड्ढा बालक दुर्वल गरीब आदमी वैद्य अपणी उंलाद भायोके कुटंब चाकर वहेन इणोके संग लडाइ नही करें वो आदमी तीन जगतकूं वस करे एक टकी लगाकर

मने नही देखणा तेसें चंद्र सूर्यका ग्रहण लगे तब कूवेका पाणी ओर संझा कीसमें आकास ये नही देखणा स्त्रीपुरषका संजोग सिकार जवानीमे भरपूर नंगी स्त्री जांनवरोका मेथुन कीना ओर कंन्याकी योनि तेलमें जलमें हथियारमें मूतमें तेसें खूनमें अपणी परिछाई नहि देखणी एसें करणेसें आयु घटतीहे अच्छे बडे ओर सुसील आदमीयोकी बातकूं काटणा गइ चीजका फिकर करणा किसीकी निद्रा भंग करणा इत्यादिक बातें कभी नहि करणा बहुतोंके साथ वैर विरोध नहि करणा बहुतोकी मत जिधर होय उधरही मति देणी जिस कांममें स्वाद नहि एसाभी कांम समुदायके संग करणा समझवारोकों चाहीये सब शुभ क्रियामें आगेवांन होणा जो अदमी कपटसेंभी निर्लोभीपणा दिखलावे तो उसमेंभी गुण हासिल होताहे किसी अदमीका नुकसांन करणेसें कोइ कांम सिद्ध होता होय तो एसा कांम बणे जहांतक नही करणा सुपात्र अदमीकी इर्ष्या नहि करणी अपणी जातिपर संकट आपडे तो जाति नही छोडणी बहोत आदरसें जातिमें संप होय एसा काम करणा एसा नही करे तो

मान्य पुरपोका मांनखंम्न ऊर अपयश होताहे अपणी जातिकों छोड पराइ जातिमें जो आसक्त होताहे उसकी कुकर्दम राजाकी तरे दुर्दसा होतीहे जातिमें कलह करणेसें अदमी भ्रष्ट मिलजाताहे ऊर संपमे रहे तो कमलमें कमलणीकी तरे वढताहे अपणा दोस्त साधर्मी ऊर जातिमें आगेवान बमा पुत्र जिसके नही होय एसी वहिन इतनोका जरूर पोपण करणा जो पुरष मनमें वमपन रख्वा चाहे वो सारथीका कांम पराइ चीज खरीदणी ऊर वेचणी अपने कुलके अनुचित कांम नही करणा महाभारत ग्रंथमे लिखाहे मनुष्यकूं ब्रह्म मुहुर्त्तमें उठणा धर्म अर्थका विचार करणा सूर्यकूं उदय होते अस्त होते ऊर किसी वखतभी देखणा नही दिनकूं उत्तरकी तरफ रातकूं दक्षिणकी तरफ मूं करके दिसा जंगल जाणा अगर कुछ हरकत होय तो चाहे जिधर मुखकरके जंगल जाणा आचमनादि करके देवपूजा कर गुरुकूं वंदना करके साधू सुपात्रोकों दान देकर भोजन करणा जो भोजन घरमे होय वो पहली देव जिन राजके सांमने धरणा फेर भूख लगणेसें भोजन करणा कारण भोजनका कोइ वखत शास्त्रकारोनें

नहि लिखाहे इतना तो जरूरहे एकवार जीमकर पहरभरमें डुसरा खाणा नही ऊर दोपहर लांघणा नही अर्थात पांच घंटा आगले भोजनकूं हो चुके तब डुसरा खाणा ये मर्यादा दिनकीहे रातकूं भोजन सर्वथा मनाहे इसवास्ते दिनके पहले पहरमें भोजन करणा नही दोपहर वीताणा नही सुपात्रोकों दान देणेकी विधि इस मुजबहे सुपात्रकूं निमंत्रकर भोजनकी वखत घरपर लाणा अथवा आते मुनिराजकूं देख ऊनोके सांमने जाणा वंदना करणा फेर क्षेत्र संवेगका भावितहे या अभावितहे काल सुभिक्ष हे या डुर्भिक्षहे दांन देणेकी वस्तु सुलभहे या डुर्लभहे तेसेंइ पात्र आचार्यहे या ऊपाध्याय गीतार्थ तपस्वी बाल वृद्ध रोगी समर्थहे या असमर्थहे एसा दिलमें विचार करणा ऊर हरीफाई बमाइ इर्ष्या प्रीति लज्जा ऊर चतुराइ डुसरे लोक दांन देतेहे इसवास्ते मुजकूंभी वेसाही करणा एसी इच्छा ऊपगारका बदला ऊतारणेकी इच्छा कपट विलंब अनादर कमवा बोलणा देकर पिछताणा इत्यादिक दांनके दोपणहे फकत अपणा जीवका भला चाहता हुवा दोपरहित अन्नपान वस्त्र वगेरे वस्तु अपणी अपणे

हाथसें अथवा आप खमा रहके स्त्री वगेरोके पाससें दिलावे जैनमुनिके आहार संबंधी ब-यालीस दोषण टालणेके पिंम विशुद्धि वगेरे ग्रंथोसें जांणना दांन दीयां पीछे मुनिराजकूं वंदन करके उनोंकों दरवाजेतक पोह्चाणे जा-णा मुनिराजका योग नहि होय तो बद्दल वि-गर वृष्टिमाफक साधूउंके आणेकी राह देखणी शुद्ध श्रावक साधूकुं द्रांन दिये विगर कोइभी चीज नहि खातेहे मुनिराजका निर्वाह दुसरी रीतसें होता होय तो अशुद्ध आहार लेणे उर देणेवालेकूं हितकारी नही उर कुसमयमें जो निर्वाह नही होवे तो आतुरके दृष्टांतसें अशुद्ध आहार दोनोंकों हितकारीहे भगवती सूत्रके लिखे मुजब रस्ते चलणेसें थके हुये रोगी लोच करे हुये एसे आगम शुद्ध वस्तुका लेणेवाला साधूकूं उत्तर पारणेके विषे दांन दीया होय तो उस दांनसें वहोत फल मिलताहे सुपात्र दांनसें देवके तथा मनुष्यादिकोका सुख तथा समृद्धि होतीहे चक्रवर्त्ति आदि पद मि-लताहे अंतमें थोमे समयमें निर्वाण सुख मि-लताहे अभय दांन १ उर सुपात्र दांन २ अ-नुकंपादान ३ उचितदांन ४ कीर्त्तिदांन ५ पह-

लीके दो दानोसें मुक्ति उर सुखसंपदा मिल-
तीहे उर तीन दानोसें फकत सुखसंपदा मि-
लतीहे सुपात्रका लक्षण इस तरेसेहें उत्तम
पात्र साधू जोकी सर्व संगका त्यागी शुद्ध उप-
देशक मध्यम पात्र श्रावक साधर्मी उर जघ-
न्यपात्र अविरत्ति सम्यक्दृष्टी सास्त्रांतरोमें लि-
खाहे हजारो मिथ्या दृष्टीसें एक थोमी श्रद्धा-
वाला सम्यक् दृष्टी अच्छाहे उर हजारो संक्षे-
प श्रद्धावंतसें एकवारे व्रतधारी श्रावक श्रेष्ठहे
हजारवारे व्रतधारीसें एक मुनिराज श्रेष्ठहे उर
हजार मुनिराजोसें एक तत्वज्ञानी श्रेष्ठहे त-
त्वज्ञानी जेसा पात्र हुया न होगा सत्पात्र बमी
श्रद्धा योग्य काल उचित एसी देणेकी वस्तु
एसें धर्म साधनकी सामग्री बमे पुन्यसें प्राप्ति
होतीहे नौंचदाणी १ नजर करमी करणी २
अंतर्वृत्ति रखणी ३ मूं फेर लेणा ४ मोन क-
रणा ५ देणेमें देरी करणी ६ ये बाते नाकारा
करणेका चिन्हहे आंखमें आनंदके आंसू १ रूं
खमे होणा २ बहुमान ३ प्रियवचन ४ अनुमो-
दन ५ ए पांच दानका नूपण कहलाताहे इत्या-
दिक संक्षेपसें दानविधी कही तेसेंइ नोजनकी
वखत साधर्मी आवे तो उसकूंनी यथाशक्ति

जीमाणा साधर्मीकी पात्र कहलाताहे साधर्मी वात्सल्यका बडा लाभ शास्त्रोमें तीर्थंकर महाराजने बयान कीयाहे तेसें दुसरे भिक्षारी लोकोकूं दांन देणा निरासकर पीछा निकालणा नही कर्मबंध तेसें धर्मकी हीलणा नहि कराणी अपणा मन निर्दय नहि करणा जीमणके वखत दरवाजा बंध करणा ये गृहस्थ सत्पुरुषोका लक्षण नही धनवानकूं तो निश्चेही अनंगल्हार होणा क्योंके अपणा पेट कोण नही भरताहे लेकिन् बहोत जीवोंकी प्रतिपाल करे पुरष वोही गिणे जाताहे इसतरे दीन दुखियोंकों अनुकंपा दान देकर पीछे जीमणा जिनेश्वरदेव श्रावककूं अनुकंपा दांन मना कीया नहीं भगवतीमे श्रावकके वर्णनमें अवंगु अदुवारा लिखाहे भवसमुद्रमे डूबते हुये जीवोके समुदायकूं दुखसें हेरान हुयेकूं न्यातकी जातकी तथा धर्मकी तफावत दिलमें नहि रखकर द्रव्यसें तो अन्नादिक भावसें सद्धर्मके रस्ते लगाकर यथाशक्ति अनुकंपा करणी तीर्थंकर महाराज संशारसे विरक्त भावना लाये बाद दीन दुखीयोके उद्धार करणेकु संवत्सरी दांन देतेहे एक वर्षतक फेर संजम लेतेहे प्रदेसी

राजा केसी कुमारके उपदेससे नास्तिक मत त्याग जैनधर्मका उत्कृष्ट श्रावक वणेंवाद दांन साला दीन हीन पंथी श्रमण माहणोके वास्ते केशी गण धरके उपदेससें कराइ ये अधिकार राजप्रश्णी सूत्रमेंहे विक्रमराजा लोकोका ऋण उतारकर संवत चलाया एसेंही शालिवाहन जैनधर्मरूपी सक चलाया लोकोकी आपदा काटणेसें बमी फलप्राप्ति होतीहे चेलोकी परिक्षा विनयउपरसें मालम पमतीहे सुनटोकी परिक्षा संग्राम होणेसें मित्रकी परिक्षा आपदाका प्रसंग आणेसें उर दानेश्वरीकी परीक्षा काल पमणेपर मालम देतीहे हमारे विद्यमांनसें बीकानेर मारवाममें दुकाल पमा सं० १९५६का जिसमे नग्रसेठ चांद मलढ्ढा वगेरे उसवाल गोत्री तेसेंइ नागा दम्माणी प्रमुख माहेश्वर गोत्रीयोने राजेंद्र गंगासिंह बहादुरकी प्रेरणासे लाखो रुपयेका अनाज कंगालोको दांन दीया तेसें दांन बुद्धि रखणी तेसें माता पिता नाइ बहेन लमका लमकी उरत नोकर रोगी केदी लोक गाय वगेरे जांनवरोकूं यथायोग्य नोजन कराके पंचपरमेष्टीका ध्यांनकर पच्चखाणका उपयोग रखकर आपकी तासीरकुं माने एसा नोजन

करणा आहार पाणी वगेरे वस्तु स्वभावसेंही दुष्ट ओर खराब होय तोभी किसी २ कूं माफ-गत आताहे उसकूं साम्य कहतेहे जन्मसें ले-कर जहर खाणेकी टेंम पटकी होय तो उस अदमीकूं जहरभी अमृत होजाताहे ओर अमृ-तभी अगर कभी नहि खाया होय तो वो ज-हर माफक होताहे इसवास्ते पथ्य चीज नही सदे तोभी खाणा चहीये कुपथ्य चीज सदे तोभी नही खाणा ताकतवर अदमीकूं सब चीज हितकारी होतीहे एसा समजके काल-कूट जहर नहि खाणा जहर शास्त्रका जांण-कारभी कोइ वखत जहर खाणेसें मरजाताहे जेसें के तेरूकी रांम होतीहे गलेके नीचे उतरे सो सब असन कहलाताहे इसवास्ते क्षणभरके सुखकेवास्ते जीभका लालची नहि होणा इस-वास्ते अभक्ष्य अनंतकाय ओर बहुत पापकारी बहु बीजवस्तुका खाणा छोडणा क्योंके रोगका मूल रसहे भावप्रकाशमें लिखाहे बहुत साग-पात रोगकारीहे अभक्ष अनंत कायका विचार जैन तत्त्वादर्श भाषाग्रंथसे जांण लेणा पापका मूल लोभहे दुखका मूल स्नेहहे रोगका मूल रसहे इन तीनोका छोडणेवाला सुखी होताहे

अपणी अग्नि बलमाफक प्रमाणसर भोजन क-रणा वृहोत भोजन करणेसें उलटी दस्त हेजा वगेरे रोग होताहे जीमकर सो कदम टहलणा अध कच्चा अन्न नहि खाणा जीमकर अन्न पचणेकूं भावी करवट पावघंटा सोणा अध घंटा चित्ता सोणा ताकत वधणेकूं निद्रा लेणा नही दिनकूं कभी हमेस फिरणे भिरणेकी मेहनत करणेवाला देरी नहि रखता मलमूत्रका त्याग करणेवाला उरतोसें वचके रहणेवाला एसे पुरषोके रोग नहि होताहे बिलकुल प्रभातसमें तदन त्रिकाल संध्याकी वखत अथवा रातकूं तथा रस्ता चलते भोजन नही करणा भोजन करती वखत अन्नकी निंदा नहि करणी भावे पगपर हाथ नहि रखणा एक हाथमे खाणेकी चीज लेकर दुसरे हाथसें नही खाणा उघाडी जगेमें धूपमें अंधारेमे दरखतके नीचे भोजन नहीकरणा भोजन करती वखत तर्जनी अंगूठेके पास वाली टालनी नहि वस्त्र उर पग धोया विना नंगा होकर मेला वस्त्र पहरकर एक धोती पहरकर भीगा वस्त्र लपेटकर अपवित्र शरी-रसें अतिशय जीभकी लोलपता इत्यादिक प्र-कारसें भोजन नही करणा पगोमें जूता पहरा

हुवा चित्त ठिकाणे रखे विगर केवल जमीनपर अथवा पिलंगपर बेठकर खूणेमे बेठके दक्षिण दिसामे मूं करके तेसें पतले आसनपर बेठके इत्यादिक प्रकारसें भोजन नहि करणा आसनपर पग रखकर कुत्तेकी चंमालकी उंर नीच अदमीकी जहां नजर पमती होय एसी जगे भोजन नही करणा फूटे वरतणमें मलीन पात्रमें अपवित्र वस्तुसें उत्पन्न गर्भहत्या करणेवालाका स्पर्शा हुवा गाय कुत्ता पक्षीयोका सूंघा हुवा जिस चीजकी खवर नही के ये कहांसें आई हे जिस चीजकूं आप पहचाणे नही एक वेर रांधे हुवेकुं दुवारा गरम कीया होय ए इत्यादिक वस्तुका भोजन नहि करणा जीमते वखत वच २ शब्द वांकातिरछा मूं नही करता अपणे इष्टदेवका नाम लेणा उत्तम हाथोसें जीव जयणासें वणाया गया जीमणा स्वर वहते हुये मौन करके भोजन करणा शरीर वांका तिरछा नहि रखणा खाणेकी सव चीज सूंघके फेर खाणी जिस्सें नजर दोष टलताहे वहोत खारा बहोत खट्टा बहोत गरमागरम वहोत ठंना अन्न नही खाणा शाक वहोत नहीं खाणा बहोत मीठी चीजभी नहि खाणी अत्यंत रु-

चेकारीजी चीज नहि, खाणी ज्यादा गरम रस ताकतका नास करेहे बहोत खट्टा इंद्रियोकी शक्ति तथा वीर्यकूं हीन करताहे अतिसय खारा आंखोंकों विकार करेहे बहोत चिकणा गृहणी आंत अठी कला हाजमा बिगाडेहे कफकूं करुवा उंर तीखे रससें जीतणा पित्तकूं मीठे खट्टा मंदरससे जीतणा वायूकूं चिकणा उंर गरम रससें जीतणा अजीर्णादि सन्निपातादि बाकी रोगोकूं उपवाससें जीतणा घीके संग करमी वस्तु पहली खावे मीठा रस वगेरे दूध वगेरे बलिष्ट वस्तु नित्य खावे दाहकारी वस्तु नही खावे बहोत जल नही पीवे खाया हुवा पचे बाद भोजन करे पहली मीठा बीचमे तीखा अंतमे करुवा रस खावे जलदी नहि करता हुवा मीठा उंर चीकणा रस खावे बीचमे पतला खट्टा उंर खारा खावे अंतमे करुवा तीखा रस खावे भोजनकी सरूआतमे जल पीवे तो अग्नि मंद होवे बीचमे पीवे तो रसायण मुजब अंतमे पीवे तो विष माफक नुकशांन करे जीमे बाद एक कुरला मूं साफ करणेकूं जरूर पीणा दठके जीमणा नही भोजन करके भीजा हाथ नेत्र रोगी टालके आंख गालके वाये हाथके नही

लगाणा कल्याणकेवास्ते दोनों गोमोके स्पर्श करणा भोजन करके दो घंटेतक स्त्री संग नहि करणा दोमणा वगेरे खेचल नहि करणा शरीर मर्दन पगचंपी करवाणा नही भार उठाणा बेसणा अथवा स्नान भोजन करके नहि करणा भोजनकर बेठणा नहि बेठे तो मेदवृद्धिसें पेट चूतमभारी होजाताहे सुश्रावक निर्वद्य निर्जीव उर परित्त मिश्र इससें अपणा निर्वाह करतेहे जीमते बूंद या अनाजका दाणा नही गिरावे मन वचन कायाकी गुप्ती रखके भोजन करे विवेकी देव गुरु नगरका मालक तथा स्वजनमे शंकट पमे तो छती शक्ति भोजन नहि करे सूर्यचंद्रका गृहण लगे तब भोजन करणा नही अजीर्ण नेत्ररोगमें भोजन नहि करणा तावकी सरूआतमे लंघन शक्ति माफक करणा वायूसें थकेलेसें क्रोधसें शोकसे कामसें जो ज्वर चढे अथवा चोटसे उसमे लंघण नहि करणा तीर्थ वंदनमें आठम चोदसकूं बमे पर्वके दिन भोजन नही करणा तपस्यासें अनेक कार्य सिद्ध होताहे चक्रवर्त्ति नारायणभी तपस्यासें देव आराधतेहे भोजनकर दांत साफ कर नवकारस मरणाकर उठे तथा गुरुकूं तथा देवकूं चैत्य बं-

दनविधिसें वांदे गीतार्थसे मुनिसे अथवा सिद्ध
पुत्रसें अथवा गीतार्थ श्रावकसे वांचे पूछे पछ्या
हुवा याद करे धर्मकथा सुणे अथवा कहे मनमें
सूत्रार्थ विचारे ये पांच प्रकारका स्वाध्याय करे
शास्त्रोंका रहस्य विचारणा सांजकुं पापका आ
लोचनारूप प्रतिक्रमण सामायक संयुक्त करे
फेर जिन मंदिर जाकर आरती धूपादिक करके
परमात्मा श्री तीर्थंकरोका गुण गावे रात्रीकूं
च्यारोंही सरण लेकर सब जीवोंकों खमायकर
सागारी अणसण लेकर देवगुरुका समरण करे
जतनके साथ शयन करे श्रावकके तीन मनो-
रथहे सो करे अनित्यादिक बारे भावना भावे
पिछली रात्रिका जब नींद उगजाय तब अना-
दिकालकी अभ्यासरूप दुर्जय काम रागकूं
जीतणेकूं स्त्रीके शरीरका अशुचि गलीचपणा
विचारे जेसें थूलभद्रस्वामी जंबूस्वामी सुदर्शन
सेठ वगेरोने जेसें दुष्कर शील पाला उंर मन
वस कीया क्रोधादिक कषाय जीतणेकूं जो जो
उपाय कीया शंसारअसार बड़ा विषम एसें
मनोरथ करणा स्त्रीका शरीर अपवित्र निंद
नीक चामड़ी हाड़ मींजी आंतरघा चरबी खून
मांस पेसाब विष्टा वगेरे गलीच वस्तुसें भरा

हुवा इसकूं तूं क्या अच्छा समझताहे अरे जीव विष्टा वगेरे गलीच चीजकूं देखके, जेसें तूं थू थू करताहे ओर नाक चढाताहे तो फिर हे मूर्ख एसे स्त्रीकी सरीरकी क्या इच्छा करताहे विष्टाकी थेली कीडोंकी भरी कपटण चपलाइ ओर झूठसें जो पुरषोंकूं ठगतीहे एसी स्त्रीका हावभाव ओर वहारकी सफाइ देख जो मनुष्य मोहके वस ओरतकूं भोगतेहें उसकरके नरकप्राप्ती होतीहे जरूर काम देव जगत लोककूं जीतणे-वालाहे तथापि मनकूं संकल्पसें वर्जे तो सहजमें काम जीतणेमे आताहे, जो जीव जगतमें पूज्य होगये वेभी अपणे जेसेही आदमी थे लेकिन् क्रोध मांन माया लोभकूं त्यागणेका उद्यम कीया तब थोडेही कालमे ईश्वर सिद्ध होगये बाकी सत्पुरष पैदा होणेका कोइ अलायदा क्षेत्र नहीहे इंद्रियां वगेरे वस्तु तो मनुष्यके स्वभाव करके प्राप्तहे तेसें साधूपणा मिलणा सहजसें नही लेकिन् गुणोंकों धारण करणेवाला साधू कहलाताहे उद्यम करणेसें गुणोंकी प्राप्ति होतीहे कोरा उत्तम जातिवाला हुवा तो क्या हुवा रोहीडेके पुष्पकी तरे देखणे ताहे वनमें पेदा हुये खसबोदार ७

दनविधिसें वांदे गीतार्थसे मुनिसे अथवा सिद्ध पुत्रसें अथवा गीतार्थ श्रावकसे वांचे पूछे पछ्या हुवा याद करे धर्मकथा सुणे अथवा कहे मनमें सूत्रार्थ विचारे ये पांच प्रकारका स्वाध्याय करे शास्त्रोंका रहस्य विचारणा सांझकुं पापका आलोचनारूप प्रतिक्रमण सामायक संयुक्त करे फेर जिन मंदिर जाकर आरती धूपादिक करके परमात्मा श्री तीर्थंकरोका गुण गावे रात्रीकूं च्यारोंही सरण लेकर सब जीवोंकों खमायकर सागारी अणसण लेकर देवगुरुका समरण करे जतनके साथ शयन करे श्रावकके तीन मनोरथहे सो करे अनित्यादिक बारे भावना भावे पिछली रात्रिका जब नींद उगजाय तब अनादिकालकी अभ्यासरूप दुर्जय काम रागकूं जीतणेकूं स्त्रीके शरीरका अशुचि गलीचपणा विचारे जेसें थूलभद्रस्वामी जंबूस्वामी सुदर्शन सेठ वगेरोने जेसें दुष्कर शील पाला उर मन वस कीया क्रोधादिक कषाय जीतणेकूं जो जो उपाय कीया शंसारअसार बडा विषम एसें मनोरथ करणा स्त्रीका शरीर अपवित्र निंदनीक चामडी हाड मीजी आंतरधा चरबी खून मांस पेसाव विष्टा वगेरे गलीच वस्तुसें भरा

हुवा इसकूं तूं क्या अच्छा समझताहे ओ जीव विष्टा वगेरे गलीच चीजकूं देखके जेमें तूं थू थू करताहे ओर नाक चढाताहे तो फिर हे मूर्ख एसे स्त्रीकी सरीरकी क्या इच्छा करताहे विष्टाकी थेली कीमोकी जरी कपटणा चपलाइ ओर ज्वसें जो पुरषोकूं ठगतीहे एसी स्त्रीका हावभाव ओर वहारकी सफाइ देख जो मनुष्य मोहके वस ओरतकूं भोगतेहें उसकरके नरकप्राप्ती होतीहे जरूर काम देव जगत लोककूं जीतणेवालाहे तथापि मनकूं संकल्पसें वर्जे तो सहजमें काम जीतणेमें आताहे जो जीव जगतमें पूज्य होगये वेभी अपणे जेसेही आदमी थे लेकिन क्रोध मांन माया लोभकूं त्यागणेका उद्यम कीया तब थोमेही कालमे ईश्वर सिद्ध होगये वाकी सत्पुरुष पेदा होणेका कोइ अलायदा क्षेत्र नहीहे इंडियां वगेरे वस्तु तो मनुष्यके स्वभाव करके प्राप्तहे तेसें साधूपणा मिलणा सहजसें नही लेकिन गुणोकों धारण करणेवाला साधु कहलाताहे उद्यम करणेसें गुणोकी प्राप्ति होतीहे कोरा उत्तम जातिवाला हुवा तो क्या हुवा रोहीमेके पुष्पकी तरे देखणे मात्र होताहे वनमें पेदा हुये खसबोदार पुष्पकों लोक

गलेमे पहनतेहे उर अंगमे पेदा हुये मैलकों दूर मालतेहे गुणवानकी जक्ति दया क्षमा शील शंतोष निष्कपटता धारण करता हुवा गृहस्थ-धर्म आराधना करे अवसर आणेसें साधू व्रत गृहणकर निर्ममत्ती होकर सर्वसंग त्यागकर प-रमानंदरूप सिद्धिपद जयकमलाकूं जोगे यह गृहस्थ व्यवहारालंकार ग्रंथ मेने अर्हद्वचना-नुसार संक्षेप ग्रंथांतरोसे जो कुछ लिखाहे कुछ परंपरागत श्रुती कुछ इक अनुजवी वातें लिखीहे इसमें प्रमादके वसया अल्पज्ञताके सबवसें ज्यादा या कम सर्वज्ञ वचनसे विरुद्ध लिख-णेमे आगया होय तो पंचपरमेष्ठिकी साक्षीसे मिथ्या डुस्कृत देताहूं विद्वज्जन सुधार लेंगें श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः ॥

वसुधामंम्लआर्यमे जाकोप्रबलप्रताप ॥
वर्द्धमानजिनराजप्रजु हरो डुरितशंताप ॥ १ ॥
प्रजुवाणीवारिदसघन मतअनेकएकांत ॥
गृहीबूंदनयवृष्टितें चात्रकस्वातिसिद्धांत ॥ २ ॥
संवतविक्रम रायके गतसताब्दछत्रीस ॥
उप्पन्नमाघत्रयोदसी उज्वलपक्षजगीस ॥ ३ ॥
मरुमंम्नविक्रमनगर गंगासिंहनरराज ॥
सुरसरिताजसअतिरुचिर॥प्रजपावनकेकाज ॥४॥

बिलकुल आरंभसे रहित एसें मुनिजनोकी स्तवना करता रहे ७ गृहस्थावासकूं बेमी उंर फास समान गिणता दिलके ऊपर कर डुरक करके रहे उंर चारित्र मोहनी कर्म खपाणेके उद्यममें रहे ८ बुद्धिमांन पुरष मनमे गुरुभक्ति उंर धर्मकी श्रद्धा रखकर धर्मकी प्रभावणा प्रशंसा इत्यादिक करता हुवा निर्मल सम्यक्त पाले ९ विवेकसें चलणेवाला धीर पुरप साधारण मनुप्योंकूं अण समजपणेकर गाम्री प्रवाह चलणेवाला समजे ज्ञानशुन्य किसी भाग्यवानकूं कोइ धर्मादि कर्त्तव्य करता देखे उस मुजब तत्वज्ञानरहित हीया शून्यपणे करतेहे एसा समज बुद्धिवंत लोक संज्ञाका त्याग करे १० एक जिनागम स्यादवाद् न्याय टाल डुसरा यथार्थ नही उंर डुसरे शास्त्र मोक्षका रास्ता नही एसा जांणकर सर्वक्रिया अनुष्टांन जिनागमके अनुसार करे ११ अपणे जीवकी शक्तिकूं नही छिपाता हुवा जेसें संसारके वहोतसे कामकाज करताहे तेसेंइ अपणी हिम्मत नहि हारता हुवा दानशील तपभावना प्रमुख च्यार प्रकारके धर्मकूं जेसे आत्माकूं पीमा नही होय एसी तरे आदरे १२ चिंतामणी रत्नकी तरे डुर्लभ एसी

॥ अथ भावश्रावकके लक्षण लिख्यते ॥

सतरे लक्षणवाला भावश्रावक होताहे सो संक्षेपसें लिखताहूं १ अनर्थकूं पेदा करणेवाली चंचल चित्तवाली ठगुणगारी नरक जाणेके रस्ते जेसी स्त्रीकूं जाणके अपणे जीवका भला चाहता हुवा उसके वशमें नही रहे २ इंद्रीयांरूप चंचल घोरे हमेसां दुर्गतिके रस्ते दोमतेहे इसवास्ते शंसारका यथार्थ स्वरूप जांणणेवाला श्रावक सम्यक् ज्ञानकी लगामसें इंद्रियोंकूं खोटे रस्ते नही जाणे देणा ३ सब अनर्थका तथा प्रयासका क्लेसका कारण ठर असार एसा धनकूं जाणकर बुद्धिमांन पुरष थोमाही धनका लोभ नहि करे ४ संसार आप दुखरूप दुखका फल देणेवाला परिणाम याने आगेभी दुखदाई विटंबनारूप एसा जांण उसमें प्रीति रखके मुरझाणा नही ५ जहर जेसा विषय क्षणमात्र सुख देणेवाला एसा विचार हमेसां करणेवाला संसार प्रपंचसे मरणेवाला सर्वज्ञ कथित तत्वका जांणकार उन विषयोंकी इच्छा नहि करे ६ तीव्र आरंभ ठोमे निर्वाह नहि होता दीखे तोभी सर्व जीवपर दया रखता हुवा गुजरान माफक थोमा आरंभ करे ठर

बिलकुल आरंभसे रहित एसें मुनिजनोकी स्तवना करता रहे ७ गृहस्थावासकूं बेमी ओर फास समान गिणता दिलके ऊपर कर डुरक करके रहे ओर चारित्र मोहनी कर्म खपाणेके उद्यममें रहे ८ बुद्धिमांन पुरष मनमें गुरुभक्ति ओर धर्मकी श्रद्धा रखकर धर्मकी प्रभावणा प्रशंसा इत्यादिक करता हुवा निर्मल सम्यक्त पाले ए विवेकसें चलणेवाला धीर पुरष साधारण मनुष्योंकूं अण समझपणेकर गाम्री प्रवाह चलणेवाला समझे ज्ञानशुन्य किसी भाग्यवानकूं कोइ धर्मादि कर्त्तव्य करता देखे उस मुजब तत्वज्ञानरहित हीया शून्यपणे करतेहे एसा समज बुद्धिवंत लोक संज्ञाका त्याग करे १० एक जिनागम स्यादवाद् न्याय टाल डुसरा यथार्थ नही ओर डुसरे शास्त्र मोक्षका रास्ता नही एसा जांणकर सर्वक्रिया अनुष्ठांन जिनागमके अनुसार करे ११ अपणे जीवकी शक्तिकूं नही छिपाता हुवा जेसें संसारके वहोतसे कामकाज करताहे तेसेंइ अपणी हिम्मत नहि हारता हुवा दानशील तपभावना प्रमुख च्यार प्रकारके धर्मकूं जेसें आत्माकूं पीमा नही होय एसी तरे आदरे १२ चिंतामणी रत्नकी तरे डुर्लभ एसी

भगवांनने कहाथा मेरे चेलोंका उदय पूजा सत्कार दो सहस्र वर्षतक नही होगा लेकिन्न एसा नही कहा के एक गुरु विगरका लूंपक पंथ ढूंढक होंगे उनोकी पूजा होगी तीनसे तेतीस वर्षका फेर जन्मरासिपर धूम्रकेतु ग्रह बेठा उसके प्रताप जैनधर्मकूं मलीन करणेकूं मूर्तिनिंदक शास्त्रोत्थापक महानिभववाईसगोष्टि व्लवंगचूलियासूत्रमें लिखा सो तुम भये ॥ ॥

नीचे लीखे हुवे पुस्तक हमारे याहां मिलते हैं.

हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ.

नाम.	किंमत.
१ करुणा बत्तिसी, दादासाहेबपूजा	०—४
२ सोळे चाणक्य, शकुनावली स्वरोदय	१—०
३ मूर्तिमंडनका सिद्धमूर्ति विवेकविलास	०—८
४ पूजामहोदधि—गायनरूप ३७ पूजा	४—०
५ श्रावक व्यवहारालंकार	१—८

ग्रंथ छपते हैं.

१ श्रीपालचरित्र	१—८
२ धर्म्मरत्नसमुच्चय—जिस्में पंचप्रति क्रमणसूत्र विधि समेत, थुई चैत्य वंदन, बडे स्तवन, सिज्झाय, छोटे स्तवन, पूजा सर्व तपस्या विधि, श्रावकके नित्य कर्तव्य इत्यादिक अनेक संग्रहों समेत फेर जीव विचार, नवतत्त्व, दंडक अर्थ समेत छपताहै	५—०